गहूंलीसंग्रहनामा ग्रंथ.

भाग पहेलो.

एमां जुदा जुदा कवियोनी रचेली प्रथम छापेली गहूंली एकशो दश, तथा बीजी नवीन गहूं लीयो चौद, सर्व मली एकशो चोवीश गहूंलीयोनो संग्रह करी तेने

प्रथम करतां यथामति वधारे संशोधन करी सम्यग्दृष्टि श्रद्धालु श्राविकाओने वांचवा तथा भणवाने माटे

श्रावक, जीमसिंह माणकें

श्री अमदावाद मध्यें

राजनगर प्रिन्टींग प्रेश छापखानामां छपावी प्रसिद्ध करयो छे.

संवत १९६४–सने १९०८

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ ॥

॥ श्री महावीर स्वामीना पांच वधावा प्रारंभ ॥

॥ तत्र ॥

॥ वधावो पहेलो ॥

॥ हुंतो मोही रे नंदना लाल, मोरली तानें रे ॥ ए देशी ॥ वंदी जगजननी ब्रह्माणी, दाता अविचल वाणी रे ॥ क ल्याणक प्रभुनां गुणखाणी, थुणशुं उलट आणी ॥ एह ने सेवोने ॥ १ ॥ प्रभु शासननो सुलतान ॥ एहने सेवोने ॥ जस इंद्र करे बहु मान ॥ एहने सेवोने ॥ एतो भवो दधि तरण सुखाण ॥ एहने सेवोने ॥ २ ॥ कीधुं त्रीजे भव वरथानक, अरिहा गोत्र निकाच्युं रे ॥ ते अनुसर वा वरवा केवल, करवा तीरथ जाचुं ॥ एहने० ॥ ३ ॥ कल्याणक पहेले जगवल्लभ, त्रण ज्ञानी माहाराय रे ॥ दशमा स्वर्ग विमानथी प्रभुजी, भोगवी सुरनुं आय ॥ एहने० ॥ ४ ॥ जंबु द्वीपें भरत क्षेत्रमां, क्षत्रिकुंड सुखकार रें ॥ श्री सिद्धारथ त्रिशला उदरें, लेवे प्रभु अवतार ॥ एहने० ॥ ५ ॥ चउद सुपन देखे तब त्रिशला, गज वृषभादि उदार रे ॥ हरखी जागी चिंते मनमां, माने धन्य अवतार ॥ एहने० ॥ ६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बहु उछरंगें जइ पियुसंगें, सघली वात सुणावे रे ॥ सुजगे लाज पुत्रनो होशे, पियुनां वचन वधावे ॥ एह ने० ॥ ७ ॥ स्वपना फल पूछी पाठकने, गर्भ वहे नृप राणी रे ॥ दीप कहे इम प्रथम वधावो, गावे सुर इं द्राणी ॥ एहने० ॥ ८ ॥ इति ॥ १ ॥

॥ वधावो बीजो ॥

॥ श्रावण वरसे रे सुजनी ॥ ए देशी ॥

बीजे वधावे रे सुजनी, चैतर शुदि तेरशनी रजनी ॥ जन्म्या जिनवर जग उपकारी, हुं जाउं तेहनी बलि हारी ॥ बीजे वधावे रे सुजनी ॥ १ ॥ छप्पन दिशि कुमरी तिहां आवे, पूजी शुचिजलशुं न्हरावे ॥ जीवो महीधर लगें जिनराया, अविचल रहेजो त्रशलाना जाया ॥ बी० ॥ २ ॥ गिरुआ प्रभुनुं वदन निहाली, चाली चौंपें चतुरा बाली ॥ हरख्यो सुरपति सोहम स्वामी, जाणी जन्म्या जग विश्रामी ॥ बी० ॥ ३ ॥ घो षा घंटा तव वजडावे, ततक्षण देव सह तिहां आवे ॥ प्रभु ग्रही कंचनगिरि पर ठावे, स्नान करी जिननें न्हवरावे ॥ बी० ॥ ४ ॥ एक कोड वली ऊपर जाणो, शाठ लाख संख्या परमाणो ॥ सहु कलशा शुचि ज लशुं भरिया, ततक्षण सोहम संशय धरिया ॥ बी० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ५ ॥ चिंते लघुवय छे प्रभु वीर, केम सहेशे जल धारा नीर ॥ वीरें तस मन संशय जाणी, करवा चित्रित अतिशय नाणी ॥ वी० ॥ ६ ॥ माहावीर निज अंगुठे चंप्यो, ततक्षण मेरु थर हर कंप्यो ॥ मानुं नृत्य करे छे रसियो, प्रभुपद फरसें थइ उल्लसियो ॥ वी० ॥ ७ ॥ जाण्युं इंडें सहु विरतंत, बोले कर जोडी भगवंत ॥ गुनहो सेवकनो ए सहेजो, मिथ्या दुःकृत एहनुं होजो ॥ वी० ॥ ८ ॥ स्नात्र करी माताने समर्पे, भवि पहोता नंदीश्वर द्वीपे ॥ पूरण लाहो रे लेवा, अठाइ महोत्सव तिहां करेवा ॥ वी० ॥ ए ॥ पुत्र वधाई निसुणी राजा, पंच शब्द वजडावे वाजां ॥ निज परिकर संतोषी वारू, वर्द्धमान नाम छवे उदारु ॥ वी० ॥ १० अनुक्रमें जोबन वय जव थावे, नृपति राजपुत्री परणावे ॥ भोगवी प्रभु संसारिक भोग, दीप कहे मन प्रगट्यो जोग ॥ वी० ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ वधावो त्रीजो ॥

॥ भवि तुमें वंदो रे सूरीश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥ हवे कल्याणक त्रीजुं बोलुं, जगगुरु दीक्षा केरुं ॥ हर्षित चित्तें भावें गावे, तेहनुं भाग्य भलेरुं ॥ सहि तुमें सेवो रे, कल्याणक उपकारी ॥ संयम मेवो रे, आ

तमनें हितकारी ॥ १ ॥ लोकांतिक सुर अमृतवयणें, प्रभुनें एम सुणावे ॥ बूझ बूझ जगनायक लायक, एम कहीने समजावे ॥ स० ॥ २ ॥ एक क्रोड नें आठ लाखनुं, दिनप्रत्यें दीये दान ॥ इणिपरें संवत्सर लगें लईने, दीन वधारे वान ॥ स० ॥ ३ ॥ नंदिवर्द्धन नी अनुमती लेइने, वीर थया उजमाल ॥ प्रभु दीक्षा नो अवसर जाणी, आव्यो हरि ततकाल ॥ स० ॥४॥ थापी दिशि पूरवनी साहामा, दीक्षा महोत्सव की धो ॥ पालखीयें पधरावी प्रभुनें, स्नान अनंतो लीधो ॥ स० ॥ ५ ॥ सुरगण नरगणने समुदायें, दीक्षायें संचरिया ॥ माता धाव कहे शिखामण, सुण त्रिशला नानडिया ॥ स० ॥ ६ ॥ मोह मल्लनें जेर करीने, धर जो उज्ज्वल ध्यान ॥ केवल कमला वहेली वरजो, दे जो सुकृत दान ॥ स० ॥ ७ ॥ एम शिखामण सुणते सु णते, थुणते बहु नर नारी ॥ पंच मुष्टिनो लोच करी ने, आप थया व्रतधारी ॥ स० ॥ ८ ॥ धन्य धन्य श्री सिद्धारथनंदन, धन्य त्रिशलाना जाया ॥ धन्य धन्य नंदीवर्द्धन बंधव, एम बोले सुरराया ॥ स० ॥ ए ॥ अनुमति लेई निज बंधवनी, विचरे जगदाधार ॥ स मितियें समिता गुप्तियें गुप्ता, जीवदया जंकार ॥ स०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १० ॥ सिंह समोवड दुर्द्धर थईनें, कठिन कर्म सहु टाले ॥ जगजयवंतो शासननायक, इणिपरें दीक्षा पाले ॥ स० ॥ ११ ॥ दीक्षाकल्याणक ए त्रीजुं, सहि तुमें दिलमां लावो ॥ एम वधावो त्रीजो सुंदर, दीप कहे सहु गावो ॥ स० ॥ १२ ॥ इति त्रीजो वधावो संपूर्ण ॥

॥ वधावो चोथो ॥

॥ अविनाशीनी सेजडीयें, रंग लागो मोरी सुजनी जी ॥ ए देशी ॥

॥ चोथुं कल्याणक केवलनुं, कहुंबुं अवसर पामी जी ॥ जग उपकारी जगबंधवने, हुं प्रणमुं शिर नामी ॥सांभल सुजनी जी ॥१॥ वैशाख शुदि दशमीने दिवसें, पाम्या केवल ज्ञान जी ॥ बार जोयण एक रातें चाल्या, जाणी लाभ निधान ॥ सां० ॥ २ ॥ अप्पापा नयरीयें आव्या, महसेन वन विकसंत जी ॥ गणधरनें वली तीरथ थापन, करवाने गुणवंत ॥ सां० ॥ ॥ ३ ॥ भुवनपति व्यंतर वैमानिक, ज्योतिषी हरि समुदायजी ॥ वीश बत्रीश दश दोय मलीनें, ए चोशठ कहेवाय ॥ सां० ॥ ४ ॥ त्रिगडानी रचना करि सारी, त्रिदशपति अति जारी जी ॥ मध्य पीठ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ऊपर हितकारी, बेठा जग उपकारी ॥ सां० ॥ ५ ॥ गुण पांत्रीश सहित प्रभुवाणी, निसुणे छे सहु प्राणी जी ॥ लोकालोक प्रकाशक वाणी, वरसे छे गुणखाणी ॥ सां० ॥ ६ ॥ मालकोश शुभराग समाजें, जलधरनी परें गाजे जी ॥ आतपत्र प्रभु शिरपर राजे, भामंफल छबि छाजे ॥ सां० ॥ ७ ॥ नीकी रचना त्रणे गढनी, प्रभुनां चारे रूप जी ॥ वली केवल कमलानी शोभा, निरखे सुर नर भूप ॥ सां० ॥ ८ ॥ इंद्रभूति आदें सहु म लीनें, जगन करे भूदेव जी ॥ विद्या वेदतणा अभ्यासी, अभिमानी अहमेव ॥ सां० ॥ ए ॥ ज्ञानी आव्या निसुणी कानें, मनमें गर्व धरंत जी ॥ आव्यो त्रिगडे बाद करेवा, दीठो जगजयवंत ॥ सां० ॥ १० ॥ ततक्षण नामादिक बोलावे, तुह्य सहुने जाणी जी ॥ जीवादिक संदेह निवारी, थाप्यो गणधर नाणी ॥ सां० ॥ ११ ॥ त्रिपदि पामी प्रभु शिर नामी, द्वादशांगी सुविचारी जी ॥ पद छ लाख छत्रीश सहस्सनी, रचना कीधी सारी ॥ सां० ॥ १२ ॥ चालो तो जो याने जइयें, वंदीजें जगवीर जी ॥ वली प्रणमीजें सोहम पटधर, गौतमस्वामी वजीर ॥ सां० ॥ १३ ॥ निरखीजें प्रभुजीनी मुद्रा, नरभव सफलो कीजें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जी ॥ प्रभुजीनुं बहु मान करीने, लाभ अनंतो लीजें ॥ सां० ॥ १४ ॥ वारे वारे कहुं हुं तो पण, तुं तो मन मां नाणे जी ॥ महारा मनमां होंश अहे ते, केवल ज्ञानी जाणे ॥ सां० ॥ १५ ॥ सखिवयणें एम थई उ जमाली, चाली सघली बाली जी ॥ निसुणी दश आशातना टाली, प्रभुवाणी लटकाली ॥ सां० ॥ १६ ॥ इणीपरें त्रीश वरस केवलथी, बहु नर नारी तारी जी ॥ इम वधावो चोथो सुंदर, दीप कहे सु खकारी ॥ सां० ॥ १७ ॥

॥ वधावो पांचमो ॥

॥ आदिजिनेसर विनति हमारी ॥ ए देशी ॥

॥ कल्याणक पांचमुं जिनजीनुं, गावो हर्ष अपार वाला ॥ जगवल्लभ प्रभुना गुण गाई, सफल करो अव तार वाला ॥ शासननायक तीरथ वंदो ॥ १ ॥ ए आं कणी ॥ जग चातकने दान दीयंता, विचरंता जग जाण वाला ॥ मध्य अपापा नगरी पधारया, प्रणमे पद महिराण वाला ॥ शा० ॥ २ ॥ प्रभुयें लाजालाज विचारी, अणपूज्यो उपदेश वाला ॥ शोल पहोर लगें अमृतवाणी, वरस्या जवि उपदेश वाला ॥ शा० ॥ ३ ॥ दीवालीदिने मुक्ति पधारया, पाम्या पर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मानंद वाला ॥ अजर अमरपद ज्ञान विलासी, अ
क्षक सुखनो कंद वाला ॥ शा० ॥ ४ ॥ ए प्रभु कर्त्ता
अकर्त्ता भोक्ता, निजगुणें विलसंत वाला ॥ दर्शन
ज्ञान चरण ने वीरज, प्रगट्या सादि अनंत वाला ॥
शा० ॥ ५ ॥ छे आकाश असंख्य प्रदेशी, तेहना गुण
छे अनंत वाला ॥ ए तो एक प्रदेशें साहिब, अनंत
गुणें भगवंत वाला ॥ शा० ॥ ६ ॥ ए प्रभुध्येयने सेव
क ध्याता, एहमां ध्यान मिलाय वाला ॥ त्रिक जो
गें पूरणता प्रगटे, सेवक ए सम थाय वाला ॥ शा०
॥ ७ ॥ गावो पांचमो मोक्ष वधावो, ध्यावो वीर जि
णंद वाला ॥ शुभलेश्यायें जग गुरु ध्यानें, टालो भव
भय फंद वाला ॥ शा० ॥ ८ ॥ इम प्रभु वीरतणां क
ल्याणक, पांच भवोदधि नाव वाला ॥ श्री विजयल
क्ष्मी सूरीश्वर राजें, में गाया शुभ भाव वाला ॥ शा०
॥ ए ॥ श्रीजिनगणधर आणारंगी, कपूरचंद विश्राम
वाला ॥ तस आग्रहथी हर्षित चित्तें, खंभात नयर
सुठाम वाला ॥ शा० ॥ १० ॥ पंडित श्रीगुरु प्रेमपसा
यें, गाया तीरथराज वाला ॥ दीपविजय कहे मुजने
होजो, तीरथफल माहाराज वाला ॥ शा० ॥ ११ ॥

इति पांच वधावा संपूर्ण ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ श्री गहूंलियो लखी ये ॥

॥ तत्र ॥

॥ प्रथम गहूंली ॥

॥ कुंवर पगले पग दश्ने चडिया ॥ ए देशी ॥

॥ रूडी गहूंली रंग रसाली, ।जनशासनमांहे नित्य रे दीवाली ॥ रूडी राजगृही अति शोहे, ते देखी त्रि जुवन मन मोहे ॥१॥ तिहां तो वीर आव्या रे चोमासें, राजा श्रेणिक वंदे उल्लासें ॥ तस अजयकुंवर प्रधान, मंत्री बहु बुद्धिनिधान ॥ २ ॥ राजा श्रेणिकनी घर नार, शिरोमणि चेलणा सार ॥ बार व्रतनी साडीज पहेरी, नव वाडनी घाटडी घहेरी ॥ ३ ॥ पहेर्यां जिनगुणभूषण अंगें, गुरुगुण गावे मन रंगें ॥ सम कित कचोलुं रे जरियुं, श्रद्धामांहे कुंकुम घोलियुं ॥ ४ ॥ पंचाचार ते पंच रतन, जवणी उपरें करो रे जतन ॥ मन निर्मल मोती वधावे, ते तो शिवरमणीसुख पावे ॥ ५ ॥ बुध न्यायसागरनो शिष्य, जे जणशे जि नगुण जगीश ॥ तस घर होय कोडी कल्याण, वली पामे मोक्ष सुजाण ॥६॥ इति ॥१॥

॥ अथ श्री गहूंली बीजी ॥

॥ वाली माहरो आव्या श्रीगोकुल गाम रे ॥ एदेशी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ चंद्रवदनी मृगलोयणी, एतो सजि शोले शणगार रे ॥ एतो आवी जगगुरु वांदवा, धरी हैडे हर्ष अ पार रे ॥ ॥१॥ एतो मुक्ताफल मूठी जरी, रचे गहूंली परम उदार रे ॥ जिहां वाणी जोजन गामिनी, घन वरसे अखंकित धार रे ॥ २ ॥ हांरे जिहां रजत क नक रत्नना, सुररचित त्रण प्रकार रे ॥ तस मध्य म णि सिंहासनें, शोजित श्रीजगदाधार रे ॥ ३ ॥ जि हां नरपति खगपति त्रसपति, सुरपति युत पर्षदा बार रे ॥ लब्धिनिधान गुण आगरु, जिहां गौतमादि गणधार रे ॥ ४ ॥ जिहां जीवादिक नव तत्त्वना, षट् द्रव्यजेद विस्तार रे ॥ ए तो श्रवण सुणि निर्मल करे, निज बोध बीज सुखकार रे ॥ ५ ॥ जिहां त्रण छत्र त्रिजुवन उदित, सुर ढालत चामर चार रे ॥सखि चिदानंदकी बंदना, तस होजो वारंवार रे ॥६॥ ३॥

॥ अथ श्री गहूंली बीजी ॥

॥ घरे आवोजी आंबो मोरीयो ॥ ए देशी ॥

॥ महावीरजी आवी समोसस्या, राजगृही नयरी उ द्यान॥ समवसरण देवें रच्युं, तिहां बेठा श्रीवर्द्धमान ॥ माहा० ॥ १ ॥ वनपालके आपी वधामणी, हरख्यो श्रेणिक जूपाल ॥ गौतम आदि गणधरु, साधवी उ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्रीश हजार ॥माहा०॥२॥ राजा गज शणगारया मलप
ता, तूर्य तणो नहिं पार ॥ राजा बहु सामग्रीयें संच
र्यो, साथे मंत्री अजयकुमार ॥माहा०॥३॥ ढोल ददा
मा गडगडे, सरणाइ अतिहि रसाल ॥ राय गजथकी
हेठा ऊतर्या, आवी वांदे प्रजुजीना पाय ॥ माहा०
॥४॥ राय त्रण प्रदक्षिणा देई करी, आवी बेठा सन्ना
मोऊार ॥ राणी चेलणा लावे गहूंअली, साथे सखि
योनो परिवार ॥ माहा० ॥ ५ ॥ राणियें घाट उढ्यो रे
घूंटा तणो, राणी चेलणानो शणगार ॥ राणीयें कुंकुम
घोल्यां कुंकावटी, राणियें लीधुं श्रीफल श्रीकार ॥
माहा० ॥ ६ ॥ राणी चेलणा पूरे गहूंअली, माहा
वीरना पावला हेठ ॥ राणी बहु परिवारें परवरी,
राणी गावे गीत रसाल ॥ माहा० ॥ ७ ॥ राणी लली
लली लीये रे लूंछणां, राणी पूजे प्रजुजीना पाय ॥
माहावीरनी देशना सांजली, समकित पाम्यो नर
राय ॥माहा०॥८॥प्रजु तुमसरीखा गुरु मुऊ मल्या, म
हारी डुर्गति दूर पलाय ॥ प्रजु सेवक जाणी तार
जो, मुने मुक्ति तणां सुख थाय ॥ माहा० ॥ ए ॥

॥अथ श्री जीवाज्जिगमसूत्रनी गहूंली चोथी ॥

॥ नवि तुमे वंदो रे सूरीश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ सहियर सुणीयें रे जीवाजिगमनी वाणी, मीठी लागे रे मुऊने वीरनी वाणी ॥ ए आंकणी ॥ सूत्र तणी रचना गणधरनी, अर्थ ते वीरें जांख्या ॥ गौत म पूठे बे कर जोडी, आतमहित करी दाख्या ॥स० ॥ मी० ॥ १ ॥ जीव अजीव तणी जे रचना, पूठी गौतमस्वामी ॥ नरक निगोद तणी जे वातो, जां खे अंतरजामी ॥ स० ॥ मी० ॥ २ ॥ साते नरक तणां दुःख जांख्यां, आतमहित करी शीख्या ॥ जे जे प्रश्न पुठे गोयम, ते ते प्रजुजीयें जांख्या ॥ स० ॥ ॥ मी० ॥ ३ ॥ पांच अनुत्तर तणी जे रचना, विवि ध प्रकारें जांखी ॥ जविक जीवने सुणवा कारण, श्री जिन आगम साखी ॥ स० ॥ मी० ॥ ४ ॥ मीठी वाणीयें गहूंली गावे, वीर जिणंद वधावे ॥ स्वस्तिक पूरे जाव धरीने, अक्षतें करीने वधावे ॥ स० ॥ मी० ॥ ५ ॥ नौतनपुरमां रंगे गाई, गहूंली चढते उमंगें॥ कहे मुक्ति जिनराजनी वाणी, सुणजो अति उछ रंगे ॥ स० ॥ मी० ॥ ६ ॥ इति ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री जगवतीसूत्रनी गहुंली पांचमी ॥

॥ जवि तुमे वंदो रे, सूरीश्वर गछराया ॥ ए देशी ॥

॥ सहियर सुणियें रे, जगवतीसूत्रनी वाणी ॥ पात

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

क हणीयें रे, आतमने हित आणी ॥ ए आंकणी ॥ समकितवंत तणी ए करणी, जवसागर उद्धरणी ॥ नरकनिगोद तणी गति हरणी, मोक्षतणी नीसरणी ॥ स० ॥ १ ॥ पंचम अंग विवाहपन्नत्ती, बीजुं जगवती नाम ॥ शतक एकतालीश बहु उद्देशें, अनंतानंत गुणधाम ॥ स० ॥ २ ॥ वीर जगत गुरु गौतम गणधर, जोडी मोहनगारी ॥ प्रश्न छत्रीश हजार प्रकाश्या, वाणीनी बलिहारी ॥ स० ॥ ३ ॥ गंगमुनि सिंहा मुनिवरना, प्रश्न सरस छे जेहमां ॥ जाव जेद षड्द्रव्य प्रकाश्यां, अमृतरस छे एहमां ॥ स० ॥ ४ ॥ संग्राम सोनी प्रमुख जे जावी, समकितवंत प्रसिद्धो ॥ प्रश्नें कंचन मोर छवीने, नरजव लाहो लीधो ॥ स० ॥ ५ ॥ स्वस्तिक मुक्ताफलशुं वधावो, ज्ञान जक्ति गुरु सेवा ॥ जगवती अंग सुणो बहु जावे, चाखो अमृत मेवा ॥ स० ॥ ६ ॥ वीरक्षेत्रना सकल संघने, विघ्न हरे वरदाई ॥ दीपविजय कहे जगवती सुणतां, मंगल कोटि वधाई ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५ ॥

॥ अथ श्री गहूंली छठी ॥

॥ चालोने बाइ चालोने जुउ, सोहम गणधर रचना रे ॥ चालोने बाई चालोने० ॥ ए आंकणी ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

राजगृही नगरी सोहामणी, तस वनमां सोहम आव्या रे ॥ राजा कोणिक वंदन आवे, जाव धरी ने वधावे रे ॥ चा० ॥ १ ॥ चतुरंगिणी सेना लेई आवे, आनंद मंगल पावे रे ॥ बहु युक्तें करी सोहम वांदे, राजा मन आणंदे रे ॥ चा० ॥ २ ॥ केइ मुनि तपसी केइ व्रतधारी, केइ संजमना रसिया रे ॥ केइ मुनि जिन आणाने धारे, वारे विषय कषाया रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ प्रत्येकें सहु मुनिने वांदे, जव जल पार उतरवा रे ॥ रजत रकेबी हाथ धरीने, सो हमस्वामी वधावे रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ चिहुं गति वार क साथीयो पूरे, मोतीथालें वधावे रे ॥ पद्मावती राणी मनरंगें, शोल सज्या शणगार रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ बहु सखीने परिवारें राणी, मनमां उलट आणी रे ॥ कोणिक राजा देशना निसुणे, वाणी अमृत सरखी रे ॥ चा० ॥६॥ जाव धरीने राजा राणी, अजिनव नि सुणी वाणी रे ॥ जलधर वाणी निसुणी राजा, वा ज्यां सुजशनां बाजां रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ जुजपुर मंग ण चिंताचूरण, श्रीचिंतामणि स्वामी रे ॥ चिहुं गति चूरण गहूंली गाई, संघने सदा वधाई रे ॥ चा० ॥ ८ ॥ जे गहूंली गाशे मनरंगें, तस घर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नित्य उछरंग रे ॥ श्री जिनआणा पाले अहो निश, मुक्तिपद पामे विशेष रे ॥चा० ॥ ए ॥ इति ॥६॥

॥ अथ श्री गहूंली सातमी ॥

॥ जात्रीडा जात्रा नवाणुं करीयें रे ॥ ए देशी ॥

॥सखी सरस्वती जगवती माता रे, कांइ प्रणमीजें सुख शाता रे, कांइ वचन सुधारस दाता गुणवंता सांजलो वीर वाणी रे, कांइ मोक्ष तणी निशाणी ॥ गु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ कांइ चोवीशमा जिन राया रे, साथे चौद सहस मुनिराया रे, जेहना सेवे सुर नर पाया ॥ गु० ॥ कां० ॥ २ ॥ सखी चतुरंग फोजा साथ रे, सखि आव्या श्रेणिक नर नाथ रे, प्रजु वंदीने हुआ सनाथ ॥ गु० ॥कां० ॥३॥ बहु सखि संयुत राणी रे, आवी चेलणा गुणखाणी रे, एतो नामंमलमां उजाणी ॥ गु० ॥ कां० ॥ ४ ॥ करे साथीयो मोहनवेलरे, कांइ प्रजुने वधावे रंगरेलरे, कांइ धोवा कर्मना मेल ॥ गु० ॥ कां० ॥५॥ बारे पर्षदा नि सुणे वाणी रे, कांइ अमृतरस सम जाणी रे, कांइ वरवा मुक्ति पटराणी ॥ गु० ॥ कां० ॥ ६ ॥ इति ॥७॥

॥ अथ श्री गहूंली आठमी ॥

॥ आ जो रे बाइ आ जो रे, सोजागी गुरुनां पगलां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ पगले पगले रत्न जडावूं, डगले डगले हीरा रे ॥ ए देशी ॥ चालो रे बाइ चालो रे जूउ, गौतम स्वामी नी रचना रे ॥ लब्धिवंत गुणवंता गिरुवा, करता संजम जतना रे ॥चा०॥१॥ बठे वरसें दीक्षा लीधी, ते पण मुनि बे साथें रे ॥ जिनआणाथी संजम पाले, करवा शिव वधू हाथें रे ॥ चा० ॥ २ ॥ केइ मुनि गणधर पद सेवे बे, केइ मुनि ध्यान धरे बे रे ॥ केइ मुनि आगम दान दिये बे, केइ मुनि विनय करे बे रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ केइ मुनि चउ अनुजोग जाणे बे, केइ मुनि जोग वहे बे रे ॥ केइ मुनि पूर्व सूत्र जाणे बे, केइ मुनि अर्थ ग्रहे बे रे ॥ चा० ॥ ४ ॥ केइ मुनि मास खमण तप धारी, केइ मुनि तपिया कहीयें रे ॥ केइ मुनि विगय तणा परिहारी, केइ मुनि आतम ध्याय रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ केइ आचारांग सूयगडांग ठाणांग, केइ समवायांग गोखे रे ॥ जगवती सूत्र प्रमुख बहु आगम, जाणी आतमरस पोखे रे ॥ चा० ॥ ६ ॥ सहु सहिअर गुणशीला वनमां, आवी गणधर वांदे रे ॥ अमृतथी पण अधिकी वाणी, निसुणी मन आणंदे रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ पट्टोधर आगल गहूंली पूरी, मुक्ताफलशुं वधाया रे ॥ धन्य धन्य

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

माता पृथ्वी जेणियें, गौतम गणधर जाया रे ॥ चा० ॥ ७ ॥ प्रभु वाणी निज चित्त समरती, परषद निज घर आवे रे ॥ ॥ दीपविजय कहे गौतम नामें, माहा मंगल पद पावे रे ॥ चा० ॥ ए ॥ इति ॥७॥

॥ अथ गहूंली नवमी ॥

॥ जयो तप रोहणी ए ॥ ए देशी ॥

॥ चंपा नगरी उद्यानमां ए, आव्या सोहम गणधार ॥ नमो गुरु जावशुं ए ॥ हर्षपूरित नगरीजना ए, वांदवा जाय उजमाल ॥ नमो० ॥ १ ॥ कोणिक राय तव पूछतो ए, आज किश्यो उत्सव थाय ॥ ॥ नमो० ॥ इंद्र उत्सव के कौमुदी ए, एवडां लोक किहां जाय ॥ नमो० ॥ २ ॥ के कोइ जैनमुनि आविया ए, के तिहां जावे सवि जन्न ॥ न० ॥ तेह के इ प्रभु सांजलो ए, हर्ष करीने मन्न ॥ न० ॥ ३ ॥ तव कोणिकें वात सांजली ए, उल्लसी साते धात ॥ ॥ न० ॥ गज रथ पायक सज्ज कर्या ए, करी वली निर्मल गात्र ॥ न० ॥ ४ ॥ मस्तक मुकुट रखें जड्या ए, हइए हार सोहंत ॥ न० ॥ एक सूरज एक चंद्रमा ए, ए दोय कुंमल झलकंत ॥ न० ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चतुरंगी सेनायें परिवस्यो ए, श्रेणिक रायनो पुत्र ॥ न० ॥ तस राणी पद्मावती ए, नवशत अंग धस्या शणगार ॥ न० ॥ ६ ॥ स्वामी सुधर्मा जिहां अछे ए, तिहां आव्या कोणिक राय ॥ न० ॥ पंच अभिगम साचवी ए, भक्तियें हर्ष भराय ॥ न० ॥ ७ ॥ साथी यो पूरे प्रेमशुं ए, चौगति दुःखवारणहार ॥ न० ॥ पद्मावती राणी वधावतां ए, उछाले अक्षत सार ॥ न० ॥ ८ ॥ करे परम गुरुवंदना ए, भवजल तारण नाव ॥ न० ॥ लहे मुक्तिपद शाश्वतुं ए, जे वांदे गुरु भले भाव ॥ न० ॥ ए ॥ इति० ॥

॥ अथ गहूंली दशमी ॥

॥ समुद्रविजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी ए देशी ॥

॥ वानता नयरी निर्मली ॥ जिनरायाजी ॥ जिहां समोसस्या आदिनाथ ॥ सुर नमे पाया जी ॥ सम वसरण देवे रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां बेठा त्रिभुवननाथ ॥ सु० ॥ १ ॥ कंचनकांति तनु दीपती ॥ जि० ॥ गजसरखी जस चाल ॥ सु० ॥ दीर्घभुजा तनु दीप ती ॥ जि० ॥ तस रूडां नयन विशाल ॥ सु० ॥ २ ॥ नरना अमरना इंदला ॥ जि० ॥ तेणें थुणियां चर णसरोज ॥ सु० ॥ मुखशोभायें लाजियो ॥ जि० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शशी गयण वसे हररोज ॥ सु० ॥ ३ ॥ तप तरवारें वारिया ॥ जि० ॥ भाव रिपु जे आठ ॥ सु० ॥ मुनिने शिवपद आपतां ॥ जि० ॥ जेणें वाम्यो परनो गाठ ॥ सु० ॥ ४ ॥ क्षमाशूर भगवंत जी ॥ जि० ॥ चोत्रीश अतिशय धार ॥ सु० ॥ पांत्रीश वाणी गुणें करी ॥ जि० ॥ देशना दे जलधार ॥ सु० ॥ ५ ॥ वन पालकना मुखथकी ॥ जि० ॥ तातजी आव्या उद्यान ॥ सु० ॥ सांभली भरत नरेसरू ॥ जि० ॥ आपे बहु लां दान ॥ सु० ॥ ६ ॥ चतुरंगी सेना लेइने ॥ जि० ॥ वांद्या श्रीभगवान ॥ सु० ॥ प्रभुजीनी वाणी सुणे ॥ जि० ॥ चक्री भरत सुजाण ॥ सु० ॥ ७ ॥ वखाण अवसर साथियो ॥ जि० ॥ लावे भरतनी नार ॥ सु० ॥ श्रद्धास्वस्तिक पूरीया ॥ जि० ॥ गाये गोरी गीत उदार ॥ सु० ॥ ८ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ जि० ॥ जे करे श्रुत बहु मान ॥ सु० ॥ दर्शनसागर इम कहे ॥ जि० ॥ तस थाये परम कल्याण ॥ सु० ॥ ९ ॥ इति ॥ १० ॥

॥ अथ गहूंली अग्यारमी ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ रत्नत्रयी आराधवा, आणी अधिक उमेद ॥ स

हियर मोरी हे ॥ आगम आगमधर सुणी, गुण गु णी जाव अभेद ॥ १ ॥ सहीयर मोरी हे ॥ गहूंली करो गुरु आगले ॥ ए टेक ॥ पर पारणामने टालवा, सेवा शिवपुर शर्म ॥ स० ॥ ग० ॥ २ ॥ द्रव्य जाव संजोगथी, जे रहे नित्य अलेप ॥ स० ॥ स्याद्वाद नी दीये देशना, जाणंग मय निक्षेप ॥ स० ॥ ग० ॥ ३ ॥ आत्मजाव स्वरूपना, जासन जानु समान ॥ स० ॥ स्वपर विवेचन श्रुतथकी, तेणे जक्ति बहु मान ॥ स० ॥ ग० ॥ ४ ॥ रुचिवंता सुश्राविका, करवा श्रुतनी बहु जक्ति ॥ स० ॥ विनयवती बहुमानथी, फोरवती आत्मशक्ति ॥ स० ॥ ग० ॥ ५ ॥ आत्म बाजोठ उपरें, समकित साथियो पूर ॥ स० ॥ खली खली करती खूठणां, मिथ्यामति करी दूर ॥ स० ॥ ग० ॥ ६ ॥ जे सुणे आगम इण विधें, जन्म सफल होय तास ॥ स० ॥ माहरे जवो जव नित्य होजो, ज्ञानमहोदय वास ॥ स० ॥ ग० ॥ ७ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ गहुंली बारमी ॥

॥जीरे मारे देशना दो गुरुराज, उलट आणि अति घ णो ॥ जीरेजी ॥ जीरे मारे आवियो हर्ष उल्लास, पूठ दे ई संसारने॥जी०॥१॥जीरे० ॥ विलंब न कीजें गुरुरा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज, दास उपरदया करो॥ जी० ॥ जीरे० ॥ महेर करो मे हेरबान, अमृत वचनें सींचिये ॥ जी०॥२॥ जीरे० ॥ सु णवासूत्र सिद्धांत,हेजें हियडुं गहगहे ॥जी०॥जीरे०॥ जिम मोरा मन मेह, सीताने मनें रामजी ॥ जी०॥३॥ ॥ जीरे० ॥ कमला मन गोवींद, पारवती इश्वर जपे॥ जी० ॥जीरे० ॥ तिम मुझ हृदय मझार जिनवाणी रूचे घणी ॥ जी० ॥ ४ ॥ जीरे० ॥ नयगम जंग निक्षेप, सुणतां समकित संपजे ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ उत्पाद व्यय ध्रुव रूप, स्याद्वाद रचना घणी ॥ जी० ॥ ५ ॥ जीरे० ॥ नवतत्त्व ने षट् द्रव्य, चार निक्षेप सप्तनयें करी ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ निश्चय ने व्यवहार, इणि परें मुझ उलखावियें ॥ जी० ॥ ६ ॥ जीरे० ॥ कृपा क रो गुरुराज, ते सुणवा इछा घणी ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ निज परसत्ता रूप, जासे ते सुणतां थकां ॥जी०॥७॥ जीरे०॥ जिन उत्तम माहाराज, तस पदपद्म सेवे सदा ॥ जी० ॥ जीरे० ॥ प्रगटे आत्मस्वरूप, अजय अर एणी परें जणे ॥ जीरेजी ।.०॥ इति ॥१२॥

॥ अथ गहूंली तेरमी ॥

॥ आढे लालनी देशी ॥ नयरी राजगृही सार, लोक वसे रे अपार ॥ आढे लाल ॥ जंबुस्वामी समोसर्या

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ १ ॥ पंचसया परिवार, तारे नर ने नार ॥ ॥ आ० ॥ देशना पुष्कर जलधरें रे ॥ २ ॥ इंद्रिय झीपे पंच, वारे क्रोधनो संच ॥ आ० ॥ गुरुमुख देखी नयणां ठरे रे ॥ ३ ॥ जिनमतकज दिनकार, सोहम स्वामी पट्टधार ॥ आ० ॥ चरण करण नंडार छे रे ॥ ४ ॥ सोनागी शिरदार, सुविहित मुनि आधार ॥ आ० ॥ पृथिवी पीठें विचरता रे ॥ ५ ॥ अप्रतिबंध विहार, समरस गुण सुखकार ॥ आ० ॥ वैराग्यें जनतानें रीझवे रे ॥ ६ ॥ विचरे देश विदेश, दे बहुला उपदेश ॥ आ० ॥ बूझवे जाण अजाणने रे ॥ ७ ॥ कोणिक नृप घरनार, स्वस्तिक पूरे उदार ॥ आ० ॥ ज्ञाननी नक्ति करे घणी रे ॥ ८ ॥ श्रुत नक्ति करे जेह, सुख विलसे नर तेह ॥ आ० ॥ दर्शनसागर इम वदे रे ॥ ९ ॥ इति ॥ १३ ॥

॥ अथ गहूंली चौदमी ॥

॥समुद्रविजय सुत चांदलो ॥ शामलिया जी॥ए देशी॥

॥ राजगृही नगरी सोहामणी ॥ गुरु आवे छे ॥ श्री सोहम गणधार ॥ सुगुरु वधावे छे ॥ पंचसया मुनि साथ छे ॥ गु० ॥ आतम सुखना करनार ॥ सु० ॥ ॥ १ ॥ गुणशील नामे उद्यानमां ॥ गु० ॥ उतर्या

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ए वनमांय ॥ सु० ॥ वनपालकें जइ वीनव्या ॥ गु० ॥ ते सांजली कोणिक राय ॥ सु० ॥ २ ॥ चतुरंगी सेना सज्ज करी ॥ गु० ॥ गज रथ पायक नहि पार ॥ सु० ॥ घणे आडंबरें राजवी ॥ गु० ॥ वांदे थइ उज माल ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसार समुद्रने तारवा ॥ गु० ॥ वार वार जवजंजाल ॥ सु० ॥ शोल शणगार सजी करी ॥ गु० ॥ वांदे पद्मावती नार ॥ सु० ॥ ४ ॥ गहूंली करे मन रंगशुं ॥ गु० ॥ अक्षत पूरे सार ॥ सु० ॥ लली लली ले ढे उवारणां ॥ गु० ॥ प्रद क्षिणा दे मन सार ॥ सु० ॥ ५ ॥ चिहुं गति वारक साथियो ॥ गु० ॥ करता मनने कोड ॥ सु० ॥ कहे मुक्ति कर जोडिने ॥ गु० ॥ संघ मनना पुरजो कोड ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥ १४ ॥

॥ अथ गहूंली पन्नरमी ॥

॥ गर्व नकीजें रे, ए सद्गुरु शीखडली ॥ ए देशी ॥

॥ सरसती चरण नमी करी केशुं, गायशुं आगम वाणी ॥ अर्थ ते अरिहंतजीयें प्रकाश्यो, सूत्र ते ग णधर वाणी ॥ जवि तुमें सुणजो रे ॥ सोहम गणधर वाणी ॥ मीठी लागे रे, मुऊनें वीरनी वाणी ॥ १ ॥ ए आंकणी॥ चतुरा चालो गुरुनी पासे, गहूंली करीयें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मन रंगें॥ नवशत अंग धरी शणगार, प्रभुगुण गाउ उ मंगे ॥ज०॥२॥ हाथे रजत रकेबी धरीने, मांहे ढीपना पुत्रने लावो ॥ स्वस्तिक पूरो गुरुने वधावो, गुरु गुण मधुरा गावो ॥ ज० ॥ ३ ॥ राजगृही नयरें गुणशीलचै त्यें, तिहां प्रभु वीरजी आव्या॥ जंजासार ते सांजली हरख्यो, चतुरंग सेनथी आव्या ॥ज०॥ ४॥ चौद ह जार मुनिराज संघातें, साध्वी सहस ढत्रीश॥ इंद्रभू ति आदें देइ गणधर, प्रभुपरिवार जगीश॥ ज० ॥५॥ प्रभु आदि सरवेनें वांदी, मगधाधीश जूपाल ॥ चे लणा राणी करे ते गहूंली, प्रभुसन्मुख ततकाल ॥ ॥ ज० ॥ ६ ॥ कुंकुम घोली साथीयो पूरे, अष्ट कर्म ने चूरे ॥ चिहुं गति चूरण दुःख निवारण, मनोवं ढित सवि पूरे ॥ ज० ॥ ७ ॥ श्रीअचलगह्वपति पुज्य पट्टोधर, पुण्यसागर सूरिराया ॥ सूरि ढत्रीश गुणें करि शोहे, जवि प्रणमो तस पाया ॥ ज० ॥ ८ ॥ जखौ बंदरे सुंदर श्रावक, गुरुगुणना बे रागी ॥ श्रीवीर प्रभुनो पसाय लहीनें, गातां शुभमति जा गी ॥ ज० ॥ ए ॥ आषाढ वदि एकमनें दिवसें, गहूंली गाई मनरंगें ॥ चतुरा मलि सुकंठें गाजो, जाव धरी उमंगें ॥ ज० ॥ १० ॥ जे सोहागण मली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गढूंली गाशे, एम कहे केवल नाणी ॥ सर्वार्थ सिद्ध त णां सुख विलशे, लेशे मुक्ति पट्टराणी॥ज०॥११॥१५॥

॥ अथ गढूंली शोलमी ॥

॥ जीरे जिनवर वचन सोहंकरु ॥ जीरे अविचल शासन वीर रे ॥ गुणवंता गिरुआ वाणी मीठी रे माहावीरतणी ॥ जीरे पर्षदा बार मली तिहां, जीरे अरथ प्रकाशो गुणगंजीर रे ॥ गुणवंता गौत म, प्रश्न पूछे रे माहावीर आगलें ॥ १ ॥ जीरे नि गोद स्वरूप मुजने कहो, जीरे केम ए जीवविचार रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे मधुर ध्वनियें जगगुरु कहे, जीरे करवा जविक उपकार रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ २ ॥ जीरे राजचउद लोक जाणियें, जीरे असंख्याता जोजन कोडाकोडी रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे जोजन ए क एमां लीजीयें, जीरे लीजिये एक एकनो अंश रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ३ ॥ जीरे एक निगोदें जीव अनंत छे, जीरे पुद्गल परमाणुआ अनंत रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे एकप्रदेशें जाणीयें, जीरे प्रदेशें वर्गणा अनंत रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ४ ॥ जीरे एक असंख्य गोलासं ख्य छे, जीरे निगोद असंख्य गोला शेष रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे परमाणुआ प्रत्यें गुण अनंत छे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीरे वरण गंध रस फरस रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ५ ॥ जीरे लोक सकलमय इम जस्यो, जीरे कहे गौतम धन्य तुम ज्ञान रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ जीरे एवा गुरुने आगल गहूंअली, जीरे फतेशिखर अमृतशिव निश्रे णी रे ॥ गु० ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥ १६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्तरमी ॥

॥राग धोल ॥ बेनी संचरतां रे संसारमां रे, बेनी सद्द गुरु धर्मसंजोग ॥ वधावो गहूंअली रे ॥ बेनी सद्दहणा जिनशासननी रे, बेनी पूरण पुण्य संजोग ॥ व०॥ १॥ बेनी सम संतोष साडी बनी रे, बेनी नवब्रह्म नवरंग घाट ॥व०॥ बेनी तप जप चोखा ऊजला रे,बेनी सत्यव्र त विनय सुपाट ॥ व०॥२ ॥ बेनी समकित सोवनथा लमां रे, बेनी कनक कचोले संग ॥ व० ॥ बेनी संवर करो शुभ साथीयो रे, बेनी आणा तिलक अभंग ॥ ॥ व० ॥ ३ ॥ बेनी समिति गुप्ति श्रीफल धरो रे, बे नी अनुभव कुंकुम घोल ॥ व० ॥ बेनी नवतत्त्व हृइ ये धरो रे, बेनी चरचो चंदन रंग रोल ॥ व० ॥ ४ ॥ बेनी भवजल जेहमां भेदीयें रे, बेनी विवेक वधा वो शाल ॥ व० ॥ बेनी वीर कहे जिन शासने रे, बेनी रहेतां मंगलमाल ॥ व० ॥ ५ ॥ इति ॥ १७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ गहूंली अढारमी ॥

॥ वाहालोजी वाये ढे वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ सोहमस्वामी समोसर्या रे, राजगृही उद्यान ॥ ब हु मुनि परिकर संजुता रे, चउनाणी जगवान ॥ सोह० ॥ ए आंकणी ॥ १॥ गुरुमुख कमल विलोकवा रे, आ वे श्रेणिक माहाराय ॥ जाव जक्ति करी वांदिया रे, गणधर केरा पाय ॥ सो० ॥ २ ॥ श्रीगुरुजी दीये देश ना रे ॥ ते सांजले श्रोतावृंद ॥ अमीय समाणी वा णी सुणी रे, मनमां पामे आनंद ॥ सो० ॥ ३ ॥ वखा ण अवसर जाणीने रे, ज्ञाननी जक्ति निमित्त ॥ स तीय शिरोमणि चेलणा रे, साथीयो पूरे पवित्त ॥ सो० ॥ ४ ॥ ज्ञान परम गुणजीवने रे, जे तस जक्ति करेय ॥ तेहने ज्ञाननी संपदा रे, दर्शन एम कहेय ॥ सो० ॥ ५ ॥ इति ॥ १८ ॥

॥ अथ गहूंली उंगणीशमी ॥

॥ राजगृही समोसर्या ॥ गुरुराज रे ॥ सोहम स्वा मी आज ॥ समारो काज रे ॥ सहीयर मोरी वांद वा ॥ गु० ॥ आवो लेइ वर लाज ॥ स० ॥ १ ॥ गुरु आगल रचो गहूंअली ॥ गु० ॥ डुविधजाव बहु जाव ॥ स० ॥ अध्यातम वर थासमां ॥ गु० ॥ गु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रुगुण मोती जावि ॥ स० ॥ २ ॥ गुणि मन सोवन फूलडां ॥ गु० ॥ शुज रति कुंकुम घोल ॥ स० ॥ श्रद्धा रकेबी कर ग्रही ॥ गु० ॥ दर्शन जूमि अमोल ॥ स० ॥ ३ ॥ अनुजव श्रीफल रूअडुं ॥ गु० ॥ उत्तर गुण बहु शाल ॥ स० ॥ पंचाचार करो लूंछणां ॥ गु० ॥ तिलक विवेक विशाल ॥ स० ॥ ४ ॥ इणिपरें द्रव्य नें जावशी ॥ गु० ॥ मंगल आठ कराय ॥ स० ॥ राणी कोणिक रायनी ॥ गु० ॥ गहूंली गुरुगुण गाय ॥ स० ॥ ५ ॥ कंचनकमल विराजता ॥ गु० ॥ दिये देशना सार ॥ स० ॥ चरण करण रयणे जरया ॥गु० ॥ प्रजु पंचम गणधार ॥ स० ॥ ६ ॥ पंच समिति समिता थका ॥ गु० ॥ नव कल्पी करय विहार ॥ स० ॥ चउविह संघे परिवरया ॥ गु० ॥ जीत्या विषय विकार ॥ स० ॥ ७ ॥ जाव धरी नमुं तेहना ॥ गु० ॥ चरणयुगल अरविंद ॥स० ॥ वीर वाणी संजलावतां ॥ गु० ॥ मलुकजाव अमंद ॥ स० ॥ ८ ॥

॥ अथ गहूंली वीशमी ॥

॥ अने हांरे वालोजी वाये ठे वांसली रे ॥ ए देशी ॥

॥ अने हांरे वीरजी दीये ठे देशना रे ॥ चालो चालो सहीयरनो साथ ॥ सुरवर कोडा कोडि तिहां म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ळ्या रे, प्रजु वरसे ठे त्रिजुवन नाथ ॥ वीर० ॥ १ ॥
अने हांरे समवसरणनी शोजा शी कहुं रे, जिहां मु
निवर चौद हजार ॥ महासती चंदनबाला मावडी
रे, सहु साधवी ठत्रीश हजार ॥ वीर० ॥ २ ॥ अने
हांरे गणधर पूज्य अग्यार ठे रे, तेहमां गौतम स्वामी
वजीर ॥ त्रणशें चउद पूर्वी दीपता रे, श्रुत केवली
जगवड वीर ॥ वीर० ॥ ३ ॥ अने हांरे सातशें केवली
जगत प्रजाकरु रे, तेतो पाम्या ठे जवतीर ॥ पांचशें
विपुलमति परिवार ठे रे, सहु परिकर ठे प्रजुवीर ॥
वीर० ॥ ४ ॥ अने हांरे आणंद श्रावक समकित उ
चरे रे, वली द्वादश व्रत जयकार ॥ एक लाख उंग
णशाठ हजारमां रे, मुख्य श्रावक दृढ व्रत धार ॥
वीर० ॥ ५ ॥ अने हांरे सखी वयणे उजमाली बालि
का रे, आवी वंदे प्रजुजीना पाय ॥ माहामंगल प्रजु
जीनी आगलें रे, पूरे चउ मंगल सुखदाय ॥ वीर०
॥ ६ ॥ अने हांरे सातमुं अंग उपासक सुत्रमां रे,
प्रजु दीपविजय कविराज ॥ आणंद सरिखा दश श्रा
वक कह्या रे, लेहशे एक जवें शिवपुर राज ॥ वीर० ॥
॥ ७ ॥ इति ॥ २० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ गहूंली एकवीशमी ॥

॥ गाम नगर पुर विचरंता, गुरु आवे छे ॥ मुनि पंच सया परिवार, साथें लावे छे ॥ सहस अढार सीलांग ना, जे धोरी छे ॥ ब्रह्मचर्यना भेद अढार, आप विचारी छे॥१॥जीवभेद बत्रीशनी, दया जाणी छे॥ निरुपाधि क देशना सार, नाथ वखाणी छे ॥ दीक्षा दोष निवार वा, नर तारे छे॥पाप स्थानना दोष अढार, दूर निवारे छे ॥२॥ रत्नत्रयि आराधता, गुरु राजे छे ॥ गुरुराजगृही उद्यान, अधिक दिवाजे छे ॥ कनककमल बीराजता, गुरु गाजे छे ॥ प्रभुवीर पट्टोधर धीर, भावठ भांजे छे ॥ ॥३॥ जंबु कुमर युक्तें करी, गुरु भेट्या छे ॥ कहे मुख थी महारा आज, पातक मेट्यां छे ॥ समुद्रसिरी जंबू तणी, पट्टराणी छे ॥ वली बीजी साते नार, गुणनी खाणी छे ॥ ४ ॥ पहेरी करुणा कांचली, मन मोती छे ॥ उंढी समकित साडी मांहे, गुरुमुख जोती छे ॥ थिरता भावना थालमां, व्रत मोती छे ॥ भरी कुंकुम राग कचोल, पुण्यपनोती छे ॥५॥ श्रद्धाभावनो साथि यो, त्यां पूरे छे ॥ छवि पंचाचार रतन, चिहुं गति चूरे छे ॥ ते देखी मोहरायनी, मात झुरे छे ॥ ए क्लेश शि वसुखराज, चढते नूरे छे ॥ ६ ॥ गहूंली करो गुरु आ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गले, मन माचे ढे ॥ हवे जंबु सोहम पास, संजम जा चे ढे ॥ पांचशें सत्तावीशशुं, व्रत लीधुं ढे ॥ कहे मोहन माहाराज, कारज सीधुं ढे ॥ ७ ॥ इति ॥ २१ ॥

॥ अथ गहूंली बावीशमी ॥

॥ बेनी नरभव पुण्ये पामी रुअडा रे, शुचि रुचि करो शणगार रे ॥ वधावो गुरुने मोतीयें रे ॥ बेनी दर्शन करो आदि देवनुं रे, बेनी वली वली वांदो रे अणगार रे ॥ व० ॥ १ ॥ बेनी मयगल परे मुनि मा लाता रे, बेनी मधुकर परें लीयें आहार रे ॥ व० ॥ बेनी आतमराम रमे रंगशुं रे, बेनी सूत्र अर्थ नय संभार रे ॥ व० ॥ २ ॥ बेनी इम सोहागण पूरे साथि यो रे, बेनी गाउं मंगल गीत रे ॥ व० ॥ बेनी विधि शुं वधावी करो लुहणां रे, बेनी ए जिनशासन रीत रे ॥ व० ॥ ३ ॥ बेनी पच्चखाण करो पाय पूजीने रे, बेनी वीरवाणी पीयो रसाल रे ॥ व० ॥ बेनी शुरू होये आतमा आपणो रे, बेनी शिवसुख लहीयें रसा ल रे ॥ व० ॥ ४ ॥ इति ॥ २२ ॥

॥ अथ गहूंली त्रेवीशमी ॥

॥ विमलगिरि रंगरसें सेवो ॥ ए देशी ॥

॥ मुनिवर मारगमां वसिया, वसी उन्मारगथी ख

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सिया, शिववहू खेलणके रसिया ॥ मु० ॥ १ ॥ वीर्युं गुणगाणुं बाल, जगवई अंगें सुविशाल, रहे प्रमत्तें घणो काल ॥ मु० ॥ २ ॥ अंतर मुहूरत स्थिति आवे, निद्रामां गुण पलटावे, पण अप्रमत्त तणे जावे, ॥ मु० ॥ ३ ॥ द्रव्यजाव संजम धरिया, जंगम तीरथ संचरिया, गाखरिया सिंह केसरिया ॥ मु० ॥ ४ ॥ डुविहासित सहे न लहे, ऊण्ण परिसह वीश सहे, मुनिवर आचारांग कहे ॥ मु० ॥ ५ ॥ चक्रवाल दशविध पाले चरणकरण गुण अजुआले, शून्यदहन अवधि टाले ॥ मु० ॥ ६ ॥ एहवा मुनिवरनी आगें, चतुरा अक्षय फल मागे, श्राविका मुनी गुणरागें ॥ मु० ॥ ७ ॥ गहूंली करी निजमल धोती, वधावती ऊलके मोती, लली लली गुरु सन्मुख जोति ॥ मु० ॥ ८ ॥ आगम रयण गुणें रमती, गुरुगुण गाती मन गमती, श्रीशुजवीर चरण नमती ॥ मु० ॥ ए ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथनो विवाहलो चोवीशमो ॥

॥पासकुमर महिमा निलो, गुणमणि रयण जंकार ॥ अवसर विवाह जिन तणो, गायशुं अति सुखकार ॥ पा० ॥ १ ॥ शुज मंरूपें तोरण सोहियें रे, जोतां सुर नरनां मन मोहियें रे ॥ महाजन मलीयो बे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

अति मनोहार, राय राणानो नहिं पार ॥ पा० ॥ २ ॥ चंपक वरणी सुंदरी, वलि नीलवरण सुखदाय ॥ दीसे ढे अति रे दयामणी, पास कुमर देखी सुख था य ॥ पा० ॥ ३ ॥ पासकुमर चड्या वरघोडे, शिर खूप जड्या ढे बहु मोडे ॥ मानुं रवि शशी आव्या ढे दो ड, काने कुंडल मस्तक जोड ॥ पा० ॥ ४ ॥ सजन संतोष्या बहुपरें, तिहां अश्वसेन माहाराय ॥ शुभ शणगार सजि सुंदरी, पासकुमार सुखदाय ॥ पा० ॥ ५ ॥ देव उतारे आरती रे, वली नर नारी गुण गाय ॥ सुवर्ण मुकुटें हीरा सोहीयें रे, तोरण आव्या श्री जिनराय ॥ पा० ॥ ६ ॥ जिनमुखें सोहीयें तं बोल रे, घणो दिसे ढे झाक जमोल रे ॥ परण्यां पर एयां प्रभावती राणी, रूपें अप्सरा ने इंद्राणी ॥ पा० ॥ ७ ॥ जिन परणीने निजघर आविया रे, जा चकने दानशुं लाविया रे ॥ गुण गाये ढे गंधर्व रंग, देवे उदय उलट अंग ॥ ॥ पा० ॥ ८ ॥ इति ॥२४॥

॥ अथ श्रीमाहावीरस्वामीना महिना पच्चीशमा ॥

॥पद्मसरोवर हुं गई रे, त्रिशला राणी करे रे कल्लोल ॥ आजनो दिन रलीयामणो रे ॥ पहेलेने मासें अ मीय पीयो रे, बीजे चंदन घोल ॥ आ० ॥ १ ॥ त्रीजे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नें मासें केसर कीयो रे, चोथे कपूरनी रेख ॥ आ० ॥ पांचमें इष्ट पूजी जिमो रे, छठे रह्या गर्भावास ॥ आ० ॥ २ ॥ सातमे जाणुं सिंहें चडे रे, आठमे दीजें दान ॥ आ० ॥ नवमे मासें यतना करो रे, सवानवें पुत्र रतन ॥ आ० ॥ ३ ॥ धरणीयें पग देई जनमीया ए, जन्म्या श्री माहावीर ॥ आ० ॥ सोना छरीयें नाल वधेरीयां रे, दायीने कोटी सोनैया दीध ॥ माहावीर कुंवर जन्म्या रे ॥ ए आंकणी ॥ ४ ॥ पुत्र जन्म निज सांभली रे, राय सिद्धार्थने हर्ष न माय ॥ मा० ॥ व धामणीयाने पंचांग पहेरामणी रे, वली कीधी लाख पसाय ॥ मा० ॥ ५ ॥ पाणी साथें दूधडे नवरावीया रे, चोखा साथें मोतीडे वधाव ॥ मा० ॥ चीर फाडीनें बालोतियां रे, पलंग पालखडीयें पोढाव ॥ मा० ॥ ६ ॥ घर घर गूडियो उछले रे, नीलां तोरण बांध्यां छे बार ॥ मा० ॥ वछजीनी फईजी तेडावीयां रे, नाम दीधुं वर्द्धमान ॥ मा० ॥ ७ ॥ मेरुशिखर ऊपर स्नान करे रे, छप्पन कुमरी गावे छे गीत ॥ मा० ॥ नाम पडामणे हाथीयो रे, दीधां दीधां रत्न बे चार ॥ मा० ॥ ८ ॥ सो ना ते केरुं झुमणुं रे, मांहे मोतीनो झुमकार ॥ मा० ॥ त्रिशला राणी पुत्र तुमारडो रे, देवतणो शिरदार ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ मा० ॥ ए ॥ काठा गहुंनी लापशी रे, मांहे माल वीयो गोल ॥ मा० ॥ जाजे घीयें लसलसी लापशी रे, गोत्रज आगल नैवेद्य कराय ॥ मा० ॥ १० ॥ कुंवरनी माता एम जणे रे, कुंवरजी अविचल राज ॥ मा० ॥ सोवन पालणीये पोढाडीया रे, नीलुडां वस्त्र उंढाड ॥ मा० ॥ ११ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ अथ गहूंली छवीशमी ॥

॥ सरसति सामीने दिल धरी रे, वांदुं गुरुने उत्साह॥ कमल पोयण सम लोयणी रे, कामिनी कंचनवान ॥ चमर ढलावो जिणंद प्रभु वीरने रे ॥ ए आंकणी॥१॥ कंकण नेउर खलकती रे, ललकती कोकिलवान ॥ ग जगति चालशुं चालती रे, मलपती सहियर साथ ॥ च० ॥ २ ॥ कनक कचोलां कुंकुम भरी रे, थाल मु क्ताफल सार ॥ चरम प्रभुजीने वांदवा रे, शोल स जी शणगार ॥ च० ॥ ३ ॥ प्रह उगमतानी गहूंअली रे, वाजे वीणा सार ॥ चेलणा काढे छे गहूंअली रे, श्रेणिकनी घरनार ॥ च० ॥ ४ ॥ मोतीनो पूरयो छे साथियो रे, छवीयां पांच रतन्न ॥ चेलणा वधावे छे मोतियें रे, देशना दिये जगवन्न ॥ च० ॥ ५ ॥ पाट पीठ प्रभु पाउले रे, गाती रंगें रे साज ॥ सोवन सूर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज ऊगियो रे, सुरतरु मोख्यो रे आज ॥ च० ॥ ६ ॥ पूर्वज तूठा पुण्यथी रे, वांद्या वीर जिणंद ॥ सुणी दे शना जगवंतनी रे, हरख्यां नर नारी वृंद ॥ च० ॥७॥ चेलणा चतुराई चित्तमें रे, संभारे दिवस ने रात्र ॥ त्रिशलानंदन देखतां रे, पवित्र थयां मोरां गात्र ॥ च० ॥ ८ ॥ सेवक लक्ष्मीसूरि तणो रे, प्रणमे नाण उ दार ॥ वीर प्रभुजीने वांदतां रे, सफल कियो अव तार ॥ च० ॥ ए ॥ इति ॥ २६ ॥

॥ अथ षडावश्यकसूत्रनी गहूंली सत्तावीशमी ॥

॥ अहो मुनि चारित्रमां रमता, श्रीजिनआणा सुधी धरता, क्रियामारगमां अनुसरता ॥ अहो० ॥ १ ॥ षडावश्यक सूत्रतणी रचना, ते सांभलो भवि एक म ना, वाणी अमृत रस झरना ॥ अहो० ॥ २ ॥ प्रथम सामायिक जे दाख्युं, बीजुं चउविसत्थो भांख्युं, तृ तीय वांदणा दिल राख्युं ॥ अहो० ॥ ३ ॥ प्रतिक्रमण चोथे सुणतां, काउस्सग्ग पांचमे अनुसरतां, छठे पच्चक्काण करतां ॥ अहो० ॥ ४ ॥ षड्विध आवश्यक जे धारे, शुभ परिणामें अवधारे, श्रीजिन मारग अजु वाले ॥ अहो० ॥ ५ ॥ स्थापना ज्ञानतणी मांगो, ममता माया दूरे भांगो, तो शमतावृक्ष होये जामो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अहो० ॥ ६ ॥ इणिपरें सोहमनी वाणी, गहूंली करे चेलणा राणी, गुरु सन्मुख जोवे गुणखाणी ॥ ॥ अहो० ॥ ७ ॥ सीहोर नगरें गहूंली गाइ, कहे मुक्ति सुणो चित्त लाइ, श्रीजिन आणा धरो जाइ ॥ अहो० ॥ ८ ॥ इति ॥ २७ ॥

॥ अथ गहूंली अठावीशमी ॥

॥ अरिहा आया रे, चंपावनके मेदान ॥ सुरपति गाया रे, शासनके सुलतान ॥ ए आंकणी ॥ समव सरण सुर मली विरचावे, फूल सचित्त जल थलनां लावे ॥ विकसित जानु सम वरसावे, उपर बेसे रे, मुनिमुख परषदा बार ॥ प्रभु महिमायें रे, पीडा न हुवे लगार ॥ तत्त्वावतारी रे, प्रवचन सारउद्धार ॥ अ० ॥१॥ पुरी शणगारी कोणिक राय, जल थटकायां फूल बिछाय, सजी सामग्रियुं वंदन आय, उववाई सूत्रें रे, देशना अमृत धार॥ गौतम पूछे रे, अंबडनो अधिकार ॥ अदत्त न लेवे रे, सात सया परिवार ॥ अ०॥२॥ पाणी हते तरशां व्रत पाली, गंगा रेवत वचें संथारी, देवलोकें पंचम अवतारी, अंबडनामें रे, ते सहुनो शिरदार ॥ अवधिज्ञानी रे, वैक्रियलब्धि उदार ॥ तापस वेशे रे, पाले अणुव्रत बार ॥ अ० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ३ ॥ ते गुणदरिया कौतुक नरिया, कंपिलपुरमां हे संचरिया, नित्य नित्य सहु घर वसती वरिया, सहुको जाणे रे, अम घर उछव थाय ॥ घर घर होशे रे, कौतुक जोवा ते जाय ॥ देव नवांतर रे, अंबड मुक्ति वराय ॥ अ० ॥ ४ ॥ सांजली हृइडे हर्ष नराणी, बहुत साहेलीनी ठकुराणी, नामें सुनद्रा धारणी राणी, चीर पटोली रे, पहेरी निकट ते जाय ॥ घुंघट खोली रे, अंजलि शीश नमाय ॥ केशर घोली रे, साथिये मोती पूराय ॥ अ० ॥ ५ ॥ चतुरा चउमुख चित्त मिलावे, मुक्ताफल दोय हाथ धरावे, श्रीशुनवीरनां चरण वधावे, मंगल गावे रे, रंना अपछर नार ॥ जगतनो दीवो रे, विश्वंनर जयकार ॥ बहु चिरंजीवो रे, त्रिशला मात मल्हार ॥ अ० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंलि उंगणत्रीशमी ॥

॥ अहो मुनि संयममां रमता ॥ ए आंकणी ॥ वीरनी आणा शिरधरता, पवयणमायें सुविचरंता, सोहमपाट दीपावंता ॥ अ० ॥ १ ॥ श्रीजिन आणा मति रागी, द्रव्य नव परिग्रह त्यागी, शिवरमणीशुं लय लागी ॥ अ० २ ॥ उत्रीश उत्रीशीयें पूरा, रागादिकथी रहे दूरा, शांत मुद्रामांहे ससनूरा ॥ अ० ॥ ३ ॥ वी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रवाणी चित्र अनुसरता, कुमति तणा मद गालंता, आव्या राजगृही फरता ॥ अ० ॥ ४ ॥ कोणिक नृप तिनी राणी, नामंगलमां ऊजाणी, धवल मंगल करे गुणखाणी ॥ अ० ॥ ५ ॥ अनुभव ज्ञाने चित्त ठरशे, सद्गुरु अंगें सदा वरसे, नविजलधर चातक वरसे ॥ अ० ॥ ६ ॥ एणी परें जे गुरु गुण गावे, संवरभावें चित्त लावे, महींऽसिंह सूरि सुख पावे ॥ अ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ३९ ॥

॥ अथ गहूंली त्रीशमी ॥

॥ सखि राजगृही उद्यानमां, उतरिया श्रीजिनराज ॥ वारी जाऊं वीरनें ॥ सखि मननो ते सांसो उपशमे, जाणीयें मलीयो छे शिवपुरीनो साज ॥ वा० ॥ १ ॥ सखि देवछंदो ते देवें रच्यो, तिहां बेठा छे त्रिभुवन राय ॥ वा० ॥ सखि बारे पर्षदा तिहां मली, जीरे सती सुणवाने जाय ॥ वा० ॥ २ ॥ राणी चेलणा ते लावे गहूंअली, राजा श्रेणिकनी घरनार ॥ वा० ॥ जीरे मुक्ता ते फलनो साथियो, जीरे उपर श्रीफल सार ॥ वा० ॥ ३ ॥ सखि नवणीनी आगल गहूंअली, जीरे विच विच नागरवेल ॥ वा० ॥ जीरे दर जलुं रे दरिया तणुं, जीरे जेमां छे जाजेरी रेल ॥ वा० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ४ ॥ जीरे वखाण जलुं रे वीरजी तणुं, जीरे सांजले गुणिजन लाख ॥ वा० ॥ जीरे नानी ते नानी नानडी, जीरे नानी छे शाकर द्राख ॥ वा० ॥ ५॥ जीरे नानी ते प्रभुजीनी जीभडी, जीरे बूझव्या जाण अजाण ॥ वा० ॥ जीरे भाट भणे रे बीरुदावलि, जीरे सईयर गावे गान ॥ वा० ॥ ६ ॥ जीरे आ जुगमां जोतां थ कां, जीरे कोइ न करे प्रभुजीशुं होड ॥ वा० ॥ जीरे भव भव ए जिन जो मले, वसंतसागर कहे कर जोड ॥ वा० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ गिरनारजीनो वधावो एकत्रीशमो ॥

॥ प्रथम रेवतगिरि पेखियो, जीहो उपनो अधिक आणंद ॥ वधावो मारे आवीयो ॥ बीजे नेमीशर बहु गुणा, जीहो दीठो दोलतनो दिणंद ॥ व० ॥ १ ॥ ॥ ए आंकणी ॥ त्रीजे वधावे प्रभु तुं स्तव्यो, जीहो अगर सुवासि विहार ॥ व० ॥ केसर चंदन कुसुमनी, जीहो पूजा सत्तर प्रकार ॥ व० ॥ २ ॥ चोथे वधावे प्रभु चरणनुं, जीहो धरीये मन शुभ ध्यान ॥ व० ॥ चतुर दरिसण चारित्रनां, जीहो गुण गाउं गुरुग्यान ॥ व० ॥ ३ ॥ आसन युक्ति अनुसरी, जीहो जादव गुणलय लीन ॥ व० ॥ भावुं प्रभुगुण भावना, जीहो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आतमशक्ति नवीन ॥ व० ॥ ४ ॥ एम सघलो टल्यो आंतरो, जीहो अम तुम अतिशय एक ॥ व० ॥ ध्या यकनें वली ध्येयनो, जीहो अधिक विवेक अनेक ॥ व० ॥ ५ ॥ जाग्य जले मलि जविजनें, जीहो जोयो श्रीजिनराज ॥ व० ॥ संघवी सहित स्वरूपनुं, जीहो सफल थयुं सहु काज ॥ व० ॥ ६ ॥ इति ॥३१॥

॥ अथ श्रीथूलीजद्रजीनी गहूंली बत्रीशमी ॥

॥ जीरे मारे थूलीजद्र गुरुराय, सातमे पाटे सोहाम णा जीरे जी ॥ जीरे मारे जद्रबाहु मुणिंद, संजूति विजय सूरि तणा ॥ जीरे० ॥१ ॥ जीरे मारे पाट विशे ष सुजाण, शियलगुणें अलंकर्या ॥ जी० ॥ जीरे मारे कोश्यायें बूऊव्या ताम, जैनधर्मथी नवि पड्या ॥ जी० ॥ २ ॥ जीरे मारे जगमां राख्युं नीम, चोरा शी चोवीशी लगें ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे संघ चतुर्विध जाण, उछव करे उलट अंगे ॥ जीरे० ॥ ३ ॥ जीरे मारे वाजे ढोल निशान, सरणाईयु मधुरे स्वरे ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे गोरी गावे गीत, सोहामण गहूंली करे ॥ जीरे० ॥४ ॥ जीरे मारे धन्य सकगल प्रधान, धन्य लाछल दे मातने ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे धन्य ते नागर नात, धन्य ते सिरिया जातने ॥ जीरे० ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीरे मारे धन्य जक्षा प्रमुख, साते बेहेनो सोहामणी ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे सूरीश्वर शिरदार, श्रीथूलिनद्र शिरोमणि ॥ जीरे० ॥ ६ ॥ जीरे मारे ध्यान धरो दिन रात, एवा मुनिनुं खांतशुं ॥ जीरे० ॥ जीरे मारे लेशे मंगलमाल, जे गावे नित्य नावशुं ॥ जीरे० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ पजूसणनी गहूंली तेत्रीशमी ॥

॥ महारी सही रे समाणी ॥ ए देशी ॥

॥ परव पजूसण पुण्यने योगें, मलिया सह गुरु संयोगें रे ॥ मारी सही रे समाणी ॥ सात पांच नेली मलीनें टोली, गहूंली करे मन नोली रे ॥ मा० ॥ १ ॥ घुंघटपट खोली गुरुमुख जोती, तन मनना मल धोती रे ॥ मा० ॥ समकितरागें ने धर्मनी बुद्धि, परिणतिनी वाली शुद्धि रे ॥ मा० ॥ २ ॥ वांदी वधावी गुरुजीनी वाणी, निसुणो नविजन प्राणी रे ॥ मा० ॥ उपशम नावो ने निंदा निवारो, जीव सहुशुं हित धारो रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ गुरुपग मूले संघ सहु खामो, कषायतणा मद वामो रे ॥ मा० ॥ इणदिन आवे व्रत तप कीजे, अधिक अधिक लाहो लीजें रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ पूजा प्रनावना महिमाने देखी, हरखे धरमना गवेषी रे ॥ मा० ॥ चैत्य परवाडी जिनमुख जोवो, न

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वनवनां पाप खोवो रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ कलप सुणीजें प्रजावना दीजें, अठाइ महिमा इम कीजें रे ॥ मा० ॥ गहूंली गावो ने वीरजिन ध्यावो, मलूक जावना जावो रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इति ॥ ३३ ॥

॥ अथ चूनडी चोत्रीशमी ॥

॥ आढी सुरंगी चूनडी रे, चूनडी राती चोल रे ॥ रंगीली ॥ लाल सुरंगी चूनडी रे ॥ १ ॥ बुरानपुरनी बांधणी रे, रंगाणी उरंगावाद रे ॥ रंगीली ॥ चोल मजीठना रंगथी रे, कसुंबे लीधो हठवाद रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ २ ॥ सूरत शेहेरमां संचर्यां रे, जातां जिन वाणीने माट रे ॥ रंगीली ॥ चोराशी चोकने चहूवटे रे, दीठां दोशीडानां हाट रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ३ ॥ नणदी वीराजीने वीनवे रे, ए चूनडीनी होंश रे ॥ रंगीली ॥ चूनडीमां हाथी घोडला रे, हंस पोपट ने मोर रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ४ ॥ समरथ ससरे मूलवी रे, पासें पीयुजीने राख रे ॥ रंगीली ॥ समकित सासुना केणथी रे, सोनइया दीधा सवा लाख रे ॥ रंगीली ॥ आ० ॥ ५ ॥ सासूजीने साडीयो रे, नानी नणदीनें घाट रे ॥ रंगीली ॥ देराणी जेठाणीनां जोडलां रे, शोक्यने लावो शा माट रे ॥ रंगीली ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आ० ॥ ६ ॥ चूनडी उढिनें संचख्यां रे, जातां जिन द रबार रे ॥ रंगीली ॥ माणकमुनियें कोडथी रे, गाई ए चूनडी सार रे ॥ रंगीली ॥आ०॥७॥ इति० ॥३४॥

॥ अथ गहूंली पांत्रिशमी ॥

॥ आसणरा जोगी ॥ ए देशी ॥

॥ श्रीगुरुपद पंकजनी सेवा, लागी छे मुझ मन हे वा रे ॥ गुरुजी उपकारी ॥ ए आंकणी ॥ गुरु गुण दरीयो सुपरें तरियो, मुजथी किम जाये तरियो रे ॥ गु० ॥ १ ॥ पांच ज्ञानमांहे उपकारी, ए श्रुतनी बलि हारी रे ॥ गु० ॥ असंख्य जीवना भव सुविलासें, संख्याता भव प्रकासे रे ॥ गु० ॥ २ ॥ लोकना भाव ते ज्ञानथी कहीयें, सद्गुरु मुखथी लहीयें रे ॥ गु० ॥ दर्शन सहित ज्ञान ते भासे, दर्शन मोहनी नासे रे गु० ॥ ३ ॥ विघटे मिथ्यात्व आतम केरो, टाले ते भवनो फेरो रे ॥ गु० ॥ समकितविण संजम नहिं रचना, आगम मांहे छे वचना रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ सम कित सहित करे जे किरिया, ते भवसमुद्रथी तरि या रे ॥ गु० ॥ एहवी वाणी सोहम केरी, नासे कर्म जो वैरी रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ सोहम पाट परंपर राजे, विजयदेवेंद्र सूरि गाजे रे ॥ गु० ॥ स्वस्तिक पूरे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दुःखने चूरे, वधावे चढते नूरें रे ॥ गु० ॥६॥ सूरि गुणे ढत्रीश सोहावे, विजयानंद पद पावे रे ॥ गु० ॥ प्रेम थी जावे नवनिध पावे, अमृत शिव सुख ध्यावे रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ३५ ॥

॥ अथ गहूंली ढत्रीशमी ॥

॥ मोतीवाला जमरजी ॥ ए देशी ॥

चरण करणशुं शोजता ॥ व्रतधारी रे सुगुरु जी ॥ जविजन मानस हंस रे ॥ जगत उपकारी रे सुगुरुजी ॥ जंगमतीरथ साधु जी ॥ व्र० ॥ लोज तणो नहिं अंश रे ॥ ज० ॥ १ ॥ पडिरूवादिक गुण जरया, ॥ व्र० ॥ षटकारण लीये आहार रे ॥ ज० ॥ सामु दाणी गोचरी ॥ व्र० ॥ ज्ञानरतन जंमार रे ॥ ज० ॥ २ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ व्र० ॥ वनिता धरि य विवेक रे ॥ ज० ॥ सरखी साहेलियें परवरी ॥ व्र० ॥ समकितनी घणी टेक रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ अ स्तिक पीठनी उपरें ॥ व्र० ॥ अनुजव मुक्ता श्वेत रे ॥ ज० ॥ चिहुं गति चूरण साथीयो ॥ व्र० ॥ वधावती धरी हेत रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ गुणवंती गावे गहूंअ ली ॥ व्र० ॥ मुनिगुणमणि धरि हाथ रे ॥ ज० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

श्रीगुरुवीरनी देशना ॥ व० ॥ सुणतां मले शिवसा
थ रे ॥ ज० ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥ ३६ ॥

॥ अथ गहूंली साडत्रीसमी ॥

॥ केसरिया चडो वरघोडे ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही वनखंरु विचाल, आव्या वीरजिणंद
दयाल, वंदे श्रेणिकनामें नूपाल तो ॥ वीर जगत गुरु
वंदना करियें ॥ वंदना करियें ने नवजल तरियें तो
॥ वी० ॥ १ ॥ कुष्टि कुरूप एक देव ते वार, मरण
जीवन जन चार विचार, श्रेणिकरायने हर्ष अपार तो
॥ वी० ॥ २ ॥ कोसंबी नगरीनो वासी, सेरूक ब्रा
ह्मण धननो आशी, पुत्र कुटुंबने रोगें वासी तो ॥
वी० ॥ ३ ॥ आवे राजगृही दुवार, मरण लही जल
तरश अपार, जलमां मेडकनो अवतार तो ॥ वी० ॥
४ ॥ वारी हारी नारी वचनथी, पूरवजव लहि चा
ल्यो वनथी, मुज वंदन हरख्यो तन मनथी तो ॥
॥ वी० ॥ ५ ॥ तुझ घोटक पद हणियो जाम, लहि
सुर नव आव्यो एणें गाम, श्रेणिक देखे तुझ परि
णाम तो ॥ वी० ॥ ६ ॥ मोक्षगमन कहो मुजने सार,
दर्दूर रंक तणो अधिकार, उपदेशमाला ग्रंथ मो
झार तो ॥ वी० ॥ ७ ॥ राणी चेलणा हर्ष न मावे,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मुक्ताफलशुं गहूंली बनावे, श्री शुभवीर जिणंद वधावे तो ॥ वी० ॥ ८ ॥ इति ॥ ३७ ॥

॥ अथ गहूंली आडत्रीशमी ॥

॥ द्वारका नगरी दीपती ॥ जिन वंदिये ॥ वसे जादव कुलनो परिवार ॥ रे जिन वंदीयें ॥ जिनजी ते आवी समोसर्या ॥ जि० ॥ साथें गणधर वर अढार ॥ रे जि० ॥ १ ॥ अढार सहस साधु चला ॥ जि० ॥ ते तो लब्धि तणा रे जंभार ॥ रे जि० ॥ समवसरण देवें रच्युं ॥ जि० ॥ तिहां बेठी पर्षदा बार ॥ रे जि० ॥ २ ॥ कृष्णजी वांदवा आविया ॥ जि० ॥ साथे अंते उरनो परिवार ॥ रे जि० ॥ गहूंली ते करे मन रंगशुं ॥ जि० ॥ सत्यभामा रुक्मिणी नार ॥ रे जि० ॥ ३ ॥ पहेरी पटोलां दाडमी ॥ जि० ॥ पाये झांझरनो झमकार ॥ रे जि० ॥ मुक्ताफलनो साथियो ॥ जि० ॥ पांच रतन्न ते पंचाचार ॥ रे जि० ॥ ४ ॥ लली लली लेती लूछणां ॥ जि० ॥ जिनमुखडां जूवे रे निहाल ॥ रे जि० ॥ कृष्णजीयें प्रभुजीने पूछियुं ॥ जि० ॥ मुज श्रम चड्यो रे अपार ॥ रे जि० ॥ ५ ॥ प्रभुजी कहे श्रम उतर्यो ॥ जि० ॥ तमें कारज कर्युं मनोहार ॥ रे जि० ॥ सातमीनी त्रीजी करी ॥ जि० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तमें समकित नमो निर्धार ॥ रेजि० ॥ ६ ॥ रोम रोम हर्षित हुआ ॥ जि० ॥ प्रभु तार तार मुऊ तार ॥ रेजि० ॥ न्यायसागर प्रभु नीरखतां ॥ जि० ॥ तमे जय जय नणो नर नार ॥ रेजि० ॥ ७ ॥ इति ॥ ३८ ॥

॥ अथ गहूंली उगणचालीशमी ॥

॥ आर्यदेश नरजव लह्यो रे, श्रावक कुल मनोहार रे ॥ जिननी वाणी नित्य सुणे रे, धन्य तेहनो अव तार ॥ गुरुने बोलडीये, मोह्या मोह्या रे त्रिनुवन लोक ॥ गुरुने बोलडीये ॥ १ ॥ उठी सवारें प्रभु नमे रे, करे नवकारसी सार रे ॥ शोल शणगार सजी करीने, आवे गुरु दरबार ॥ गु० ॥ २ ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ करीने, वांदी बेसे ठाय रे ॥ उठ हाथ अलगी रहि नें, गहूंली पूरवा जाय ॥ गु० ॥ ३ ॥ चिहुंगति डुःख निवारवा रे, माहामंगल उच्चार रे ॥ आठ मंगल मांहे वडो ने, साथीयो कीजें उदार ॥ गु० ॥ ४ ॥ व धावे गुरुरायने रे, पठे करे पच्चरकाण रे ॥ लूठणीयां लटके करे ने, नाव नलो मन आण ॥ गु० ॥ ५ ॥ आगम अर्थने धारती रे, करती विनय विशेष रे ॥ एम आतमने तारती रे, सौनाग्यलक्ष्मी सुविशेष ॥ ॥ गु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ३९ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ गहूंली चालीशमी ॥

॥ रूडी रे राजगृही उद्यानें, पंचसया मुनिमान हो ॥स्वामि॥ आवीया गुरु गोयम स्वामी ॥ वनपालें जई राय वधाव्या, हर्ष वधामणी लाया हो ॥ स्वा० ॥ ॥ आ० ॥ १ ॥ आव्या वीरतणा आदेशी, कइयें केवा केशी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ श्रेणिक अंतेउर सहु तेडी, जीत नगारां गेडी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ॥ २ ॥ चेडा रायतणी तस बेटी, चेलणा गुणमणि पेटी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ श्रेणिक रायतणि पटराणी, वीरें आप वखाणी हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ३ ॥ साथीयडो कीधो लटकालो, मंगल रंग रसाल हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ललि ललि गुरुजीने लूछणां करती, कीर्त्तिनां दानज देती हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ देश ना सांजली आनंद पामी, धर्म यथोचित राख्यो हो ॥ स्वा०॥आ०॥ उपकारी गुरुना गुण गाती, समकित रतनने चहाती हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ श्रीपाल तणीपरें तरसे, शिव रमणी सुख वरसे हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ जे कोई गहूंली एणी परें करशें, मुक्ति तणां सुख वरशे हो ॥ स्वा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ इति ॥ ४० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ गहूंली एकतालीशमी ॥

॥ सोहम स्वामी परंपरा ॥ सुखकारी रे साहेब जी ॥ मुनिगुणरत्न भंडार रे ॥ वालो मारो एही रे साहेब जी ॥ सूरि बत्रिश गुणे शोभता ॥ सु० ॥ धरता माहा व्रत सार रे ॥ वालो० ॥ १ ॥ पंचेंद्रिय संवरपणे ॥ सु० ॥ नवविध ब्रह्मचर्य धार रे ॥ वा० ॥ पंचाचारज पाल ता ॥ सु० ॥ टाले क्रोधादिक चार रे ॥ वा० ॥ २ ॥ समिति गुप्ति निजशुद्धता ॥ सु० ॥ षटकायिक प्रति पाल रे ॥ वा० ॥ एहवा गुरुपद सेवीयें ॥ सु० ॥ पामी यें मंगलमाल रे ॥ वा० ॥ ३ ॥ विहार करंता आवी या ॥ सु० ॥ मुंबई बंदर मझार रे ॥ वा० ॥ संघ सक ल अति भावशुं ॥ सु० ॥ सेवा करे नर नार रे ॥ वा० ॥ ४ ॥ अचल गच्छपति दीपता ॥ सु० ॥ रत्नसागर सूरिराय रे ॥ वा० ॥ प्रेमचंद कहे प्रणमतां ॥ सु० ॥ संघने कल्याण थाय रे ॥ वा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ४१ ॥

॥ अथ गहूंली बहेंतालीशमी ॥

॥ आवो हरि लासरिया वाला ॥ ए देशी ॥

॥ चालो सखि वंदनने जइयें, वंदीने पावन तो थइयें ॥ चालो० ॥ ए आंकणी ॥ माता त्रिशलाना जाया, धर्म धुरंधर कहेवाया, गुणशील वनमांहे आया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ चालो० ॥ १ ॥ शोजा शी वरणवुं बहेनी, त्रिजुवन मां कीर्त्ति जेहनी, बलिहारी जाउं हुं एहनी ॥ ॥ चालो० ॥ २ ॥ ठाजे केवल ठकुराइ, सादि अनंत गुण पाइ, गणधर आगममां गाइ ॥ चालो० ॥ ३ ॥ सुरकोडी सेवा करता, उंगणीश अतिशय अनुसरता, जावें जवसायर तरता ॥ चालो० ॥ ४ ॥ चौद हजार मुनि संगें, धारक चरण करण रंगें, शील सन्नाह ध स्यां अंगें ॥ चालो० ॥ ५ ॥ श्रेणिक चेलणा सहु आवे, मुक्ताफल जरीने लावे, मंगल आठ करी गावे ॥ चालो० ॥ ६ ॥ गातां दुःख दोहग जांजे, मंगल महिमंगल काजे, इम कह्यो दीप कविराजे ॥ चालो० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४२ ॥

॥ अथ गहूंली त्रेंतालीशमी ॥

॥ वाडीना जमरा, द्राख मिठी रे चांपानेरनी॥ए देशी॥

॥ जीरे कामनी कहे सुणो कंथ जी, जीरे फलिया मनोरथ आज रे ॥ नणदीना वीरा गण ,र आव्या ठे चालो वांदवा॥ जीरे जवोदधि पार उतारवा, जीरे तारण तरण जहाज रे ॥ न० ॥ १ ॥ जीरे गुणशैल्य चैत्य समोसस्या, जीरे वीरतणा ठे पटोधार रे ॥ न०॥ जीरे पांचशें मुनि परिवार ठे, जीरे तीरथना अवता

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

र रे ॥ न० ॥ २ ॥ जीरे कंचन कामिनी परिहस्या, जीरे पगव्या छे गुण वीतराग रे ॥ न० ॥ जीरे परिस हनी फोजने जीतवा, जीरे कर धरी उपशम खड्ग रे ॥ न० ॥ ३ ॥ जीरे प्रवचन माताने पालता, जीरे समि ति गुप्ति धरनार रे ॥ न० ॥ जीरे मेरुगिरि सम मो टका, जीरे पंचमहाव्रत भार रे ॥ न० ॥ ४ ॥ जीरे सुरपति नरपति जेहने, जीरे दोय कर जोडी हजूर रे ॥ न० ॥ जीरे अमृतसमी गुरुनी देशना, जीरे पाप पमुल होये दूर रे ॥ न० ॥ ५ ॥ जीरे कामिनी वयण रे मीठडां, जीरे वांद्या छे गुरु गणधार रे ॥ न० ॥ जीरे गुरुमुखथी सुणी देशणा, जीरे आनंद अंग अ पार रे ॥न०॥६॥ जीरे मुक्ता ने रयणें वधावती, जीरे गहूंली चित्त रसाल रे ॥ न० ॥ जीरे निजभव सुकृत संभारती, जीरे जेहना छे भाव विशाल रे ॥ न० ॥७॥ जीरे दीपविजय कविराज जी, जीरे पृथ्वीनंदन ब लिहार रे ॥ न० ॥ जीरे गौतम गणधर पूज्यजी, जी रे वीरशासन शणगार रे ॥ न० ॥ ८ ॥ इति ॥४३ ॥

॥ अथ गहूंली चुम्मालीशमी ॥

॥ प्रभुजी वीरजिणंदने वंदीयें ॥ ए देशी ॥

॥ सुरिजन विचरंता वसुधा तलें, राजगृही उद्यान

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन सुर नर कोडीशुं परवर्या, ज्ञातनंदन जगवान हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन, शासन नायक वंदीयें ॥ १ ॥ ए आंक णी ॥ सुरिजन तेजे तरणि परें जींपता, समतायें शारद चंद हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन गोपथकी शुंजामनें, थिरतायें मेरु गिरिंद हे, अलबेली हेली ॥ सु० ॥ शा० ॥ २ ॥ सुरिजन योगासन धारी घ णा, शमताधर मुनिसंग हे, अलबेली हेली ॥ सुरि जन ज्ञान गजें कोइ गाजता, राजता ध्यान तुरंग हे, अलबेली हेली ॥ सु० ॥ शा० ॥ ३ ॥ सुरिजन प्रातिहार्य वर आठशुं, सेवित सुरसुलतान हे, अल बेली हेली ॥ सुरिजन गुणशील चैत्यमां नविकनें, दे उपदेशनुं दान हे, अलबेली हेली ॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ४ ॥ सुरिजन नंदावती नंदोत्तरा, शोल सजी शणगार हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन कुंकुम अक्षत फल लइ, श्रेणिकनी घर नारी हे, अलबेली हेली ॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ५ ॥ सुरिजन सुंदरी पूरे साथीयो, प्रणमी वधावे जिणंद हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन अरिहा मुख अवलोकीने, पामे परमा नंद हे, अलबेली हेली ॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ६ ॥ सु

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रिजन कीजे उंची एम साचवी, शासन जक्ति विशा
ल हे, अलबेली हेली ॥ सुरिजन प्रजुनी वाणी अमृत
समी अहे, रंगें सुणीयें रसाल हे, अलबेली हेली
॥ सुरि० ॥ शा० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४४ ॥

॥ अथ गहूंली पीस्तालीशमी ॥

॥सुण गोवालणी, गोरसडावाली रे उन्नी रहेने ए देशी॥

॥ सुण साहेली, जंगम तीरथ जोवा उन्नी रहेने ॥
मुनि मुख जोतां, मन उलसे तन विकसे आपण बे
ने ॥ ए आंकणी ठे ॥ थावर तीरथ दुर्गति वारे, पण
घर मेली जइयें ज्यारे, विधियोगें ध्यान धरे त्यारे,
संसार समुद्रथकी तारे ॥ सुण० ॥ १ ॥ जंगम मुनि
मारगमां फरता, संयम आचरणा आचरता, जगजीव
उपर करुणा धरता, पुण्यशाली घर पावन करता ॥
॥ सुण० ॥ २ ॥ अनाचीरण बावन परिहरता, बोले
दशवैकालिक करता, गणि पेटी बहु श्रुतनी धरता,
मुखचंद्रथकी अमृत झरता ॥ सुण० ॥ ३ ॥ वर ज्ञान
ध्यान हय गय वरिया, तप जप चरणादिक परिकि
रिया, विरति पटराणीशुं ठरीया, मुनिराज सवाइ
केशरीया ॥ सुण० ॥ ४ ॥ सुविहित गीतारथ गुरु
आगें, विधियोगें वंदे गुणरागें, कर कंकण पग झां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जर वागे, गहूंली करतां अनुजव जागे ॥ सुण० ॥५॥ कुंकावटीयें केशर लेती, करी स्वस्तिक पातकडां घो ती, वधावती उज्ज्वल मोती, वलती ललती गुरुमुख जोती ॥ सुण० ॥ ६ ॥ कलकंठवती मधुरा गावे, गुण वंती तिहां गहूंली गावे, आ जव सौजाग्यपणुं पावे, शुजवीर वचन हैयडे जावे ॥ सुण० ॥७॥ इति ॥४५॥

॥ अथ अगीयार गणधरनी गहूंली बेंतालीशमी ॥

॥ जनक रायने रे मांकवे ॥ ए देशी ॥

॥ पहेलो गोयम गणधरु, इंद्रजूति जेहनुं बे नाम ॥ अग्निजूति वखाणीयें, बीजो प्रजुगुण धाम ॥ गणधर शोजा हुं शी कहुं ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ वायुजूति त्री जा वजीर बे, गौतमगोत्र जगवंत ॥ चोथा व्यक्तजी जाणीयें, कीधा जवना रे अंत ॥ गण० ॥ २॥ स्वामी सुधर्मा बे पांचमा, मंमित बठा गणधार ॥ मोरिय पुत्र बे सातमा, सहु ए जगना आधार ॥ गण० ॥ ३ ॥ अकंपितजी बे रे आठमा, अचलजी नवमा रे जाण ॥ मेतारय जग पूज्य जी, गणपति दशमो वखाण ॥ गण० ॥ ४ ॥ स्वामी प्रजासजी वंदीयें, एकादश मा गणधार ॥ गणधर गन्नपति गणपति, तीरथ ना अवतार, द्वादशांगी धरनार, सहु मुनिना

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

शिरदार, पाम्या नवनो रे पार, नामें जय जयकार, वंदो वार हजार ॥ गण० ॥ ५ ॥ आणा लेइ प्रनु वीरनी, सहुजनने सुखदाय ॥ गुणशीला चैत्य पधारीया, श्रेणिकवंदन आय ॥ अमृतवाणी सवाय, निसुणी हर्ष न माय, सुणतां मनडां लोनाय ॥ गण० ॥ ६ ॥ चेलणा पूरे रे गहूंअली, सहीयर गावे बे गीत ॥ दीपविजय कवि राजनी, ए जिनशासन रीत ॥ गण० ॥ ७ ॥ इति ॥ ४६ ॥

॥ अथ गहूंली सुडतालीशमी ॥

॥ गछ राया रे ॥ ए देशी ॥

॥ चित्त समरुं सरसति माय रे, वली वंदूं सद्गुरु पाय रे, हुंतो गाइश तपगछ राय रे ॥ गछ राया रे ॥ १ ॥ बत्रीश गुणें गुरु राजे रे, गौतम गणधर पट बाजे रे, गुरु पंचाचार दीवाजे रे ॥ ग० ॥ २ ॥ गुरु सारण वारण दाता रे, जिनराज सदा मन ध्याता रे, गुरु संयम धर्ममें राता रे ॥ ग० ॥ ३ ॥ गुरु पंच महाव्रत पाले रे, गुरु आतम तत्त्व संनाले रे, गुरु जिनशासन अजुआले रे ॥ ग० ॥ ४ ॥ जेणे ज्ञाननी दृष्टि निहाली रे, गुरु देशना दे लटकाली रे, गुरु प्रतपे कोडि दीवाली रे ॥ ग० ॥ ५ ॥ गुरु मधुरे वचनें

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वरसे रे, भव्य जीव तणा मन हरसे रे, गुरु गुण सु णवा मन तरसे रे ॥ ग० ॥ ६ ॥ करो गहूंली गछपति आगे रे, वधावो गुरु महाभागे रे, गाउं मंगल मधुरें रागें रे ॥ ग० ॥ ७ ॥ गुरु धन्य आणंदि बाइ जाया रे, साहेब राजकुलमां सवाया रे, श्री विजयलक्ष्मी सूरिराया रे ॥ ग० ॥ ८ ॥ गुरु प्रेम पदारथ पाया रे, जेणे धर्मना पंथ बताया रे, एम दीपविजय गुण गा या रे ॥ ग० ॥ ए ॥ इति ॥ ४७ ॥

अथ केशीकुमारनी गहूंली अडतालीशमी ॥

॥ जीरे वर वरघोडे संचर्यो, जीरे बिहुं पासें चमर वींजाय ॥ जीया वरनी घोडली ॥ ए देशी ॥

॥ जीरे कुंकुम छडो देवरावीयें, जीरे मोतीना चोक पूरावो ॥ वधाइ वधाइ छे ॥ जीरे घर घर गूडी रे सज करो, जीरे सोहागण मंगल गावो ॥ वधाइ व धाइ छे ॥ १ ॥ जीरे आज वधाईना कोड छे, जीरे सेतंबी नयरी मझार ॥ वधा० ॥ जीरे पास प्रभुजी ना पटधरु, जीरे आव्या छे केशी कुमार ॥ वधा० ॥ ॥ २ ॥ जीरे पांचशें मुनि परीवार छे, जीरे जीवद या प्रतिपाल ॥ वधा० ॥ जीरे दुक्कर परिसह क्षीप ता, जीरे जगजसकार प्रनाल ॥ वधा० ॥ ३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जीरे छंड्या छे मोह संसारना, जीरे व्रतधारी संयम धार ॥ वधा० ॥ जीरे चरण करणनी सित्तरी, जीरे सेवा लहे जव तार ॥ वधा० ॥ ४ ॥ जीरे तपीया छे केइ मुनिराज जी, जीरे त्यागी छे केइ मुनिराज ॥ वधा० ॥ जीरे मुनि गुणगाणे वरतता, जीरे शिववधू वरवाने काज ॥ वधा० ॥ ५ ॥ जीरे नृप परदेशी रे हरखियो, जीरे पहोता छे वंदन काज ॥ वधा० ॥ जीरे गुरु उपकार संभारतो, जीरे पूज्य छे गरीबनि वाज ॥ वधा० ॥६॥ जीरे नृपपटराणी गहूंअली, जीरे पूरे छे पूज्यहजूर ॥ वधा० ॥ जीरे दीपविजय कविराजने, जीरे वंदो उगमते सूर ॥ वधा० ॥७॥ इति॥४०॥

॥अथ गहूंली उंगणपच्चासमां॥देशी उपरनी गहूंलीनी ॥ जीरे सूर उगमती गहूंअली, जीरे गुरु आगल श्री कार ॥ मनोहर गहूंअली ॥ जीरे सहीरे समाणी संचरी, जीरे पूठें बहु परिवार ॥ म० ॥ १ ॥ जीरे चालो रे सहीयो उतावली, जीरे हैयडे हर्ष न माय ॥ म० ॥ जीरे समकेतने अजुवालवा, जीरे वंदीयें श्री गुरुराय ॥ म० ॥ २ ॥ जीरे सरखा सरखी सुंदरी, जीरे टोले मली गह घाट ॥ म० ॥ जीरे आगा शालु उंढणी, जीरे उपर नवरंग घाट ॥ म० ॥ ३ ॥ जीरे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नावे सहगुरु नेटवा, जीरे सहु मलीने साथ ॥म०॥ जीरे उलटें आव्या अप्या सहि, जीरे सोवनथाली हाथ ॥ म० ॥ ४ ॥ जीरे हीरे जडित कुंकावटी, जीरे मांहे कपूर बरास ॥ म० ॥ जीरे मांहे मृगमद महमहे, जीरे केसर चंदन खास ॥ म० ॥ ५ ॥ जीरे चतुरा चाली चमकती, जीरे ठमकेशुं ठवती पाय ॥ म० ॥ जीरे चरणे नेउर रणझणे, जीरे मा निनी मानें गाय ॥ म० ॥ ६ ॥ जीरे पाये वींटूआ वाजणां, जीरे झांजरना रमजोल ॥ म० ॥ जीरे प्रे मेशुं गहूंअली करी, जीरें नवखंडी रंगरोल ॥ म० ॥ ॥ ७ ॥ जीरे पूरी सोहागण साथीयो, जीरे मोतीडे मनरंग ॥ म० ॥ जीरे जुंगल नेरी जणहणे, जीरे वाजे ढोल मृदंग ॥ म० ॥ ८ ॥ जीरे त्रण खमा समण देइने, जीरे वंदे सहु नर नार ॥ म० ॥ जीरे संघ मल्यो सहु सामटो, जीरे उत्सवनो नहिं पार ॥ म० ॥ ए ॥ जीरे सहगुरु दीये तिहां देशना, जीरे वांची सूत्रविचार ॥ म० ॥ जीरे जलधरनी पेरें गाजता, जीरे वरसता अमृतधार ॥ म० ॥ १० ॥ जीरे मीठी रे मीठी मीठडी, जीरे मीठी साकर डाख ॥ म० ॥ जीरे तेहथकी पण मीठडी, जीरे मीठी म

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हारा गुरुजीनी जाख ॥ म० ॥ ११ ॥ जीरे एकचित्ते जे सांजले, जीरे पामे ते जवपार ॥ म० ॥ जीरे नित्य नित्य रंग वधामणां, जीरे सुख पामे संसार ॥ म० ॥ ॥ १२ ॥ जीरे हीररतन सूरि राजीया, जीरे तपगछ केरा राउ ॥ म० ॥ जीरे अमे अमारा गुरुजीने गाय शुं, जीरे न गमे ते उठीने जाउं ॥ म० ॥ १३ ॥ जीरे दानशीयल तप जावना, जीरे जे सुणे ए जिनवाणी ॥ म० ॥ जीरे उदयरतन मुनि एम कहे, जीरे ते लहे कोडि कल्याण ॥ म० ॥ १४ ॥ इति गहूंली ॥ ४ए ॥

॥ अथ गहूंली पच्चासमी ॥ गरबानी देशी ॥

॥ बेनी राजगृही उद्यान के, वीर प्रजु आवीया रे लोल ॥ बेनी समवसरण मंमाण, रचे सुरवर तिहां रे लोल ॥ बेनी चार निकायना देव, मली तिहां आ विया रे लोल ॥ बेनी परखदा बेठी बार, सुणे प्रजुं देशना रे लोल ॥ १ ॥ बेनी सोहम गणधर मुनि राय के, नर नारी मली रे लोल ॥ बेनी चौद सहस परिवार के, आवी परवर्या रे लोल ॥ बेनी श्रेणिक राय प्रमुख, वंदन मन जावियां रे लोल ॥ बेनी रा णी चेलणा नार, जरि थाल वधावीया रे लोल ॥ २ ॥ बेनी गुरुमुख जोती सार के, मनमां गह गहे रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लोल ॥ बेनी सहियरो मली मंगल गाय के, वाजे डुंदुभि रे लोल ॥ बेनी समकित धरती सार के, प्रभु गुण आलवे रे लोल ॥ बेनी सूत्र सुणे मनभाव के, अरथने धारती रे लोल ॥ ३ ॥ बेनी प्रभुवंदन सुपसाय के, चिहुं गति चूरती रे लोल ॥ बेनी सोहम गणधर पाट, परंपर शोभती रे लोल ॥ बेनी चंद्रोदयरत्न गणधार के, लवणपुर राजता रे लोल ॥ बेनी चउविध संघ सुपसाय के, मांहे गाजता रे लोल ॥ ४ ॥ बेनी धर्मोपदेश सुणाय, मिथ्यात्वनें वारता रे लोल ॥ बेनी शांतिचरित्र कहेवाय के, भविने तारता रे लोल ॥ बेनी गहूंली करती जोय के, ललि ललि लूछणां रे लोल ॥ बेनी सामायिक पोसह समुदाय, करे वली पूछणां रे लोल ॥ ५ ॥ बेनी स्थानक तप आराधे, मन अति भावशुं रे लोल ॥ बेनी वली रोहणी तप अति भाव के, पाले प्रेमशुं रे लोल ॥ बेनी समेतशिखर गिरि भेटण, अलजो छे घणुं रे लोल ॥ बेनी पुण्य पसायें तेह, मनोरथ सवि फल्या रे लोल ॥ ६ ॥ बेनी संवत उंगणीशें वीशमां, कारज साधीयां रे लोल ॥ बेनी चैत्र शुदि तेरशने, भोमे वांदीया रे लोल ॥ बेनी कहे क

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वियण कर जोड, करी एक वीनति रे लोल ॥ बेनी चंद्रोदयरत्नसूरिंदने, नित्य नित्य वंदती रे लोल ॥७॥

॥ अथ गहूंली एकावनमी ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ बेनी गुरु गच्छपति गुरुराज के, गौतम जाणीयें रे ॥ लो० ॥ बेनी मुनि मंगल महाराज के, मनघर आणीयें रे ॥ लो० ॥ १ ॥ बेनी शासनना सुलतान, वजीर श्री वीरना रे ॥ लो० ॥ बेनी लब्धिवंत निधान, के श्रीगुण हीरना रे ॥ लो० ॥ २ ॥ बेनी मगधदेश मझार के, गोवरगाम छे रे ॥ लो० ॥ बेनी वसुभूति पृथिवी नार के, माता नाम छे रे ॥ लो० ॥ ३ ॥ बेनी सोवनवान समान, शरीर सकोमलां रे ॥ लो० ॥ बेनी लोचन युगल प्रधान के, कर क्रम कोमला रे ॥ लो० ॥ ४ ॥ बेनी ज्ञान रयण जंझार, सिद्धांतना सागरु रे ॥ लो० ॥ बेनी माहाव्रत जस मनोहार, महिमा गुणआगरू रे ॥ लो० ॥ ५ ॥ बेनी नहीं प्रतिबंध विहार, नहीं ईहा कशी रे ॥ लो० ॥ बेनी सकल जंतु हितकार, दया जस मन वसी रे ॥ लो० ॥ ६ ॥ बेनी नयरी चंपा उपवन्न के, पूज्य पधारीया रे ॥ लो० ॥ बेनी श्रेणिकसुत धनधन्य के, वंदन पधारिया रे ॥ लो० ॥ ७ ॥ बेनी देशना दीये गुरु राय, ज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विक प्रतिबोधता रे ॥ लो० ॥ बेनी प्रह उठी प्रणमुं पाय, समिति पंच शोधता रे ॥ लो० ॥ ८ ॥ बेनी को णिक नृपति नार के, गहूंली लावती रे ॥ लो० ॥ बेनी स्वस्तिक पूरति खास के, मोतीये वधावती रे ॥ लो० ॥ ए ॥ बेनी कामिनी कोकिलवाणि के, गुरुगुण गाव ती रे ॥ लो० ॥ बेनी सौभाग्य लक्ष्मी सुखखाण के, सदा सुख पावती रे ॥ लो० ॥ बेनी गुरु गछपति गुरु राज के, गौतम जाणीयें रे ॥ लो० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली बावनमी ॥

॥ गरबानी देशी ॥ बेनी अपापा नयरी उद्यान के, वा जां वागियां रे लोल ॥ बेनी देववाजिंत्र अनेक के, घ नाघन गाजीयां रे लोल॥१॥ बेनी इंद्रजूल्यादि अग्यार के, ब्राह्मण दीपता रे लोल ॥ बेनी वेदवादना जाण के, बहु वाद ऊंपता रे लोल ॥ २ ॥ बेनी संशय ठे अति गूढ, मिथ्यामति पूरिया रे लोल ॥ बेनी श्रीजिन अ मृत वाणी के, सुणि सुख पामीया रे लोल ॥३॥ बेनी ठांमी सकल जंजाल के, हुवा व्रत जाविया रे लोल ॥ बेनी इंद्र सजानो थाल, केवा जश आवियारे लोल ॥ ४ ॥ बेनी अरिहा ए आचार के, तीरथ स्थापिया रे लोल ॥ बेनी लावो गहूंली गेल के, हरखें वधा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विया रे लोल ॥ ५ ॥ बेनी वधावो श्री जिनराज, करो नित्य जामणां रे लोल ॥ बेनी गाउं मंगल गीत के, लीजें वारणां रे लोल ॥ ६ ॥ बेनी बांधो तोरण बार के, सुरतरु मालिका रे लोल ॥ बेनी गाउं मंगलगीत के, मली बहु बालिका रे लोल ॥ ७ ॥ बेनी गौतम केवलज्ञान के, सोहम गछधणी रे लोल ॥ बेनी आपी जंबूने पाट के, पहोता शिवमणि रे लोल ॥ ८ ॥ बेनी करतां एहनुं ध्यान के, लहीयें जश घणा रे लोल ॥ बेनी विबुध कहे श्रीवीरने, सहु जय जय जणो रे लोल ॥ ए ॥ इति ॥ ५२ ॥

अथ गहूंली त्रेपनमी ॥

॥ मुनि पंचम गणधर वीरना रे॥ मुनि वंदीयें ॥साथे पांचशें मुनि गुणधाम रे ॥ गुरु वंदीयें ॥ राजगृही उद्यानमां रे ॥ मु० ॥ गुरु समवसर्या शुभ ठाम रे ॥ गु० ॥ १ ॥ पंच माहाव्रत पालता रे ॥ मु० ॥ दश विध संयतिनो धर्म रे ॥ गु० ॥ संयम सत्तर प्रकारथी रे ॥ मु० ॥ लही पाले तेहनो मर्म रे ॥ गु० ॥ ॥ २ ॥ दश प्रकार विनय जलो रे ॥ मु० ॥ ब्रह्मचर्य नववाडें युत्त रे ॥ गु० ॥ रत्नत्रयि आराधता रे ॥ मु०॥ बार जेदें तपमां रत्त रे ॥ गु० ॥ ३ ॥ क्रोध मान माया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

लोजने रे ॥ मु० ॥ कींपता करे उग्र विहार रे ॥ गु० ॥ चरणसित्तरी पालता रे ॥ मु० ॥ तिम करणसित्तरी सार रे ॥ गु० ॥ ४ ॥ वंदनहेतें आविया रे ॥ मु० ॥ राय श्रेणिक बहु परिवार रे ॥ गु० ॥ चेलणा लावे ग हूंअली रे ॥ मु० ॥ घाट शील पहेरी मनोहार रे ॥ गु० ॥ ५ ॥ आजूषण सत्यवचननां रे ॥ मु० ॥ करे स्व स्तिक विनय प्रधान रे ॥ गु० ॥ श्रद्धा अक्षत थापती रे ॥ मु० ॥ करे लूबणां सुप्रणीधान रे ॥ गु० ॥ ६ ॥ देशना सांजले हर्षशुं रे ॥ मु० ॥ कहे धन धन तुम गुरुज्ञान रे ॥ गु० ॥ उत्तम गुरुपद पद्मनी रे ॥ मु० ॥ सेवा करतां लहे शिवठाण रे ॥ गु० ॥ ७ ॥ ५३ ॥

॥ अथ गुरु आगल गहूंली चोपनमी ॥

॥ तमें पीतांबर पेर्ह्यां जी, मुखने मरकलडे॥ए देशी॥ ॥ चेलणा लावे गहूंली ॥ गुरु ए रूडा ॥ श्रेणिक नृप घरनार ॥ सजनी ए रूडा ॥ सोहम स्वामी समोस र्ह्या ॥ गु० ॥ प्रजु पंचम गणधार ॥ स० ॥ १ ॥ ठ त्रीश ठत्रीशी गुणें ॥ गु० ॥ शोजित पुण्य पवित्त ॥ स० ॥ आगमवयण सुधारसें ॥ गु० ॥ वरशी ठारे चित्त ॥ स० ॥ २ ॥ पडिरूवादिक चौद ठे ॥ गु० ॥ खांत्यादिक दश धर्म ॥ स० ॥ बारह जावना जाविया

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ गु० ॥ एह छत्रीशी मर्म ॥ स० ॥ ३ ॥ दंसण नाण चरण तणा ॥ गु० ॥ तप आचारें युक्त ॥ स० ॥ क्रोधा दिक चहुं परिहरे ॥ गु० ॥ पंचेंद्रिय त्याग प्रयुक्त ॥ स० ॥ ४ ॥ नवविध तत्त्वनी देशना ॥ गु० ॥ नव कल्पी उग्र विहार ॥ स० ॥ नव नीयाणां परहस्यां ॥ गु० ॥ नव वाडे व्रत धार ॥ स० ॥ ५ ॥ आतम बाजोठ उपरें ॥ गु० ॥ समकेत साथियो पूर ॥ स० ॥ मूल उ त्तरगुण गहूंअली ॥ गु० ॥ उपशम अक्षत नूर ॥ स० ॥ ६ ॥ कोकिल कंठे कामिनी ॥ गु० ॥ सोहव गावे गीत ॥ स० ॥ माणक मोती लूछणां ॥ गु० ॥ श्री जि नशासन रीत ॥ स० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५४ ॥

॥ अथ समवसरणनी गहूंली पंच्चावनमी ॥

॥ श्रावण वरसे रे स्वामी ॥ ए देशी ॥

॥ सांभल सजनी रे महारी, समवसरणनी शोभा सारी ॥ प्रथम गढ रूपानो राजे, सोवन कोसीसां तस छाजे ॥ सांभल० ॥ १ ॥ बीजो कंचननो गढ निरखो, रत्न कोसीसां जोइ जोइ हरखो ॥ त्रीजो रत्न तणो ग ढ सोहे, मणि कोसीसें मनडुं मोहे ॥ सां० ॥ २ ॥ जुगतें सुरवर रे जडीयां, वीश हजार जेहनां पावडी यां ॥ मध्यें रत्न पीठ मनोहार, जडित सिंहासन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सोहे अपार ॥ सां० ॥ ३ ॥ तखतें राजे श्रीवर्द्धमान, जाणे अभिनव उदयो भाण ॥ देव दुंदुभि नादें गाजे, वाजित्र कोडि गमे तिहां वाजे ॥ सां० ॥ ४ ॥ सुगंध पाणी परिमल पूर, वरसे पंच वरणनां फूल ॥ जाणे वसंत ऋतु बहु फूली, भ्रमरा कुसुम कुसुम रह्या फूली ॥ सां० ॥ ५ ॥ थै थै नाचे सुरवधू बाला, गावे गीत सुकंठ रसाला ॥ चिहुं दिशि चामर रे ढलके, मणिमुक्ताफल तोरण झलके ॥ सां० ॥ ६ ॥ शिरपर छत्र अनोपम सार, पुठें भामंडल तेज अपार ॥ बेठी पर्षदा रे बार, वाणी वरसे जिम जलधार ॥ सां० ॥ ७ ॥ राजा श्रेणिकनी राणी, नामे चेलणा गुणनी खाणी ॥ कुमकुम चंदन रे घोली, करती गहूंली भामिनि, भोली ॥ सां० ॥ ८ ॥ ललि ललि नमती रे जावें, मुक्ताफलशुं वीरने वधावे ॥ हसि हसि जिनमुख रे जोती, जाणे भवदुःखडांने खोती ॥ सां० ॥९॥ एणी परें जे कोइ गहूंली करशे, पुण्य पनोती भवजल तरशे ॥ कीर्त्ति गुरुनी रे गावो, माणक शिव सुख वेगें पावो ॥ सां० ॥ १० ॥ इति ॥ ५५ ॥

॥ अथ गहूंली छप्पनमी ॥

॥ वर अतिशय कंचन वाने, राजगृही नयरी उद्या

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ने हो ॥ धन धन मुनिराया ॥ आवीया गुरु गौतम स्वामी, सुर असुर नमे शिर नामी हो ॥ धन० ॥ १ ॥ ज्ञानादिक गुण मणि नरीया, उपशम रस केरा दरीया हो ॥ धन० ॥ मुनि पंचसया परिवारें, जे आप तर्या पर तारे हो ॥ धन० ॥ २ ॥ आव्या जाणी चउनाणी, श्रेणिक नरपति पटराणी हो ॥ धन० ॥ चेलणा नामें गुण पेटी, चेटक माहाराजनी बेटी हो ॥ धन० ॥ ३ ॥ आवे गणधर वांदवा, गुरू समकेत लाज लहेवा हो ॥ धन० ॥ करे स्तुति नित्य कर जोडी, दुर्दम मद आठने मोडी हो ॥ धन० ॥ ४ ॥ करे कुंकुम स्वस्तिक मोती, वधावे पुण्य पनोती हो ॥ धन० ॥ करे लुछणां गुरुमुख निरखी, हैयडामांहे घणुं हरखी हो ॥ धन० ॥ ५ ॥ निसुणी सद्गुरुनी वाणी, मीठी जे अमिय समाणी हो ॥ धन० ॥ करे निर्मल समकित करणी, घरे पहोती समकित घरणी हो ॥ धन० ॥ ६ ॥ एम शासन सोह वधारो, करो भवियण सफल जमारो हो ॥ धन० ॥ ध्यावो अविनाशी धाम, जलसे निज आतम राम ॥ हो ॥ धन० ॥ ७ ॥ इति ॥ ५६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ गहूंली सत्तावनमी ॥

॥ नदी युमनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी॥

॥ चंपानयरी उद्यानमां, गणधर आवीया ॥ नामे सोहम स्वामी, नविकमन नाविया ॥ विषय प्रमाद कषाय, हास्यादिक तजी ॥ रमता आतमराम के, निजपरीणति नजी ॥ १ ॥ नीरागी नगवान, करे गुण देशना ॥ उपकारी असमान के, तारे नविजना ॥ सु णवा जिनवर वाण, तिहां आव्या सहु ॥ नर नारी ना थोक के, हर्ष मनें बहु ॥ २ ॥ वसन आनूषण व्रत, तणा अंगें धरे ॥ कोणिक नूपति नार, हवे गहूं ली करे ॥ समिति गुप्ति सहियरनी, साथें आवती ॥ आत्म असंख्य प्रदेश, रकेबी लावती ॥३॥ अरूाकुंकु म घोली, स्वस्तिक करे नावथी॥ आतम पीठनी उपर, जिनगुण गावती ॥ विनयवती बहुमानथी, इम गहूं ली कर, अनुनवनां करि बुढणां, आणा तिलक धरे ॥ ४ ॥ द्रव्यनावथी एणी परें, जे गहूंली करे ॥ सम कितवंती श्राविका, नव सायर तरे ॥ मणि उद्योत गुरुराजना, गुण सखी मन धरो ॥ पामी मनुज अव तार के, शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति ॥ ५७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ गहूंली अठावनमी ॥

॥ चरण करणगुण आगरु रे ॥ गणधर ॥ गिरुआ गौतम स्वाम ॥ सुहावो गहूंली रे ॥ सुरगुरु सुरतरु सुरमणि रें ॥ गणधर ॥ प्रगटे जेहने नाम ॥ सु० ॥ १ ॥ नयरी विशाला उद्यानमां रे ॥ गणधर ॥ वर्द्धमान वड शि ष्य ॥ सु० ॥ चौद सहस्र अणगारमां रे ॥ ग० ॥ ति लक समान जगीश ॥ सु० ॥ २ ॥ सुररचित कज उ परें रे ॥ ग० ॥ बेसी वरसे वयण ॥ सु० ॥ कनकाचल चूला चढ्यो रे ॥ ग० ॥ पुष्कर जलधर अयन ॥ सु० ॥ ३ ॥ राणी चेलणा रायनी रे ॥ ग० ॥ झाल झबूके कान ॥ सु० ॥ स्वामी वीरजिणंदनी रे ॥ ग० ॥ च तुरा चंपकवान ॥ सु० ॥ ४ ॥ कुंकुम रयण कचोलडी रे ॥ ग० ॥ रजत रकेबी हाथ ॥ सु० ॥ मुक्ताफलनो साथीयो रे ॥ ग० ॥ सात पांच सखी साथ ॥ सु० ॥ ॥ ५ ॥ पंचाचार उवारणे रे ॥ ग० ॥ वारू पंच रतन ॥ सु० ॥ जिनशासन मुनि दीपतो रे ॥ ग० ॥ कीजें कोडी जतन ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ५८ ॥

॥ अथ गहूंली उंगणशाठमी ॥

॥ आज हजारी ढोलो प्राहुणो ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही रलीयामणी, जिहां गुणशीलचैत्य सुठा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

म ॥ साथण मोरी हे ॥ सहीयर मोरी हे ॥ बेहेनड मोरी हे ॥ आवो सवाइ गुरु भेटवा, कांई मेटवा कर्म कठोर ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ मुनि ग णतारा चंद ज्युं, आव्या गणधर गौतम स्वाम ॥सा० स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ १ ॥ जेह पंचेंद्रिय वश करे, वली पाले पंचा चार ॥ सा० ॥ जेह पंच समिति गुप्ति धोरी परें, वहे पंच महाव्रत भार ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ २ ॥ नव वाडे ब्रह्म धरे सदा, वली प रिहरे चार कषाय ॥ सा० ॥ जे लब्धि अठावीशनो धणी, जयो आल प्राज्ञाविक राय ॥ सा०॥ स०॥बे० ॥ अ० ॥ ३ ॥ पहेरण पीत पटोलडी, उपर उढण नव रंग घाट ॥ सा० ॥ कुंकुम रोल सुसाथीयो, करे अक्षत पूरी सुघाट ॥ सा० ॥स०॥ बे०॥ आ०॥४॥ वली ललि ललि कीजें लुछणां, लेइ रजत कनकनां फूल ॥ सा०॥ करो जिन शासन प्रज्ञावना, वजडावो मंगल तूर ॥ ॥ सा० ॥ स० ॥ बे० ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति ॥ ५ए ॥

॥ अथ गहूंली शाठमी ॥ गरबानी देशीमां ॥

॥ वाला राजगृही उद्यान के, वीर समोसर्या रे लोल के ॥ वाला मलिया चोशठ इंद्र के, बहु परि वारशुं रे लोल के ॥ वा० ॥ १ ॥ वाला वधामणी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

माहाराजनी, श्रेणिक सांजली रे लोल के ॥ वाला श्रेणिक पुर जन लोक के, सौ मली एकठां रे लोल के ॥ वा० ॥ २ ॥ वाला वंदी बेठो भूप के, प्रभुजी आगले रे लोल ॥ वाला चेलणा घूंघट ताणी के, उठी मन गहगही रे लोल के ॥ वा० ॥ ३ ॥ वाला स्वस्ति क पूरी पास, वधावे मन रुली रे लोल के ॥ वाला लु ठणां करे वार वार, सोहागण सहु मली रे लोल के ॥ वा० ॥ ४ ॥ वाला सजी शोले शणगार के, मली घणी बालिका रे लोल के ॥ वाला एणी परें जे जिन आगल, करे नित्त गहूंअली रे लोल ॥ वा० ॥ ५ ॥ वाला जाय सकल जंजाल के, भवोदधि दुःख हरे रे लोल के ॥ वाला कहे गौतम निरधार के, चित्त चोखे करी रे लोल के ॥ वा० ॥ ६ ॥ इति ॥ ६० ॥

॥ अथ पर्यूषणने विषे कल्पसूत्र पधरावनानी गहूंली एकशठमी ॥

॥ जीरे ललित वचननी चातुरी, जीरे चतुर कहे गुरुराज ॥ जीरे सुगुण सनेही सांजलो, जीरे पर्वप र्यूषण आज ॥ जीरे ललित० ॥ १ ॥ जीरे आश्रव भाव निवारीने, जीरे स्वजन सहित बहु मान ॥ जीरे कल्पसूत्र घर लावीयें, जीरे अठाइधर धरी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ध्यान ॥ जीरे ललित० ॥ २ ॥ जीरे दीपक अगर उखेविर्यें, जीरे रात्रि जागरण नित्य ॥ जीरे पूजा विविध रचावीयें, जीरे त्रण दिवस इणि रीत ॥ जीरे ललित० ॥ ३ ॥ जीरे सुण सजनी रजनी गइ, जीरे कल्प धुरा परजात ॥ जीरे सहियर मली मंगल जणे, जीरे हय गय रथ मेलात ॥ जीरे ललित० ॥ ४ ॥ जीरे वरघोडे मली जातशुं, जीरे शुचि तनु पुस्तक हाथ ॥ जीरे इम मंमाणे आवीया, जीरे जिहां श्रुत निधि गुरुनाथ ॥ जीरे ललित० ॥ ५ ॥ जीरे गुरुसन्मुख लही वांचना, जीरे प्रमुदित पर्षदामांह ॥ जीरे इणि अवसर गजगति सती, जीरे मुनिपद नमन उत्साह ॥ जीरे ललित० ॥ ६ ॥ जीरे समकितवंती श्राविका, जीरे सहियर मली समदिठ ॥ जीरे अनुजव उज्ज्वल मोतीयें, जीरे स्वस्तिक लक्षण पीठ ॥ जीरे ललित० ॥ ७ ॥ जीरे स्वस्तिक पूरी वधावती, जीरे बेसती बेसणठाय ॥ जीरे पंच कल्याणक देशना, जीरे नव व्याख्यान सुणाय ॥ जीरे ललित० ॥ ८ ॥ जीरे अठ अठम तप जिन नमी, जीरे सांजलशे नर नारी ॥ जीरे श्री शुजवीरने शासने, जीरे करशे एक अवतार ॥ जीरे ललित० ॥ ए ॥ इति ॥ ६१ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ गहूंली बाशठमी ॥

॥ हाररो हीरो माहारो साहेबो ॥ ए देशी ॥

॥ जगगुरु जगचिंतामणि ॥ सहियर मोरी ॥ जगबंधव जगत्रात हो ॥ द्वारिकां नगरी समोसस्या ॥ सहि०॥ बावीशमा जगतात हो ॥ उलट आणी एतो, लाज ने जाणी एतो, पुण्यनी खाणी, शुद्ध श्राविका ॥ ज वि तमे गहूंली करो मनरंग हो ॥ १ ॥ हरि वांदी नमी करी ॥ सहि० ॥ बेठा बे कर जोडी हो ॥ अमृ तसम जिनदेशना ॥ सहि० ॥ सांजले मनने खोडी हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ॥ २ ॥ श्याम शरीरें शोजता ॥ सहि० ॥ तेज तणो नहिं पार हो ॥ झबक बनी जिनराजनी ॥ सहि० ॥ विश्व मानस हितकार हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ३ ॥ धन्य धन्य राणी रुक्मिणी ॥ सहि० ॥ व्रत भूषण अंग हो ॥ तप सुघाट घूंटी समो ॥ सहि० ॥ चूनडी सु शील सुचंग हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ जवि० ॥ ४ ॥ क्रिया कुंकावटी कर ग्रही ॥ सहि० ॥ जिनगुण कुमकुम घोले हो ॥ मननि र्मल जल जेलती ॥ सहि० ॥ चित्त उल्लसी मनरंग

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रोल हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ५ ॥ समकित बाजोठ उपरें ॥ सहि० ॥ श्रद्धा स्वस्तिक जोर हो ॥ रुचि मुक्ताफल पूरती ॥ सहि० ॥ चूरती कर्म कठोर हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ६ ॥ नाण चिंतामणि स्थापती ॥ सहि० ॥ अनुभव कुसुम सुरंग हो ॥ विनयें करी वधावती ॥ सहि० ॥ झलती जेम सुरंग हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ७ ॥ सम्यगदृष्टि निरखती ॥ सहि० ॥ हरखती हृदय मझार हो ॥ क्षण क्षणमां जिनराजने ॥ सहि० ॥ तृप्ति न पामे लगार हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ८ ॥ द्रव्य भावें करी गहूंअली ॥ सहि० ॥ रुक्मिणी राणी एम हो ॥ तेम करो तमें श्राविका ॥ सहि० ॥ कीर्त्ति पामो जेम हो ॥ उल० ॥ लाज० ॥ पुण्य० ॥ शुद्ध० ॥ नवि० ॥ ए ॥ इति ॥ ६२ ॥

॥ अथ गहूंली त्रेशठमी ॥

॥ हारनो हीरो माहारो ॥ ए देशी ॥ अथवा ॥ साचनो शूरो नृप चंदजी, राजिंद माहारा भाग्यतणे बलिहारी हो ॥ ए देशी ॥ चउनाणी चोखे चित्तें, सहियर मो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

री ॥ श्री शोहम गणधार हो ॥ आप स्वभावमां खे
लता, सहियर मोरी ॥ धरता ध्यान उदार हो ॥ सह
ज सोभगी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, शुभमति जागी
गुरु वांदवा ॥ सहियर मोरी, चालोने हर्ष उल्लास हो
॥ १ ॥ बारे भावना भावतां, सहियर मोरी ॥ अनि
त्यादिक गुणगेह हो ॥ महाव्रत पामीने वली ॥ स
हि० ॥ भावे पणवीश तेह हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥
शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ २ ॥ संज्ञादिक योगें
करी ॥ सहि० ॥ सहस अढार जे थाय हो ॥ तेह
ने शील कहीजियें ॥ सहि० ॥ ते पाले निर्माय हो
॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो०
॥ ३ ॥ समिति गुप्ति सूधी धरे ॥ सहि० ॥ चरण
करण गुण धाम हो ॥ पडिलेहण आवश्यकादिकें ॥
सहि० ॥ अहोनिश रहे सावधान हो ॥सह०॥ शिव०
॥ शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥ ४ ॥ सदाचार एम
पालतां ॥ सहि०॥ वर्ते आतमभाव हो ॥ नयरी राज
गृही आविया ॥ सहि० ॥ भवोदधि तारण नाव हो
॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुभ० ॥ सहि० ॥ चालो० ॥
॥ ५ ॥ उदंत सुणीने आवियो ॥ सहि० ॥ वंदन श्रे
णिकराय हो ॥ साथे राणी चेलणा ॥ सहि० ॥ गहूं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ली करे गुण गाय हो ॥ सह० ॥ शिव० ॥ शुज्ञ० ॥ सहि ॥ चालो० ॥ ६ ॥ मनमोहन गुरु तिहां कणे ॥ सहि० ॥ देई देशना हितकार हो ॥ जाव धरीने जे सुणे ॥ सहि० ॥ ते लहे सुख श्रीकारहो ॥ सहज सोजागी गुरु, शिवसुखरागी गुरु, शुज्ञमति जागी गुरु वांदवा ॥ सहियर मोरी, चालोने हर्ष उल्लास हो ॥ ७ ॥ इति ॥ ६३ ॥

॥ अथ गहूंली चोशठमी ॥

॥ जगजीवन जमुना रे, जल जरवा द्यो ॥ ए देशी ॥

॥ आतमरुचि गुणधारणी रे, मनोहारणी ॥ करे गहूंअली तजी खेद रे ॥ सुखकारणी ॥ नाम स्थापना द्रव्यथी रे ॥ मनोहारणी ॥ जावे मंगल चिहुंजेद रे ॥ सुख० ॥ १ ॥ जीव अजीव ने मिश्रथी रे ॥ म० ॥ एतो नाम मंगल त्रिहु नाम रे ॥ सु० ॥ आपे मंग ल ए सही रे ॥ म० ॥ कीजें नित नित शुज्ञ काम रे ॥ सु० ॥ २ ॥ आगम नोआगम थकी रे ॥ म० ॥ ए तो द्रव्यमां होय विचार रे ॥ सु०॥ जावमांहे दोय ए जली रे ॥ म० ॥ तेह नोआगम अधिकार रे ॥ सु० ॥ ॥ ३ ॥ नंदी दाखी सूत्रमां रे ॥ म० ॥ सही जाव मंगल होय तेह रे ॥ सु० ॥ पंच नाण निर्विघ्नतां

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे ॥ म० ॥ ए तो तेहनुं कारण तेह रे ॥ सु० ॥ ४ ॥ अंग कह्यां ए भावनां रे ॥ म० ॥ एतो सद्दहियें शुभ चित्त रे ॥ सु० ॥ द्रव्य मंगल मेली करो रे ॥ म० ॥ एतो गदूंअली जिनमत रीत रे ॥ सु० ॥ ५ ॥ टाले जन्म मरणथकी रे ॥ म० ॥ कह्यो मंगल शब्द निरुत्त रे ॥ सु० ॥ अध्यवसाय ए आदरी रे ॥ म० ॥ भवि कीजें जन्म पवित्त रे ॥ सु० ॥ ६ ॥ योग जेह जिन शासनें रे ॥ म० ॥ सवि अध्यातम संयुत्त रे ॥ सु० ॥ शिवफल दायक ते सही रे ॥ म० ॥ कहे राम सदा गमरीत रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ इति ॥ ६४ ॥

॥ अथ गदूंअली पांशठमी ॥

॥ धवलशेठ लइ भेटणुं ॥ ए देशी ॥ आगम अमृत पीजियें, बहुश्रुतथी गुरु पासें रे ॥ श्रोता गुण अंगे करी, विनय करी उल्लासें रे ॥ आ० ॥ १ ॥ शुद्ध भाषक समता धरा, पंचम कालें थोडा रे ॥ दीसे बहु आडंबरी, जेहवा उद्भट घोडा रे ॥ आ० ॥ २ ॥ वस्तुधर्मनी देशना, जे दीये हेत राखी रे ॥ कीजें तेहनी सेवना, उपकारी गुण दाखी रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ आगमतत्त्व प्रकाशमां, जे भवियण चित्त झूले रे, अ नुभव रस आस्वादथी, थुणीयें जेह रसीले रे ॥ आ०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ ४ ॥ नय निक्षेप प्रमाणथी, साधुनो बंध सुरीतें रे ॥ तत्त्वातत्त्व विशेषणा, लहीयें परम प्रतीतें रे ॥ आ० ॥ ५ ॥ तत्त्वारथ श्रद्धान जे, समकित कहे जिनराया रे ॥ जाषण रमण पणे लहे, जेद रहित मति पाया रे ॥ आ० ॥ ६ ॥ स्वस्तिक पूजन जावना, करता जक्ति रसाल रे ॥ पुण्य महोदय पामीयें, केवल रुद्धि रसाल रे ॥ आ० ॥ ७ ॥ इति ॥ ६५ ॥

॥ अथ गहूंली बाशठमी ॥

॥ प्रजुजी वीरजिणंदने वंदीये ॥ ए देशी ॥

॥ सजनी शासन नायक दिल धरी, गाशुं तपगछ राया हो ॥ अलबेली हेली ॥ सजनी जाणीयें सोहम गणधरु, पटधर जगत गवाया हो ॥ अलबेली हेली ॥ सजनी वीर पटोधर वंदियें ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सजनी वसुधापीठने फरसता, विचरता गणधार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ बत्रीश गुणशुं बिराजता, ठे जवि जनना आधार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ २ ॥ स० ॥ तखतें शोहे गुरुराज जी, उदयो जिम जग जाण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ निरखतां गुरुराजने, बूझे जाण अजाण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ३ ॥ स० ॥ मुखडुं शोहे रे पूरण शशी, अणीयालां गुरु नेण हो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अ० ॥ स० ॥ जलधरनी परें गाजता, करता नवि जन सेण हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ४ ॥ स० ॥ अंग उपांगनी देशना, वरसत अमृतधार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ श्रोता सर्वनां दील ठरे, संयमशुं धरे प्यार हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ५ ॥ स० ॥ शुभ शणगार सजी करी, मोतीयडे भरी थाल हो ॥ अ० ॥ स० ॥ श्रद्धा पीठनी उपरें, पूरें गहूंली विशाल हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ६ ॥ स० ॥ सौभाग्य उदयसूरि पाटना, धारक गुरु गुणराज हो ॥ अ० ॥ स० ॥ श्री विजयलक्ष्मी सूरिंद जी, दीपविजय कविराज हो ॥ अ० ॥ स० ॥ वी० ॥ ७ ॥ इति ॥ ६६ ॥

॥ अथ गहूंली सडशठमी ॥

॥ रुडीने रढीयाली रे वाहाला तारी वांशली रे ॥ ए देशी ॥ सुकुत तरुनी वेल वधारवा रे, सींचती उपशम उदकनी धार, गुरुगुण हृदय धरंती प्यार, मानुं रंभानो अवतार ॥ सु० ॥ १ ॥ पुण्य पनोती रे साथें साहेलीयो रे, मली मली शोल सजी शणगार, कर धरी रजत रकेबी सार, कुंकुम घोली करी मनोहार ॥ सु० ॥ २ ॥ अक्षत सारा रे उज्ज्वलता भर्या रे, पूरती स्वस्तिक मंगल सार, चुरती चिहुं गति क्रोध

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ज चार, ठवती श्रीफल हर्ष अपार ॥ सु० ॥ ३ ॥ अनुजव रंगें रे मोती वधावती रे, ललित परिणामें नमती पाय, गुरुमुख देखी हर्ष न माय, सन्मुख बे सती बेसण ठाय ॥ सु० ॥ ४ ॥ जोजन पामे रे अमृत जूखमां रे, नागर ग्रीषम पाम्यो गंग, जिनवाणी सुण वानो रंग, अर्थ मनोहर नय गम जंग ॥ सु० ॥ ५ ॥ श्रीशुजवीरनुं शासन पामीने रे, धरती हैयडे समकि तवास, अनुक्रमें केवलज्ञान प्रकाश, मलती मुक्ति सहेली पास ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ६७ ॥

॥ अथ गहूंली अडशठमी ॥

॥ देशी उपरली गहूंलीनी ॥ गिरिवैजारें रे वीर स मोसस्या रे, चौद सहस मुनिवर संघाय, त्रिगडे बेठा त्रिजुवनराय ॥ १ ॥ रूडीने रढीयाली रे जिनजीनी दे शना रे॥ ए टेक ॥ वरसे जिम पुष्कर जलधार, सांजल वा बेठी परखदा बार ॥ रूडी०॥२॥ निजनिज जाषायें समजे सहू रे॥जिम समजावी जीलें नार, योजन जिन वाणी उदार ॥ रूडी० ॥ ३ ॥ नय गम जंग प्रमाण निक्षेपथी रे ॥ जीवादिक नवतत्त्व विचार, उत्पाद व्य य ध्रुवथी धार ॥ रूडी० ॥४॥ दान शीयल तप जाव जे दें करी रे ॥ चउमखथी चौ जिनवर वाण, निसुणी पा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मे पद निर्वाण ॥ रूडी० ॥ ५ ॥ पटराणी श्रेणिकनी चेलणा रे ॥ आदरथी उठे धरीने प्यार, लेइ (सहस) सहीयो संगें सार ॥ रूडी० ॥ ६ ॥ सोवन जवथी स्वस्तिक पूरती रे ॥ वांदी वधावे थइ उजमाल ॥ लु ळणडां लटके करे रसाल ॥ रूडी० ॥ ७ ॥ चतुरा उ सरती पाठे पगे रे ॥ जोती जिनमुखचंद अमंद, पामे मनमां परमानंद ॥ रूडी० ॥ ८ ॥ जिनवचनामृत सांजले रंगथी रे ॥ जक्ति पूर्वक चित्त मजार, धरती अरथ सरूप विचार ॥ रूडी० ॥ ए ॥ इति ॥ ६८ ॥

॥ अथ गहूंली उंगणोतेरमी ॥

॥ वीरजी आया रे, गुणशील वनके मेदान ॥ विप्र पडिबोह्यो रे, केवलज्ञान प्रधान ॥ अरिहा तीन जगत के जाण, समवसरण तखतें महेराण, फलके जामंरु ल गुणखाण, श्रेणिक हरख्यो रे आयो वंदन काज, चतुरंगी फोजां रे वांकडीया करी साज, साथें तरुणी रे पंचसयाको समाज ॥ वी० ॥ १ ॥ धर्म प्रकाशे बारे परखदा मांहे, मजकुर पूठे गोयम उत्साहे, चउ अनुयोगें उत्तर सोहाय, श्रेणिक पूठे रे बेशी यथोचित ठाय, वाणी निसुणी रे मनमां हर्षित थाय, संशय टाले रे आत्मअनंत सुख थाय ॥ वी० ॥ २ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

बत्रीश बद्ध नाटक रची सार, करी नर नारी रूप रसाल, खलके कंकणना खलकार, प्रजुने वंदे रे दर्दु रांक सुर सार, ज्ञातासूत्रें रे वरणवियो अधिकार, समकित संगें रे मटे मिथ्यात्व निर्धार ॥ वी० ॥ ३ ॥ चेलणा नारी मन हरखाणी, अंगें अनेक शणगार सोहाणी, बहुत साहेलीकी ठकुराणी, कुंकम घोली रे साथीयो रंग रसाल, रयणें पूरी रे वधावे जरी थाल, नेह धरीने रे गुण गाये उजमाल ॥ वी० ॥ ४ ॥ त्रिशला नंदन सूरिजन वंदो, अवसर लइ आ फंद निकंदो, पामे नित्य नवनवा आनंदो, बहु चिरंजीवो रे तीरथपति सुलतान, दिल जरी ध्यार्ज रे प्रजुगुण नुं घणुं मान, संपदा पामो रे लक्ष्मीसूरि गुण गाण ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥ ६ए ॥

॥ अथ गहूंली सीत्तेरमी ॥

॥ प्रजुजी आव्या रे शहेर जरुअचके मेदान, अश्व प्रतिबोध्यो रे जाणे पूरवको सयाण ॥ ए टेक ॥ ऊलके उगमते परजात, जूपति हरख्यो रे सास्यौ अर्थीको काज, स्वामीजी वांद्या रे बहु फोजां के साज, जक्ति रागें रे जीव पामे शिवराज ॥ प्रजु० ॥ १ ॥ उपदेश आपे त्रिजुवनजाण, सुणे परखदा बारे वाण, मन

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मां जाणे कोइ सुजाण, नृप पूछे रे मुनि सुव्रत जिन राय, प्रतिबोध्यो रे कोइ जीव एणे गाय, देवे दीठो रे एक तुरंग धर्म ध्याय ॥ प्र० ॥ २ ॥ अणसण लेइ प्रभुके पाय, पहोतो सुरलोकें दिल लाय, तीरथ थापे मन उमाय, संघ सेवे रे दूरदेशथी आय, भावना भावे रे तजी विषय कषाय, दुःखम कालें रे ए महिमा गवराय ॥ प्र० ॥ ३ ॥ नाटक नाचे नव नव रंग, करे अशुभ करमनो भंग, साचो समकित गुणनो रंग, सूत्रें दीसे रे सूरियाभ सुरनो अधिकार, पूजा कीधी रे सतर भेद सुखकार, शंका टाले रे भविक जीव निरधार ॥ प्र० ॥ ४ ॥ पद्मावतीनो नंदन महाभाग, दाखे शिवगति पूरिनो माग, जगमांहे कहेवाये वीतराग, आठे रायो रे जिनशासन सुलतान, माग्या दीजें रे मनवंछित प्रभु दान, वांछा कीजें रे विबुध विमल शुभ ध्यान ॥ प्र० ॥ ५ ॥ इति ॥ ७० ॥

॥ अथ गहूंली एकोतेरमी

॥ वीरजी आया रे गुणशीलवनके मेदान ॥ ए देशी ॥

॥ भवियण वंदो रे चोवीशमो जिनराय, सुगति आपे रे टाले कुगति कुठाय ॥ ए टेक ॥ पावन देशां तर करता स्वाम, विचरंता वली गामो गाम, पातक

जाये लीधे नाम, जग पडिबोहे रे ए त्रिहुं लोक नो नाथ, मुनि परिवार रे चउद सहस छे संघात, सायर ढोडी रे कोण सेवे ढीलर पाश ॥ जवियण० ॥ १ ॥ राजगृही नयरी उद्यान, गुणशीला चैत्यके मेदान, आया पुंडरिक प्रधान, सुर तिहां रचे रे स मवसरण तेणि वार, इंद्र इंद्राणी रे वंदे प्रजुने अपार, आनंद पावे रे देखी प्रजुनो देदार ॥ जवि०॥ ॥ २ ॥ वननो पालक जेहनुं नाम, दीधी वधामणि जइने ताम, श्रेणिक हरख्यो सुणीने नाम, चलचित्त थीयो रे मगधपति माहाराज, परिवार संयुक्त रे साथें रमणी समाज, तिहांथी चाल्यो रे प्रजुने वं दन काज ॥ जवि० ॥ ३ ॥ चतुरंगी सेना सजीय उ दार, गज रथ पायक अमुल तुखार, बहु जव उतर वाने पार, श्रेणिक हरखे रे वंदे प्रजुजीना पाय, प्रजु पद वंदी रे बेठो यथोचित नाय, तव उपदेसे रे वीर जिनेसर राय ॥ जवि० ॥ ४ ॥ चेलणा राणी अति सोजागी, जिन वंदिने जक्ति जागी, गहूंली करवा रढ बहु लागी, कनक चोखा लइ रे हाथे अतिही रसाल, गहूंली पूरे रे, जगपति आगें विशाल, मोतीडे वधावे रे टाले पाप प्रजाल ॥ जवि० ॥ ५ ॥ देशना दीधी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

श्रीजगवंत, शंशय टाल्या श्री अरिहंत, श्रेणिक वंदी पुर पहोचंत, एम बहु जावें रे नित्य नित्य मंगल गाय, सुकृत कमावे रे दीपविजय कविराय॥जवि०॥६॥इति॥

॥ अथ गहूंली बहोंतेरमी ॥

॥ जिनराज पूजी लाहो लीजीयें ॥ ए देशी ॥

॥ केशरचंदन जरीय कुंकावटी, सोवनथाल ले कामिनी ॥ गहूंअली करीने मंगल गाई, बलिहारी गुरुनामनी ॥ गहूंली करे रे गजगामिनी ॥ १ ॥ शोल शणगार सजीने सुंदर, जाणे झबूके दामिनी ॥ साधु साधवी श्रावक श्राविका, जरी रे सजामां जामिनी ॥ गहूं ली० ॥ २ ॥ नवखंकी नवरंगी निरुपम, विधविधरंग बनावनी ॥ मोतीयें साथीयो पूरे मनोहर, जक्ति करे शुज जावनी ॥ ग० ॥ ३ ॥ प्रवचन रचना जग जन पावन, देशना श्रीगुरुरायनी ॥ धवल मंगल गांधर्वगुण गानें, सांजले सहु सुखदायिनी ॥ ग० ॥४॥ उदयरतन वाचक उपदेशें, रूमी सजा रसरागनी ॥ प्रीठे ते पर मारथ पामे, वाणी श्रीवीतरागनी ॥ ग० ॥५॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली त्रहोंतेरमी ॥

॥सजनी मोरी गुणशीलवनके मेदान रे, सजनी मो री आव्या श्रीवर्द्धमान रे ॥ स०॥ ज्ञानादिक गुणदरी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

या रे ॥ स० ॥ पतित पावन पीयरीया रे ॥ स० ॥१॥ ॥ ए आंकणी ॥ स० ॥ श्रेणिक हरख्यो आवे रे ॥ स० ॥ समकित क्षायिक भावे रे ॥ स० ॥ कंचन वरणी नार रे ॥ स० ॥ पंचसया परिवार रे ॥ स० ॥ २ ॥ स० ॥ धर्मदेशना जिन भांखे रे ॥ स० ॥ नवपद महिमा दाखे रे ॥ स० ॥ नवपद आतम जाणो रे ॥ स० ॥ आतम नवपद वखाणो रे ॥ स० ॥ ३ ॥ स० ॥ नवतत्त्व भूषण सार रे ॥ स० ॥ रत्न रकेबी उदार रे ॥ स० ॥ श्रवण मनन बहु मूल रे ॥ स० ॥ पहेरी वस्त्र अनुकूल रे ॥ स० ॥ ४ ॥ स० ॥ क्रिया कुंकावटी हाथ रे ॥ स० ॥ मन निर्मलने पाथ रे ॥ स० ॥ जिनगुण कंकु घोली रे ॥ स० ॥ मली सहीयरनी टोली रे ॥ स० ॥ ५ ॥ स० ॥ आणा तिलक धरावे रे ॥ स० ॥ चेलणा गहूंली बनावे रे ॥ स० ॥ एणी परें गहूंली कीजे रे ॥ स० ॥ नरभव लाहो लीजें रे ॥ स० ॥ ६ ॥ स० ॥ विषय ते विष सम जाणो रे ॥ स० ॥ बोले त्रएय भुवननो राणो रे ॥ स० ॥ शिवपुर सासरे चालो रे ॥ स० ॥ सुभवमांहे माहालो रे ॥ स० ॥ ७ ॥ स० ॥ मणि उद्योत गुरु मलीया रे ॥ स० ॥ आज

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मनोरथ फलिया रे ॥ स० ॥ शुं कहीयें वारो वार रे ॥ स० ॥ ते कां करो परिहार रे ॥ स०॥७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्रीसिद्धचक्रनी गहूंली चम्मोतेरमी ॥

॥ हांरे महारे गाम धर्मना साडा पच्चवीश देश जो ॥ ए देशी ॥ हांरे महारे जिनआणा लेइ इंद्रभूति ग णधार जो, विचरे रे चउविह अप्रतिबंध विहारथी रे लो ॥ हांरे महारे संयम धारी मुनिगणना शिरदार जो, चउज्ञानी शुभध्यानी धर्मना सारथी रे लो ॥ १ ॥ हांरे महारे राजगृही उद्याने आव्या नाथ जो, हरख्यो रे मगधाधिप त्रिकरण भावशुं रे लो ॥ हांरे मारे आवे नृप चेलणादिक राणी साथ जो, अंग नमावी वंदे गणधर पावने रे लो ॥ २ ॥ हांरे महारे भवनिस्तरणी जिनवाणी उपदेश जो, भाखे रे प्रभु गोयमस्वामी रंगथी रे लो ॥ हांरे मारे सेवो भवि जन सिद्धचक्र शुभ लेश जो, बहुसुख पाम्यां मयणा तेहना संगथी रे लो ॥ ३ ॥ हांरे मारे अवसर पा मी मगधाधिपनी नार जो, उल्लसी रे मन हर्षी स्व स्तिक पूरवा रे लो ॥ हांरे मारे सहियर मंगल गा ती गीत अपार जो, मानुं भव भव संकटने ए चूरवा रे लो ॥ ४ ॥ हांरे मारे इणी विध स्वस्तिक पूरे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

श्रद्धा पीठ जो, पामे रे ते मंगल माला माननी रे लो ॥ हांरे मारे शिवपद कारण जावें जोग उक्किठ जो, दीप कहे एम ए छे वात निदाननी रे लो ॥ ॥ ५ ॥ इति ॥ ७४ ॥

॥ अथ गहूंली पंचोतेरमी ॥

धोलनी देशीमां ॥ राजगृही उद्यानमां, श्रीसोहम गणधार ॥ समोसरिया परिवारशुं, मुनिजनना आधार ॥ १ ॥ चालो सखि गुरु वांदवा ॥ ए आंकणी ॥ पंच महाव्रत पालता, दशविध यतिधर्म सार ॥ सत्तर जेदें संयम वख्या, वैयावच्च दश धार ॥ चा० ॥ २ ॥ गुप्ति धरे नववाडशुं, ज्ञानादिक तप बार ॥ निग्रह क्रोध तणो करे, चरणसित्तरि शणगार ॥ चा० ॥ ३ ॥ पिंमविशुद्धि समिति धरे, जावना पडिमा बार ॥ इं द्रियरोधक पमिलेहणा, गुप्ति अनिग्रहधार ॥ चा० ॥ ४ ॥ करणसित्तरी ए पालवे, टाले सकल कलेश ॥ कमलासने बेसी कहे, जविजनने उपदेश ॥ चा० ॥ ५ ॥ श्रेणिक नृपति मानशुं, प्रणमी पट्टोधर राय ॥ उचित अवग्रह ते साचवे, धर्म सुणे सुखदाय ॥ चा० ६ ॥ गुणवंती करे गहूंअली, चतुरा चेलणानार ॥ माणक मोती वधावती, जरती सुकृत जंमार ॥ चा०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥७॥ कोकिल कंठें कामिनी, सोहामणी निर्मल वृंद ॥ गुरुगुण अमृत गावती, पामति परमानंद ॥ चा०॥७॥

॥ अथ श्रीजंबुगुरुनी गहूंली ढहोंतेरी ॥

॥ अजब कियो रे मुनिराय, लघुवयें जोग लियो रे॥ शोल वरस संयम लियो रे, तरुणी आठ विछोड ॥ मुनिवर योग लियो रे ॥ कोडि नवाणुं सोवन तणी रे, छोडी मनने कोड ॥ मु० ॥ १ ॥ तप द्वादश भेदें करे रे, भावता भावना बार ॥ मु० ॥ पडिमा बारना उद्यमी रे, गुण छत्रीशना आधार ॥ मु० ॥२॥ पडिरूवादिक चउदे भला रे, निमित्त अठंग सुठाय ॥मु०॥ निपुण ते गुणठाणंग तणा रे, गुणसागर गुरुराय ॥ मु० ॥ ॥ ३ ॥ मुनि मंगलशुं परवर्या रे, जंबू जुग प्रधान ॥ मु० ॥ विचरंता पाउ धारिया रे, राजगृही उद्यान ॥ मु० ॥ ४ ॥ कोणिक नरपति वांदवा रे, साथें लइ परिवार ॥ मु० ॥ पद्मावती करे गहूंअली रे, द्रव्य प्रधान विचार ॥ मु० ॥ ५ ॥ चउ गति चूरण साथियो रे, श्रद्धा पीठ बनाय ॥ मु० ॥ वसन आभूषण व्रत तणां रे, शिवफल श्रीफल ठाय ॥ मु० ॥ ६ ॥ उत्तम गुरु गुणभक्तिथी रे, वधावे गुरुराज ॥ मु० ॥ गुरु मुख पद्मनी देशना रे, सुणि पामे शिवराज ॥ मु० ॥ ७ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ गहूंली सत्योतेरमी ॥

वाले महारे मारगडो रुंध्यो रे रतिणा हाथ, तेनी मुने जापटु लागी रे ॥ ए देशी ॥

॥ जग उपकारी रे वीर जिणंद, मगधें विचरता आवे रे ॥ साथे सुर नरना लइ वृंद गिरिवैजारें सुहावे रे ॥ १ ॥ गोयम सोहम जास वजीर, मुनिगण सुपद सेवता रे ॥ अभिग्रह धारी रे केइ मुनि धीर, रविशुं दृष्टि लगावता रे ॥ २ ॥ आवे जुवनाधिपना वीश, बत्रीश व्यंतरना राजा रे ॥ मलिया वैमानिकना ईश, दश शशी रवि तेजें ताजा रे ॥ ३ ॥ इणि परें चोरे जातना देव, कोडाकोडि मली घणा रे ॥ करता सम वसरण ततखेव, निज निज कृत्यनी नहिं मणा रे ॥ ४ ॥ त्रिगडे बेसी त्रिजुवन तात, धर्म कहे करुणा आणी रे ॥ जेहवी सत्तागतनिज जात, आत्मतत्त्व लहे प्राणी रे ॥ ५ ॥ नरपति श्रेणिकनी घरनार, चंद्रमुखी चेलणा राणी रे ॥ करती स्वस्तिक मंगल सार, निज गुरु आगल गुण खाणी रे ॥ ६ ॥ प्रजुने माणक मोती वधाव, विच विच पद प्रणमे तिहां रे ॥ अंतर आतमजाव जगावे, पुण्यजंकार जरे जिहां रे ॥ ७ ॥ सोहव गावे रे मधुरां गीत, गहूंली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नाव उमंगशुं रे ॥ साची वाणी करी ए रीत, अमृत वाणी रंगशुं रे ॥ ८ ॥ इति ॥ ७७ ॥

॥ अथ गहूंली अठोतेरमी ॥

॥ आवी हुं देवा उलंनडो सासुजी ॥ ए देशी ॥

सद्गुरु पद पंकज नमी, सामणीजी ॥ गाशुं गुरु गुणमाल रे ॥ सद्गुरु विचरंता वंदीयें ॥ सामणीजी ॥ १ ॥ द्वादश अंग सिद्धांतना ॥ सा० ॥ पारग धारक एह रे ॥ स० ॥ गुरु गुण उत्रीशें अलंकस्या ॥ सा० ॥ चरण करण नंमार रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ॥ २ ॥ नव्य जीवने प्रतिबोधता ॥ सा० ॥ रत्न त्रयादि गुणधाम रे ॥ स० ॥ गहूंअली करो गुरु आगलें ॥ सा० ॥ हर्ष धरी मन चंग रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ॥ ३ ॥ समकेत कुंकुम तिण समे ॥ सा० ॥ समता निर्मल नीर रे ॥ स० ॥ थाल नस्यो शुन्न नावनो ॥ सा० ॥ चोखा अखंम परिणाम रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ४ ॥ मंगल साथीयो तिहां वन्यो ॥ सा० ॥ रत्न त्रयादि गुण पीठ रे ॥ स० ॥ जिनशासन सिंहासणे ॥ सा० ॥ बेसी करे उपदेश रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ५ ॥ पुहवी मंमल विहरता ॥ सा० ॥ तारण तरण ऊहाज रे ॥ स० ॥ श्रीकल्याणसागरसूरि जे नमे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ सा० ॥ देखी सकल गुणखाण रे ॥ स० ॥ सा० ॥ ६ ॥ विशाल सागर कहे वंदीयें ॥ सा० ॥ एह वा मुनि नित्यमेव रे ॥ स० ॥ आतम मंगल अनुभवे ॥ सा० ॥ तेहिज नित्य नित्य मेव रे ॥ स० ॥सा० ॥ ७ ॥ इति ॥ ७८ ॥

॥ अथ गहूंली उंगण्याएंशीमी ॥

॥ हस्तियाम वनखंरु मझार, राजगृही नालिंदा बार, आव्या इंद्रभूति गणधार तो ॥ गौतम गुरु वंदवा जइयें ॥ वंदना करीयें ने शिवसुख करीयें तो ॥ गौतम गुरु० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ उदक पेढाल मुनीसर दोय, पार्श्वनाथ संतानीया सोय, पूछे प्रश्न ए एणीपरें जोय तो ॥ गौ० ॥ २ ॥ श्रावकने अणुव्रत उच्चरावे, मुनिवर देशथी विरति करावे, स्थावर अनुमति मुनिने आवे तो ॥ गौ० ॥ ३ ॥ कहे गौतम सुणो मुनिवर वात, शेठपुत्र षटनो दृष्टांत, नृप अन्यायथी मारण जात तो ॥ गौ० ॥ ४ ॥ तास पिता करे विनति राय, ७ कुलनो उछेद ते थाय, पंच पुत्रने मूको ताय तो ॥ गौ० ॥ ५ ॥ इम विनति करता तस आपे, पुत्र एक तस हर्ष ते व्यापे ॥ मारणनी नहिं अनुमति थापे तो ॥ गौ० ॥ ६ ॥ राय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रमुख सुणी वंदन आवे, अंतरंग राणी गहूंली लावे ॥ उत्तम गुरुपद पद्म वधावे तो ॥ गौ० ॥७॥ इति ॥

॥ अथ गहूंली एंशीमी ॥ झुमखडानी देशी ॥

॥ ज्ञानदीवाकर शोजता, श्रुतसागर मुनिराज ॥ सुहंकर साधु जी ॥ मूकी काम विडंबना, कूखी संबल साज ॥ सुहंकर साधु जी ॥ १ ॥ नहिं ममता सम ताधरा, शांत सुदंत महंत ॥ सु० ॥ षटपद वृत्ति आहारता, देश काल मतिमंत ॥ सु०॥ २ ॥ पंच महाव्रत जावना, जावंता पचवीश ॥ सु० ॥ पणवीश चित्त न धारता, अशुज जावन निश दीस ॥ सु०॥ ३ ॥ शिव नारी रंजन जणी, पहेर्‍यो साधुनो वेश ॥ सु० ॥ ते आगल मृगलोचना, करती विनय विशेष ॥ सु० ॥ ॥ ४ ॥ क्रोधादिक चउ जीतवा, वरवा चार अनंत ॥ सु० ॥ स्वस्तिक पूरी वधावती, सफुरु चरण नमंत ॥ सु० ॥ ५ ॥ गावे सोहागण गहूंअली, धरती हर्ष अमंद ॥ सु० ॥ श्रीशुजवीर वचन सुणी, पामे पद महानंद ॥ सु० ॥ ६ ॥ इति ॥ ८० ॥

॥ अथ गहूंली एकाशीमी ॥

॥ अने हांरे सरसतीने चरणे नमी रे, वांडुं गुरुना पाय ॥ अलिय विघन सवि टले रे, मागुं एक पसा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

य ॥ १ ॥ चालो सखि गुरु वांदवा रे ॥ अने हांरे राजगृही रलीयामणी रे, तिहां श्रेणिक राजा अमंद ॥ समकीत शुद्ध ते सद्दहे रे, अविदारे सवि फंद ॥ चा० ॥ २ ॥ अ० ॥ वीर प्रभु तिहां आविया रे, तेह नयरी उद्यान ॥ वनपालके दीधी वधामणी रे, हरख्यो देइ तस दान ॥ चा० ॥ ३ ॥ अ० ॥ लाख दान देइ करी रे, राजा श्रेणिक आय ॥ चार निकायना देवता रे, वंदे प्रभुना पाय ॥ चा० ॥ ४ ॥ अ० ॥ त्रण प्रदक्षिणा देइ करी रे, बेठा इंद नरिंद ॥ वीर वाणी तिहां सांभली रे, मनमां हुउं आनंद ॥ चा० ॥ ॥ ५ ॥ अ० ॥ भविजनने पडिबोहता रे, जस आतम उद्धार ॥ पाप चक्र सवि चूरता रे, पामे सुरगति सार ॥ चा० ॥ ६ ॥ अ० ॥ चेलणा करे तिहां गद्दूंअली रे, सोवन भरीने थाल ॥ प्रभुने मोतीडे वधावती रे, मुख जोती सुविशाल ॥ चा० ॥ ७ ॥ अ० ॥ धर्मलाभ तिहां उच्चरे रे, वरसता अमृत वाण ॥ जे भवि भावे ते सांभलें रे, तस घर कोडि कल्याण ॥ चा० ॥ ८ ॥ अ० ॥ समवसरण बिराजता रे, नवकमलें ठवता पाय ॥ इम अनेक गुणे शोभता रे, चंद्रमुनि गुण गाय ॥ चा० ॥ ए ॥ इति ॥ ८१ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ गहूंली बाशीमी ॥

॥ सही चालो श्री महावीरने, नमवा जइयें रे ॥ गणी गौतम स्वामी वजीर, वेनी तिहां जइयें ॥ सही० ॥ १ ॥ त्रिगडानी रचना करी सारी, त्रिदशपति अति जारी रे ॥ मध्यपीठ उपर अती तगारी, बेठा वीरजी तारी ॥ बे० ॥ सही० ॥ २ ॥ चौद सहस मुनि शुं परवरिया, गुणशील वन उतरीया रे ॥ अनंत अनंत गुणें करी जरिया, समता रसना दरिया ॥ बे० ॥ सही० ॥ ३ ॥ श्रेणिक स्वामी समागत जाणी, साथें चेलणा राणी रे ॥ लेती समकित लाज कमाणी, वंद्या उलट आणी ॥ बे० ॥ सही० ॥ ४ ॥ बाल कुमरी शुजराज समाजे, जलधरनी परें गाजे रे ॥ आतपत्र प्रजु शिरपर राजे, जामंमल ठवि ठाजे ॥ बेनी० ॥ सही० ॥ ५ ॥ एम निसुणी चाली ते बाला, ठोडी सहु जंजाला रे ॥ गति चालती जिम गजबाला, थुणवा जिनगुणमाला ॥ बेनी० ॥ सही० ॥ ६ ॥ तिहां आवी प्रजुमुड़ा परखी, बेठी अवसर निरखी रे ॥ गहूंली पूरे अति मन हरखी, सहीयर सरखा सरखी ॥ बे० ॥ सही० ॥ ७ ॥ चरण ठवी मुक्ताशुं वधावे, हरख अति दिल लावे रे ॥ बहु बाला मली

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गहूंली गावे सरवे कंठ मिलावे ॥ बे० ॥ सहि० ॥८॥ अंग उपांग सुणी जिन पासें, धारी आत उल्लासें रे ॥ दीप कहे प्रज्ञुध्यान विलासें, पहोती निज आवासें ॥ बे० ॥ सही० ॥ ए ॥ इति ॥ ७२ ॥

॥ अथ अध्यात्म गहूंली त्याशीमी ॥

॥ ज्ञवि तुमें वंदो रे शंखेश्वर जिन राया ॥ ए देशी ॥

॥ अमृत सरखी रे सुणीयें वीरनी वाणी, अति मन हरखी रे प्रणमो केवल नाणी ॥ ए आंकणी ठे ॥ योजनगामिनी प्रज्ञुनी वाणी, पांत्रीश गुणथी ज्ञांखे ॥ पूरव पुएय अपूरव जेहनां, प्रज्ञुवाणी रस चाखे ॥ अमृत सरखी० ॥ १ ॥ जेहमां ड्रव्य पदारथ रचना, धर्माधर्म आकाश ॥ पुद्गल काल अने वलि चेतन, नित्यानित्य प्रकाश ॥ अमृत० ॥ २ ॥ ड्रव्य गुण ने पर्याय प्रकाशे, अस्ति नास्ति विचार ॥ नय सातेथी मालकोशमां, वरसे ठे जलधार ॥ अमृत० ॥ ३ ॥ गुणसामान्य विशेष विशेषें, होय मलि गुण एकवीश ॥ तस चउ ज्ञंगी चार निक्षेपे, ज्ञांखे श्रीजगदीश ॥ अमृत० ॥ ४ ॥ त्रिलदृष्टांतें खेचर ज्ञूचर, सुरपति नरपति नारी ॥ निज निज ज्ञाषायें सहु समजे वाणीनी बलिहारी ॥ अमृत० ॥ ५ ॥ नंदीव

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ऊननी पटराणी, चउ मंगल प्रजु आगें ॥ पूरे स्वस्ति क मुक्ताफलनो, चडवा शिवगति पागें ॥ अमृत० ॥ ६ ॥ चउ अनुयोगी आतमदर्शी, प्रजुवाणी रस पीजें ॥ दीपविजय कवि प्रजुता प्रगटे, प्रजुने प्रजुता दीजें ॥ अमृत० ॥ ७ ॥ इति ॥ ८३ ॥

॥ अथ जंबुकुमारनी गहूंली चोराशीमी ॥

घरूडामें सहियो फूले हाथणी ॥ ए देशी ॥

॥ राजगृही नयरी समोसर्या, पांचशें मुनि परिवार ॥ मोरी सहियां हो ॥ केवलज्ञान दिवाकरु, श्री श्री सोहम गणधार ॥ मोरी० ॥ चालो पट्टोधर गुरु वांदवा ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ जंबुकुमर आवे हेजशुं, पूज्य जीनें वंदन काज ॥ मोरी० ॥ ब्रह्मचारी शिर सेहरो, लेवा मुक्तिगढ राज ॥ मोरी० ॥ चालो० ॥ २ ॥ गुरु मुखथी रे सुणी देशना, संयमें उल्लसित जाव ॥ मो० ॥ कायिक समकेतनो धणी, तरवाने जवजल दाव ॥ मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥ अणुव्रत लेइ गुरु आगलें, संयमनो रे उजमाल ॥ मो० ॥ परणीने घरणी आठने, बूऊवी वयण रसाल॥ मो० ॥ चा० ॥ ४ ॥ संयम लीये मुनि पांचशें, सत्तावीश परिवार ॥ मो० ॥ चरण करण गुण आगला, जेहना छे धन्य अवतार ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मो० ॥ चा० ॥ ५ ॥ सुधर्मा स्वामीना पाटवी, केवल लही गणराय ॥ मो० ॥ गुणशीला चैत्य पधारिया, उदायिन हर्ष न माय ॥ मो० ॥ चा० ॥ ६ ॥ पटराणी राणी पूरे गहूंअली, करवा सफल अवतार ॥ मो० ॥ दीपविजय कविराजने, प्रणमे छे बहु नर नार ॥ मो० ॥ चा० ॥ ७ ॥ इति ॥ ८४ ॥

॥ अथ फूलडां पंच्याशीमां ॥

॥ सखी रे में कौतुक दीठुं, साधु सरोवर झीलता रे ॥ सखी नाके रूप निहालतां रे ॥ सखी लोचनथी रस जाणतां रे ॥ सखी मुनिवर नारीशु रमे रे ॥ १ ॥ सखी नारी हींचोले कंतने रे ॥ सखी कंत घणा एक नारीने रे ॥ सखी सदा यौवन नारी ते रहे रे, सखी वेश्या विलुद्धा केवली रे ॥ २ ॥ सखी आंख विना देखे घणुं रे ॥ सखी रथ बेठा मुनिवर चले रे ॥ सखी हाथ जलें हाथी डूबीयो रे ॥ सखी कुतरीयें केशरी हण्यो रे ॥ ३ ॥ सखी तरशो पाणी नवि पीये रे ॥ सखी पग विहूणो मारग चले रे ॥ सखी नारी नपुंसक भोगवे रे ॥ सखी अंबाडी खर उपरें रे ॥ ४ ॥ सखी नर एक नित्य ऊभो रहे रे ॥ सखी बेठो नथी नवि बेसशे रे ॥ सखी अर्द्ध गगनवचें ते रहे रे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सखी मांकडे महाजन घेरीयो रे ॥ ५ ॥ सखी उंदरे मेरु हलावियो रे ॥ सखी सूर्य अजवालुं नवि करे रे ॥ सखी लघु बंधव बत्रीश गया रे ॥ सखी शोकें घडी नहीं बेनडी रे ॥ ६ ॥ सखी शामलो हंस में देखीयो रे ॥ सखी काट वल्यो कंचनगिरि रे ॥ सखी अंजनगिरि उज्ज्वल थयो रे ॥ सखी तोहे प्रजु न संजारीया रे ॥७॥ सखी वयरसामी सुता पारणे रे ॥ सखी श्राविका गावे हालरां रे ॥ सखी महोटा थइ अर्थ ते कहेजो रे ॥ सखी श्रीशुजवीरने वाहालडा रे ॥ ८ ॥ इति हरियालीनी गहुंली ॥ ८५ ॥

॥ अथ चूनडी ज्याशीमी ॥

॥ हांजी समकित पालो कपासनो, हांजी पेंजण पाप अढार ॥ हांजी सूत्र जलुं रे सिद्धांतनुं, हांजी टालो आठ प्रकार ॥ हांजी शीयल सुरंगी चूनडी ॥ १ ॥ हांजी त्रण गुप्ति ताणो ताणो, हांजी नलीय जरी नव वाड ॥ हांजी वाणो वाणो रे विवेकनो, हांजी खेमा खुंटीय खाय ॥ हांजी शी० ॥ २ ॥ हांजी मूल उत्तर गुण घूघरा, हांजी ठेडा वणो ने चार ॥ हांजी चारित्र चंदो वच्चे धरो, हांजी हंसक मोर चकोर ॥ हांजी शी० ॥ ३ ॥ हांजी अजब बिराजे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

चूनडी, हांजी कहो सखी केटलुं मूल्य ॥ हांजी लाखें पण लाजे नहीं, हांजी एह नहीं सम तोल ॥ हांजी ॥ शी० ॥४॥ हांजी पहेली उंढी श्री नेमजी ॥ हांजी बीजी राजुल नेट ॥ हांजी त्रीजी गजसुकुमालजी, हांजी चोथी सुदर्शन शेठ ॥ हांजी शी० ॥ ५ ॥ हांजी पांचमी जंबू स्वामीने, हांजी छठी धनो अण गार ॥ हांजी सातमी मेघ मुनीसरू, हांजी आठमी एवंती कुमार ॥ हांजी शी० ॥ ६ ॥ हांजी सीता कुंता द्रौपदी, हांजी दमयंती चंदनबाल ॥ हांजी अंजना ने पद्मावती, हांजी शीयलवती अतिसार ॥ हांजी शी० ॥ ७ ॥ हांजी अजब बिराजे रे चूनडी, हांजी साधुनो शणगार ॥ हांजी मेघ मुनीसर एम भणे, हांजी शीयल पालो नर नार ॥ हांजी शी० ॥ ॥ ८ ॥ इति ॥ ८६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्याशीमी ॥

॥ घरे आवोजी आंबो मोरियो ॥ ए देशी ॥

॥ चालो सहियरोजी साधुजी वंदीयें, श्रीवीरतणा पट्टोधार रे ॥ चउनाणी सोहम गणधरु, सूत्र रयण तणा भंडार रे ॥ चालो० ॥ १ ॥ एकविध असंयम टालता, धर्म दोय यति गृही गमता रे ॥ त्रि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

विध गारवने परिहरे ॥ चार सुख शय्या मांहे रमता रे ॥ चालो० ॥ २ ॥ प्रमाद तजे नजे व्रतीने, नय टाले मातने पाले रे ॥ नियाणां न करे साधु जी, दश श्रमण धरम अजुवाले रे ॥ चा० ॥ ३ ॥ श्रऊवंती शुऊ श्राविका, गुरु आगल नक्ति करंती रे ॥ गुरु आगल पूरे गहूंअली, शासन करती बहु उन्नति रे ॥चा० ॥ ४ ॥ जिनवाणी अनुनवरस नरी, गुरु उत्तम रत्नना मुखथी रे ॥ सुणतां पामे निज आतमा, सुख अनुनवमां रहे एथी रे ॥ चा० ॥ ५ ॥ इति ॥ ७७ ॥

॥ अथ तपनी नाष्य अठ्याशीमी ॥

॥ साहेबा महारा अरज करुं तुं कंत, कहे सुणो कामिनी जी ॥ साहिबा महारा गुरुउपदेशें हुं, सहियां मांहे ऊपनी जी ॥ १ ॥ सा० ॥ आज्ञा आपो, मासखमण तप आदरुं जी ॥ सा०॥ अवसर पामी, मानव नव सफलो करुं जी ॥ २ ॥ गोरी महारी हाथ न चाले, मन नवि चाले माहरुं जी ॥ गोरी महारी ए तप महोटुं, शरीर खमे नहिं ताहेरुं जी ॥ ३ ॥ सा० ॥ ढ्योने आदरुं, संवत्सरीना खोला पाथरुं जी ॥ सा० ॥ मान मागुं हुं, अंतराय तमें कां करो जी ॥ ४ ॥ गोरी अमें आज्ञा आपी, पचरकाण जइ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

उच्चरो जी ॥ ससरा महारा ढोल वजडावो, धर्मस्था नक धन वावरो जी ॥ ५ ॥ सासु महारी साथे आवो, चोक पूरावो गहूंली साथीये जी ॥ सहीयर महारी साथे आवो, गुरुजी वधावो गजमोतीयें जी ॥ ६ ॥ गुरुजी महारा पच्चरकाण करावो, मास खमणनुं मन रूली जी ॥ जेठजी महारा वाजां वजडावो, खेला नचावो खांतशु जी ॥ ७ ॥ वीरा महारा घाट घडावो, पाट धरावो शेरीयें जी ॥ सामणी महारी सांगी देव रावो, वाजित्र नूंगल नेरीयें जी ॥ ८ ॥ सामणी महा री आंगी रचावो, गुरुजी मनावो पाय लागीने जी ॥ सामणी मोरी पासें रहीने पोथी पूजावो, वास नखा वो मागीने जी ॥ ए ॥ नवियां एहवी नावना नावो, तपें काया निर्मल करो जी ॥ तपीने महारी वंदना होजो, उदयरत्न एम उच्चरे जी ॥ १० ॥ इति ॥ ७७ ॥

॥ अथ नव पदनी गहूंली नेव्याशीमी ॥

॥ आतमराम मुनिराजीया, नवजल तारण नाव ॥ मोरी सहीयो रे ॥ पांचे योगने साधवा, लीधो ते मुनिवरभाव ॥ मोरी० ॥ चालोने गीतारथ गुरुने वां दवा ॥ १ ॥ वृत्ति कहे योग पांचमो, साधन करे सुविलास ॥ मोरी० ॥ अनुनव अभ्यासी सदा, कर

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ता ज्ञान अभ्यास ॥ मो० ॥ चा० ॥ २ ॥ पहेलो अध्यातमयोग जे, जावनायोग तेम जाण ॥ मो० ॥ ध्यानयोगें त्रीजो सही, समता योग मन होय ॥ मो० ॥ चा० ॥ ३ ॥ एम अनेक गुणे शोजता, वीर आणा लेइ मान ॥ मो० ॥ गोयमस्वामी समोसर्या, राजगृही उद्यान ॥ मो० ॥ चा० ॥ ४ ॥ श्रेणिकराय आवे वांदवा, सुणी आगमन उदंत ॥ मो० ॥ क्षायिक समकितनो धणी, वांदे गुरु गुणवंत ॥ मो० ॥ चा० ॥ ५ ॥ इण अवसर राणी चेलणा, जाव सजी शण गार ॥ मो० ॥ श्रऊापीठ उपर सही, गहूंली करे म नोहार ॥ मो० ॥ चा० ॥ ६ ॥ तव गोयम दिये देश ना, सेवो जविक सिऊ चक्र ॥ मो० ॥ आंबिल उंली आराधियें, जिम न पडो जवचक्र ॥ मो० ॥ चा० ॥ ॥ ७ ॥ पांचे धर्मीने चार धर्म ठे, धर्मी सेव्या धर्म होय ॥ मोरी० ॥ मयणा ने श्रीपालनो, संबंध कहे सवि सोय ॥ मोरी० ॥ चा० ॥ ८ ॥ वली नवपदमय ठे आतमा, आतम नवपद जोय ॥ मो० ॥ ध्येय ध्याता ध्यान एकथी, जेद लहो नवि कोय ॥ मो० ॥ चा० ॥ ए ॥ आतमधर्मीने देशना, धारजो हृदय मजार ॥ मो० ॥ खिमाविजय जस संपदा, शुजवि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

जय सुखकार ॥ मो० ॥ चा० ॥ १० ॥ इति ॥ ७ए ॥

॥ अथ गहूंली नेवुंमी ॥

॥ अजित जिणंदशु प्रीतडी ॥ ए देशी ॥

॥ सहियर चतुर चकोरडी, गुण जेरडी हो थइने उजमाल ॥ आवो गुरुने नेटवा, ङुःख मेटवा हो सुणी धर्म रसाल ॥ बलिहारी गुणवंतनी ॥ १ ॥ रुजुमतिहो होय कोडि कल्याण ॥ ब० ॥ ए आंकणी ॥ नावठ नो जे नव तणी, वलि वाजे हो घरे जीत निशाण ॥ बलि० ॥ २ ॥ वलि आतमतत्वनी सेवना, शुन देशना हो सुणतां जे रीऊ ॥ तेहिज तत्त्व प्राप्ति तणुं, प्रनु नांख्युं हो आगममां बीज ॥ बलि० ॥ ३ ॥ नमना त्रिगमन वंदनें, गुरु विनयें हो होय लान अपार ॥ समकित शुद्ध ग्रही सही, ते वेहेलो हो लहे नवजलपार ॥ बलि० ॥ ४ ॥ स्वस्तिक कारण स्वस्तियुं, गुरु आगल हो रचियें मनरंग ॥ कुंकुमरोल कचोलडां, धरि ऊपर हो श्रीफल शुन चंग ॥ बलि० ॥ ५ ॥ ङव्य मंगलथी नावियें, नावमंगल हो दानादिक चोक ॥ ऊपर साकर संपदा, सहि पामे हो शुनदृष्टि लोक ॥ बलि० ॥ ६ ॥ चोक पूख्यो गति चारनो, करी

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

फेरा हो जवमांहि अनंत ॥ आतमराम सुगुरु हवे, मुऊ दीजें हो सहि सुख अनंत ॥ बलि० ॥७॥इति ॥

॥ अथ गहूंली एकाणुंमी ॥

॥ रूडीने रढियाली रे समकित श्राविका रे ॥ सज करि शोल जला शणगार, कर धरी रजत रकेबी सार ॥ रूडीने० ॥ १ ॥ कुंकुम रूडी मांहे कुंकावटी रे ॥ कुंकुम थाल जस्यो करि श्रीकार, निरखवा चाली गुरु देदार ॥ रूडीने० ॥ २ ॥ सहियर टोली रे साथें मली संचरी रे ॥ जई गुरु केरा वंदे पाय ॥ गहूंली करे शुज चित्त लाय ॥ रूडीने० ॥ ३ ॥ मंगल करती रे निज आतम जणी रे ॥ वलि जलो कंकणनो करे रणकार ॥ थाय रूडो झांझरनो झमकार ॥ रूडीने० ॥ ४ ॥ लूहणां करती रे गुरुगुण हेजशुं रे ॥ श्रीफल ठवती करे रंगरोल ॥ जाणती नथी कोइ गुरुने तोल ॥ रूडीने० ॥ ५ ॥ मंगल करती हियडे हेजशुं रे ॥ वलि सुणी आगमनो समुदाय ॥ जवजल सायर तरण उपाय ॥ रूडीने० ॥ ६ ॥ उत्तम घरनी रे श्रवणें चेतना रे ॥ सांजली हैयडे हरख न माय ॥ प्रेम कहे जिम अमिय समाय ॥रूडीने०॥७॥ इति॥ए१॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ जयंती श्राविकानी गहूंली बाणुंमी ॥
॥ फतमलनी देशी छे ॥

॥ चित्तहर ॥ चोवीशमा जिनराय, नयरी कोसं बी समोसस्या ॥ चि० ॥ मनमोहन मुनिराज, चउद हजारें परवस्या ॥ १ ॥ चि० ॥ सुरनर परषदा बार, रतन गढें आवी ठस्या ॥ चि० ॥ बेठा सिंहासन ना थ, चामर ढत्र अलंकस्या ॥ २ ॥ चि० ॥ वंदे उदा नय नूप, रूप चार दर्शन दिये ॥ चि० ॥ समकिती व्रतधर लोक, कोक कमलपरें विकसियें ॥ ३ ॥ चि० ॥ रंना अप्सरा ताम, गहूंली करीने वधावती ॥ चि० ॥ रूपें जयंती समान, नामें जयंती माहासती ॥ ४ ॥ चि० ॥ विर अक्षर दोय मंत्र, जपती नित्य जपमा लिका ॥ चि० ॥ नक्ति सोवन रसी देह, जेह हजूरी श्राविका ॥ ५ ॥ चि० ॥ नष्टाद नोजाइ साथ, नाथ आगल ऊनी रही ॥ चि० ॥ प्रश्न पूछे कर जोडी, प्रनुजी उत्तर देता सही ॥ ६ ॥ चि० ॥ जागता जंघ ता कोण, उद्यमी आलसु कोण नला ॥ चि० ॥ धर्मी अधर्मी लोक, शतक बारमे नगवइ वरा ॥ ७ ॥ चि० ॥ सुणि हरखित कहे देव, महेर नजर महोटा तणी ॥ चि० ॥ थइ हुं जगविख्यात, जो प्रनु पोता

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

नी गणी ॥ ८ ॥ चि० ॥ विचरो देश विदेश, पण मुऊ हृदय वसो सदा ॥ चि० ॥ श्रीशुजवीर जिणंद, ठेह्ह न देशो मुऊ कदा ॥ ए ॥ इति ॥ ए२ ॥

॥ अथ गहूंली त्राणुमी ॥

॥ सुण वात कहुं साहेली रे, गुरु गुण गावा टेव पडी ॥ नहिं आवे फरी आ एवी रे, पुण्यतणी आ एक घडी ॥ सुण० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ सहु सखी यो मलीने चाली रे, गुरु आगल जइ पाय पडी ॥ एकेक थकी अधिकेरी रे, गुरुगुण गाती हर्ष धरी ॥ सु० ॥ २ ॥ जव अनंता जमतां रे, पुण्य संयोगें योग मल्यो ॥ जिनवाणी अती मीठी रे, सुरतरु महारे आज फल्यो ॥ सु० ॥ ३ ॥ संसारसमुद्रने तरवा रे, जोने एहिज जाहज समी ॥ जिनवाणी अतिसारी रे, जविजनने हृदयें अतिय गमी ॥ सु० ॥ ४ ॥ योग्य जीवने हितकारी रे, शांत सुधारस ए वाणी ॥ नय निक्षेप प्रमाणी रे, अनेक गुणनी जे खाणी ॥ सु० ॥ ५ ॥ रत्नत्रयनुं कारण रे, तारण जव्यने एह सही ॥ सरस सुधारस जेहवी रे, देवेंद्रसूरियें एह कही ॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रजु मुखबिंटथी खरती रे, गणधर लीये चित्त धरी ॥ अंग उपांगनी रचना रे, नय

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गम जंग अनेक करी ॥ सु० ॥ ३ ॥ प्रवचन कुशमे गुं थी रे, मुनिवर राजने कंठ ठवी ॥ देवेंद्र सूरि एम जांखे रे, जविजन प्राणी ए खेत जणी ॥ सु० ॥ ८ ॥ स्वस्तिक पूरे मनरंगें रे, गुरु मुख जोती सुविशाला ॥ प्रेमेथी जविजन जावो रे, अमर लहे वर शिव बाला ॥ सु० ॥ ए ॥ इति ॥ ए३ ॥

॥ अथ रूपैयानी गहुंली चोराणुंमी॥ धोलनी देशीमां॥

॥ देश मूलकने रे परगणां, हाकम हुकम करंत ॥ ठडिदार चोपदार उजला, ए सहु महोटा जाइ धरंत ॥ रूपैयानी शोजा रे शी कहुं ॥ १ ॥ कसबी ठोगाली पालखी, रथ धरी घूघरमाल ॥ सेवक हींमे रे मलप ता, धनपाल घोडीनी चाल ॥ रूपैया० ॥२॥ उंचा उंचा मंदिर मालियां, खाजलीयाला ठे गोंख ॥ कोरणी याला ठे गोख ॥ रू० ॥३॥ आवो बेसो रे सहु करे, वली दीये आदर मान ॥ तोये पण बेसे नहीं, नहीं सां जले देइ कान ॥ रू० ॥ ४ ॥ निर्धन आवे रे ढूक डो, न दीये आदर मान ॥ महोटुं मरडी नीचुं जूए, पग मेलवानुं नहिं ठाम ॥ रूपैया० ॥ ५ ॥ ग्रथ वि नानो रे गांगलो, गरथें गांगा रे शेठ ॥ गरथ विनाना रे शेठीया, दीसे करता रे वेठ ॥ रू० ॥ ६ ॥ विवा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

वाजमें ऊजला, संपत्ति नाम धराय ॥ जगमां कहेवा या रे ऊजला, ए सहु महोटा नाइ पसाय ॥ रू० ॥ ७ ॥ संग्राम शोनी रे वावरे, महोरो ढत्रीश हजार ॥ वस्तुपाल तेजपाल ऊजला, ए सहु जगत मझार ॥ रू० ॥ ८ ॥ दीपविजय कविराजने, होजो मंगल मा ल ॥ जगमां कहेवाया रे ऊजला, कोरडीयालाने मा न ॥ फूदडीयालाने मान ॥ रू० ॥ ए ॥ इति ॥ ए४ ॥

॥ अथ गहूंली पंचाणुंमी ॥

॥ एतो अमल कप्प उद्यानमां, देवाची नारी ॥ एतो रूपकला गुण जारी हो ॥ एतो धारी रे सम जाली रे, आवी वंदे वीरने जी ॥ १ ॥ देइ प्रदक्षिणा खामीने ॥ दे० ॥ एतो निज निज नाम सुणावी हो ॥ एतो जावे रे वधावे रे प्रजुने नाचे रंगशुं जी ॥ २ ॥ ढम ढम ढमके वींढीया ॥ दे० ॥ एतो घम घम घूघरा वागे हो ॥ एतो रागे रे प्रजु आगे रे संगे स्वर आलापती जी ॥३॥ जणणण वीण वजावती ॥दे०॥ एतो घणणण घुमणी लेती हो ॥ एतो देती रे कर ताली रे, ताली गाती गीतने जी ॥४॥ दौं दौं धप मप ढंदशुं ॥दे०॥ ए तो वागे मृदंग सुरूंगी हो ॥ एतो रंगी रे गुण संगी चंगी वागे वांसली जी ॥५॥ थेइ थेइ थेइ मुख उच्चरे ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

दे० ॥ एतो बिच बिच अंगने वाली हो ॥ एतो बाली रे सुकुमाली रे, जाली मुखडुं वीरनुं जी ॥ ६ ॥ लली लली देती उवारणां ॥ दे० ॥ एतो समकित निर्मल करती हो ॥ एतो धरती रे गुण धरती रे, जिहां प्रजुजी विचरता जी ॥७॥ एणी परें नाची नमी करी ॥ दे० ॥ एतो अनुजव सुख मतवाली हो ॥ एतो गाली रे निज जव टाली रे दुःखडुं पहोती स्वर्गमां जी ॥ ८ ॥ वाचक रामविजय कहे ॥ दे० ॥ एतो समकितवंतनी करणी हो ॥ एतो वरणी जिनजक्ति नीसरणी हो ॥ शिव मंदिर तणी जी ॥ ए ॥ इति ॥ ए५ ॥

॥ अथ गहूंली उलुंमी ॥

॥ ते तरिया जाइ ते तरिया ॥ ए देशी ॥

॥ आज नगरमां महिमा उजव, जलें अम्ह गुरु आव्या रे ॥ संघ सहुने मनमां जाव्या, आणंद हरखें व धाव्या रे ॥ आज० ॥ १ ॥ पंच समिति त्रण गुप्तियें गुप्ता, उक्काय जीवने पाले रे ॥ पंच माहाव्रत सूधां धारे, पंचाचारशुं माले रे ॥ आज० ॥ २ ॥ आगम गुरुनो सांजली हर्षित, वंदन बहु जन आवे रे ॥ नर नारी तो मलि मलि टोलें, गुरुगुण गहूंली गावे रे ॥ आज० ॥ ३ ॥ शुजपरिणति वर पट्ट बिठाइ, आतम

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

थाल लइ हाथे रे ॥ शुजरति कुंकुम निजगुण तांडुल, समकित श्रीफल साथें रे ॥ आज० ॥ ४ ॥ जिनवाणी बहुरंगी उंढणी, उंढी मनने भावे रे ॥ ज्ञानादिक गुण लूहणां रूडां, भावशुं शालि वधावे रे ॥ आज० ॥ ५ ॥ द्रव्यने भावें गुरुने वंदी, सांभलो वीर प्रभु वाणी रे ॥ तप जप नियम व्रत बहु कीजे, मलुक भावना आणी रे ॥ आज० ॥ ६ ॥ इति ॥ ए६ ॥

॥ अथ गहूंली सत्ताणुंमी ॥

॥ आंबसाल उद्यानमां, कांइ विचरंता वीर जिणंद रे ॥ समवसरण देवे रच्युं, कांइ बेठा नयनानंद ॥ जिनजीने बोलडीये ॥ मोह्या मोह्या रे सुर नर लोक ॥ जि० ॥ १ ॥ पर्षदा बार तिहां मली, कांइ बेठी नमी शुभ चित्त रे ॥ कोडी गमे सेवा करे, कांइ निर्जर नेपुर हुंत ॥ जि० ॥ २ ॥ चउमुख चउदिशि वीरजी, कांइ देवे देशना सार रे ॥ दान शीयल तप भावना, कांइ शिवपुर मारग चार ॥ जि० ॥ ३ ॥ चार निकायना देवता, कांइ अण हूंते एक कोडी रे ॥ सेवा करे प्रभुजी तणी, कांइ उभा बे कर जोडी ॥ जि० ॥ ४ ॥ वनपालकें जइ वीनव्यो, कांइ श्रीकोणिक महाराय रे ॥ सपरिवारशुं आवियो, कांइ बेठो नमि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रभु पाय ॥ जि० ॥ ५ ॥ समतारसमयी देशना, कांइ जांखे वीर कृपाल रे ॥ नयगर्भित सुणी बोलडा, कांइ हरख्यो चित्त भूपाल ॥ जि० ॥ ६ ॥ मिथ्यामत दूरें टळ्यो, कांइ ऊग्यो समकित सूर रे ॥ मोह महामद मोडियो, कांइ प्रगट्यो आतम नूर ॥ जि० ॥ ७ ॥ कोणिक घरणी धारणी, कांइ जरी अक्षत शुचि थाल रे ॥ जिन आगल स्वस्तिक करे, कांइ कुंकुम रंग रसाल ॥ जि० ॥ ८ ॥ मलीने सौ गावे तिहां, कांइ प्रभु गुण भक्ति सलोक रे ॥ ज्ञान सुजस विनोदमां, कांइ मग्न हुआं बहु लोक ॥ जि० ॥ ए ॥ इति ॥ए७॥

॥ अथ गहूंली अठाणुंमी ॥

॥ कठमारां हो नणदि वाजां वाजीयां ॥ ए देशी ॥ पंच महाव्रत हो पालता, पालता जिव ठ काय ॥ मोरी आठी बहेनी, चतुर चोमासु गुरुजी आविया ॥ ए आंकणी ॥ संघ सहुने हो मन भावता, भावता प्रवचन माय ॥ मोरी० ॥ च० ॥ १ ॥ गाम गाम हो भवि बोधता, रोधता विषय प्रमाद ॥ मो० ॥ पूण्य प्रभावें हो गुरु इहां, मलिया धर्मना वाद ॥ मोरी० ॥ च० ॥ २ ॥ शोल शणगार सजी सुंदरी, गावेजी गीत रसाल ॥ मोरी० ॥ गहूंली रचे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मन रंगशुं, सुणीयेंजी सूत्र विशाल ॥ मोरी० ॥ च० ॥ ३ ॥ धवल मंगल गावे गोरडी, वाजंते ढोल निशा न ॥ मोरी० ॥ खलि खलि कीजें जी लुठणां, धरता जी धर्मनुं ध्यान ॥ मोरी ॥ च० ॥ ४ ॥ नगर लोक स हु हरखियां, वाध्योजी धर्मनो रंग ॥ मोरी० ॥ वीर शासन मांहे एहवा, मलूक नाव अनंग ॥ मो० ॥५॥

॥ अथ चक्केसरी मातानी गरबी नवाणुंमी ॥

॥ अलबेली रे चक्केसरी मात, जोवाने जइयें ॥ जेह नां सोवन वर्णां गात्र, जोवाने जइयें ॥ ए आंकणी ॥ जोवा जइयें पावन थइयें, देखी मन गहगहीयें रे ॥ एक तीरथ बीजी जगदंबा, वंदी संपत लहीयें ॥ जो० ॥ अ० ॥ १ ॥ आठ नुजाली अति लटकाली, मृगपति वाहन वाली रे ॥ जिनगुण गाती ले ती ताली, तीरथनी रखवाली ॥ जो० ॥ अ० ॥ २ ॥ श्री सिद्धाचल गिरि पर गाजे, देवी देव समाजे रे रंगित जाली गोख बिराजे, घडी घडी घडीयालां वा जे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ३ ॥ घाटडी लाल गुलाल सोहा वे, पीला राता चरणा रे ॥ बहु शोजे छे जग जननी ने, केशर कुंकुम वरणा ॥ जो० ॥ अ० ॥ ४ ॥ खलके कर कंकणने चूडी, नवसरो हैयडे हार रे ॥ रत्नजडि

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त झांझर ठे चरणे, घूघरीयें घमकार ॥ जो० ॥ अ०
॥ ५ ॥ नाके मोती उज्ज्वल वाने, बाजुबंध बेहु बांहे
रे ॥ केडे कटि मेखला रणजणती, झलके हीरा मांहे
॥ जो० ॥ अ० ॥ ६ ॥ देश देशना न्हाना महोटा, सं
घ लइ संघवी आवे रे ॥ ते सहु पहेलां श्रीफल चून
डी, जगजननीने चढावे ॥ जो० ॥ अ० ॥ ७ ॥ धन्य
धन्य ए श्रीपुंमरगिरि जिहां, जगदंबानो वास रे ॥
जे कोइ ए तीरथने सेवे, तेहनी पूरे आश ॥ जो० ॥
अ० ॥ ८ ॥ संघवी संघतणी रखवाली, श्रीजिन सेवा
कारी रे ॥ दीपविजय कहे मांगलिक करजो, ठे बहु
शोज्ञा तारी ॥ जो० ॥ अ० ॥ ए ॥ इति ॥ एए ॥

॥ अथ गहूंली शोमी ॥

॥ शामलिया शामजी रे ॥ ए देशी ॥

॥ ज्ञानगुणें वस्या रे, अरिहा अजित जिणंद नग
वान ॥ आवी समोसस्या रे, नयरी साकेतन उद्या
न ॥ साथें पटोधरा रे, सिंहसेनादिक वर गणधार ॥
एक लाख मुनिवरा रे, ज्ञान क्रियाना जे नंमार ॥१॥
रूपक आरोहिने रे, मुनि गुणठाणे वधता जाय ॥
वर निरमोहीने रे, केइ मुनि घाती करम खपाय ॥
केइ परिपाटीयें रे, डुक्कर तप अनिग्रह करनार ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

इम बहु घाटीयें रे, प्रभुने संगे छे परिवार ॥ १ ॥ सहु देवें मली रे, कीधुं समवसरण मंडाण ॥ बेठा मन रली रे, त्रीजा गढमां त्रिभुवन नाथ ॥ जइ आ रामीयें रे, दीधी वधाइ प्रभुनी ताम ॥ षटखंड सा मीयें रे, पूरित मनोवंछित काम ॥ ३ ॥ बहु आडंब रें रे, आवे चक्रिसगर उत्साह ॥ भक्ति पुरस्सरें रे, वांदे प्रभुजीना पाय ॥ प्रभु दीये देशना रे, भवियण ने प्रेम प्रकाश ॥ चार प्रकारने अनुसरी रे, पामो भवियण भव निस्तार ॥ ४ ॥ सखीयें परवरी रे, ना में रत्न सुकेशा नार ॥ अति हरखें करी रे, पूरे मंगल आठ उदार ॥ त्रण खमासणें रे, वांदे वधावे थइ उ माल ॥ रंगभरथी सुणे रे, प्रभुनां अमृत वयण रसा ल ॥ ५ ॥ इति ॥ १०० ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने एकमी ॥

॥ द्वारिका नयरी सुंदरु ॥ तारुजी ॥ सहसावन अ जिराम हो ॥ गुणवंती गहूंली करे फागमां ॥ वारुजी ॥ १ ॥ नेम जिणंद समोसरया ॥ ता० ॥ वनपा लक दीये वधाइ हो ॥ गु० ॥ श्रीकृष्ण अग्रमही षी अष्टशुं ॥ ता० ॥ वंदन पडह वजाय हो ॥ ॥ गुरु० ॥ २ ॥ पंच अभिगम साचवी ॥ ता० ॥ वांदे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

तिहा गोविंद हो ॥ गु० ॥ जगगुरु आगल गहूंली करे ॥ ता० ॥ देखी प्रभु मुख अरविंद हो ॥ गु० ॥ ॥ ३ ॥ अरूआरख चोक उपरें ॥ ता० ॥ भक्ति कुंकुम रंग रोल हो ॥ गु० ॥ पंच प्रमादनी तर्जना ॥ ता० ॥ पंच रत्न ठवित अमोल हो ॥ गु० ॥ ४ ॥ ज्ञान गुलाल उडावतां ॥ ता० ॥ तप अबीर भरि भरि मूठि हो ॥ गु० ॥ दर्शन पीचकारी भरी ॥ ता० ॥ चारित्र परिमल उत्कंठी हो ॥ गु० ॥ ५ ॥ भावना व संत गाये तिहां ॥ ता० ॥ गिरुआ नेमनी पास हो ॥ गु० ॥ समकित फगुवा तिहां दिये ॥ ता० ॥ जे थी जाये भवनी काश हो ॥ गु० ॥ ६ ॥ गहूंली एणी परे कीजीये ॥ ता० ॥ पामे मुक्ति विलास हो ॥ गु० ॥ पंमित ज्ञान शिवपद लहे ॥ ता० ॥ विनयें सफल होये आश हो ॥ गु० ॥ ७ ॥ इति ॥ १०१ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने बेमी ॥

॥ रामचंदके बाग, चांपो मोरी रह्यो री ॥ ए देशी॥ चंपानयरी उद्यान, सुरतरु मोरी रह्यो री ॥ वीर पटोधर धीर, सोहम आय रह्योरी ॥ १ ॥ जीय कोह जीय मान, माया लोज दहोरी ॥ संपूरण श्रुतज्ञान, जिनवर बिरुद वह्योरी ॥ २ ॥ आश्रव विषय प्रमाद,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

निद्रा पंच तजेरी ॥ दशविध सामाचारी, षटविध ज यणा जजेरी ॥ ३ ॥ उपकारें धरे बार, जावना तप पडिमारी ॥ निःकारण जगबंधु, रवि शशी मेह समा री ॥ ४ ॥ कंचन कमल विचाल, बेसी धर्म कहेरी ॥ जेहथी जवियण लोय, आतम तत्त्व लहेरी ॥ ५ ॥ कोणिक नृपति नारि, घोयली गेली करेरी ॥ माणक मोति वधाय, पुण्य जंभार जरेरी ॥ ६ ॥ जिनशासन नी जक्ती, करतां पाप हरेरी ॥ सोहव सरिखे साद, घोयली गीत जणेरी ॥ ७ ॥ इति ॥ १०२ ॥

॥ अथ गहूंली एकशोने त्रणमी॥आठेलालनी देशी॥

॥ ज्ञानादिक गुणखाण, राजगृही उद्यान ॥ गणधर लाल ॥ सोहम सामी समोसर्या जी ॥ १ ॥ कंचन गौर शरीर, वाणी गंगा नीर ॥ ग० ॥ त्रिहुं पंथें प सरे सदा जी ॥ २ ॥ अंग उपांगह बार, दशविध रुचिनो धार ॥ ग० ॥ डुगविध शिक्षा उपदिसे जी ॥ ३ ॥ तेर क्रिया व्रत बार, गिहि पडिमा अगीया र ॥ ग० ॥ श्रावक गुण जेद सिऊना जी ॥ ४ ॥ विनय वैय्यावच्च कल्प, धरे दशविध ठ अकल्प ॥ ग० ॥ वंदन दोष विकथा तजे जी ॥ ५ ॥ कुंकुम रोल कचोल, गहूंली करे रंगरोल ॥ ग० ॥ अक्षत श्री

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

फल उपरें जी ॥ ६ ॥ मगधाधिपनी नारी, शील स
जी शणगार ॥ ग० ॥ ललि ललि करती लूंछणां जी
॥ ७ ॥ जोती गुरुमुख चंद, पामती परमानंद ॥ ग० ॥
चतुर चकोरडी गोरडी जी ॥ ८ ॥ सुरवधू नरवधू को
डि, मलि मलि सरखी जोडि ॥ ग० ॥ गावे जिनशा
सन धणी जी ॥ ए ॥ इति ॥ १०३ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने चारमी ॥

॥ पंचम पदने गाइयें रे ॥ ए देशी ॥

॥ श्रुतनाणी श्रुतधर गुरु रे, पंचाश्रवना त्यागी रे ॥
दशत्रिक वेत्ता जाव समेता, संवर तप सोजागी ॥
धन गुरु वंदो रे ॥ वंदो रे जगत हितकारी ॥ धन० ॥
॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ जीवाजिगम ए सूत्रजमांहे,
जीवाजीव विचार रे ॥ इग डु ति चउ पण छविहा,
जूजूआ जेद उदार ॥ धन० ॥ २ ॥ शशी रवि ग्रह
नक्षत्र तारा, जंबु लवणें बमणा रे ॥ धाइय त्रिगुणा
जाणजो सघले, चउदिशि फरे परिज्रमणा ॥ धन०
॥ ३ ॥ इण परें देशना दिये गुरु नाणी, पुण्य पाप
उलखाणी रे ॥ श्रद्धा जासन तत्त्वरमणथी, थाये
अनुजव नाणी ॥ धन० ॥ ४ ॥ श्रद्धावंत सुश्राविका
रे, निसुणी श्रीजिनवाणी रे ॥ सन्मुख जोती अक्षत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पूरती, मुक्तिपदनी निशानी ॥ धन० ॥ ५ ॥ चिहुं ग
ति दुःखडां चूरती रे, ठवती पंच रतन्न रे ॥ प्रजुगुण
गाती पाप पखालती, प्रणमी थुणती धन्य ॥ धन० ॥
॥ ६ ॥ मुक्ताफल वर थाल वधावी, लेती समकित
रंग रे ॥ जगगुरुनो विनय साचवती खेमें, धरती ध्या
न तरंग ॥ धन० ॥ ७ ॥ इति ॥ १०४ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने पांचमी ॥

॥ गोकुल मथुरां रे वाला ॥ ए देशी ॥

॥ महासेन वनमां रे आवे, तिहां श्रीवीरजिणंद
सुहावे ॥ समवसरण तिहां सुर विरचावे, चोशठ इंद्र
नमे अर्चावे ॥ महा० ॥ १ ॥ शम दम शांत गुणें ते
जरिया, जाणे जंगम नाणना दरीया ॥ चौद सहस
मुनिशुं परवरिया, राजगृही नयरी संचरीया ॥ महा०
॥ २ ॥ राजा श्रेणिक वंदन आवे, चेलणा राणी साथे
सुहावे ॥ बारे पर्षदा वंदे जावे, देशना सुणी मन रंज
न थावे ॥ महा० ॥ ३ ॥ गुरुमुख आगल गहूंली की
जें, नरजव पामी लाहो लीजें ॥ कुंकुम घोली मोतीडे
वधावे, जावें समकित शुरूज थावे ॥ महा० ॥ ४ ॥
श्री चंद्रोदय रत्नसूरिंद, निर्मल उग्यो पूनम चंद ॥
जाणे जंगम मोहन वेली, टोलें मलि मंगल गाय सा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हेली ॥ महा० ॥ ५ ॥ गहूंली गाइ रंग रसाली, गुणि जन हृदय कमलमां वाली ॥ श्रीविजयराज सूरीश्वर राया, जे प्रणमे ते शिव सुख पाया ॥ म० ॥६॥इति ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने छठी ॥

॥ चालो साहेली, जंगम तीरथ वंदन करवा जइयें, हां रे मुनि मुख निरखी, आपण सरवे साथें पावन थइयें ॥ चा०॥ पंच महाव्रत तो जे नित्य पाले, समिति सम दृष्टि समजाले॥षटकायजीव नित्य प्रतिपाले, पंचेंद्रिय विषयने टाले॥चालो०॥१॥ नवविध ब्रह्म गुप्ति जे धारे, चार कषाय चोरने वारे ॥ वली त्रण दंडने मनशुं वारे, त्रण गुप्तिशूं आतम तारे ॥ चा० ॥ २ ॥ थावर निरय तिरि गति नावे, देव मनुष्य पदवि पावे ॥ एम शुरू संयम मन जावे, ते मुनिवर मुक्ति जावे ॥ चा० ॥ ३॥ राग द्वेषने जेणे परहरिया, मुनि गुण समतारसना दरिया॥ एम गुण सत्तावीशें जरिया, ते मुनिवर शिवर मणी वरिया ॥ चा० ॥ ४ ॥ गणधर आगल गहूंली कीजें, कुंकुम अक्षत थाल जरीजें ॥ सुणी वाणी दीलडां रीजे, नरजव पामी लाहो लीजें ॥ चा० ॥ ५ ॥ द्वादश अंग गुणें जरिया, जिन मारग आराधे करिया ॥ जेणें तार्या छे आपणा परिया, संवेग सुधारस

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

संचरिया ॥ चा० ॥ ६ ॥ विजयराज सूरीश्वगछराया, पट्टोधर चंद्रोदय गाया ॥ जिनवाणी सुधारस पाया, नवि जीवें निर्मल गुण गाया ॥ चा० ॥ ७ ॥ १०६ ॥

॥ अथ गहूंली एकशोने सातमी ॥ थारा महेला उपर मेह झरूखे विजली ॥ हो लाल ॥ झ० ॥ ए देशी ॥

॥ शोल करी शणगार, सोहागण नामिनी हो लाल ॥ सोहागण नामिनी ॥ उंढी नवरंग घाट, चाले गज गामिनी हो लाल ॥ चा० ॥ शीलवती कर थाल, ग्रही कुंकुम जरी हो लाल ॥ ग्रही० ॥ आवे समोसरण मांहे, हैये उलट धरी हो लाल ॥ हैये० ॥ १ ॥ सिंहा सन मणि पीठ, विराजत जगधणी हो लाल ॥ विरा० ॥ वीरजिनेश्वर वाणि, वखाणे अति घणी हो लाल ॥ वखा० ॥ षट घटि पर्यंत, प्रकाशे परवडो हो लाल ॥ प्रका० ॥ नैगम अर्थ प्रवाह, त्रिजुवन दीव डो हो लाल ॥ त्रिजु० ॥ २ ॥ कुमति मत अंधकार, हरे ज्युं दिनमणि हो लाल ॥ हरे० ॥ पार्षद हर्षित थाय, लहे जिम सुरमणि हो लाल ॥ लहे० ॥ सुणी प्रजुनी वाणी, करे गुण गहूंअली हो लाल ॥ करे० ॥ आढो चोखा मान, सोपारी झजली हो लाल ॥ सो पा० ॥ ३ ॥ वधावे मुनिराय के, दिलमांहे हरखती

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

हो लाल के ॥ दिल० ॥ गुरु मुख पूनमचंद के, नय णे निरखती हो लाल के ॥ नय० ॥ पामी स्त्री अव तार, गणे ए सारता हो लाल ॥ गणे० ॥ खारा समु द्र मांहे, ए मीठी वारता हो लाल ॥ ए मीठी० ॥ ४ ॥ गोरी गावे गीत, गुरु गुण रस चढी हो लाल ॥ गुरु० ॥ राग द्वेष दोय चोर, संघातें अति वढी हो लाल ॥ संघातें० ॥ करे प्रशंसा देव के, धन धन ए वशा हो लाल के ॥ धन० ॥ मनुजपणानो लाहो, ली ये ठे शुभदशा हो लाल के ॥ लीये ठे० ॥ ५ ॥ पधारे देवठंदें, तीर्थंकर मलपता हो लाल ॥ तीर्थं० ॥ आ वी बेसे पदगाण, श्रीगौतम दीपता हो लाल ॥ श्री गौ० ॥ सूत्र तणी जलधार, वरसावे वेगशुं हो लाल ॥ वरसावे० ॥ विबुध दर्शन वृद्ध, वधारे नेगशुं हो लाल ॥ वधारे० ॥ ६ ॥ इति ॥ १०७ ॥

॥ अथ पर्यूषणस्तुति एकशो आठमी ॥

॥ परव पजूसण पुण्यें पामी, श्रावक करे ए करणी जी ॥ आठे दिन आचार पलावे, खंमण पीसण ध रणी जी ॥ सूक्ष्म बादर जीव न विणासे, दया ते म नमां जाणे जी ॥ वीरजिनेसर नित पूजीने, सूधो समकित आणे जी ॥ १ ॥ व्रत पाले ने धरे ते शुद्धि,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पाप वचन नवि बोले जी ॥ केसर चंदनें जिन सवि पूजे, जवजय बंधन खोले जी ॥ नाटक करीने वाजि त्र वजाडे, नर नारीने टोलें जी ॥ गुण गावे जिनवर ना इण विध, तेहने कोइ न तोले जी ॥ २ ॥ अठम जत्त करी खइ पोसह, बेसी पौषध साले जी ॥ राग द्वेष मद मत्सर ढांकी, कूड कपट मन टाले जी ॥ कल्पसूत्रनी पूजा करीने, निशिदिन धर्मे माले जी ॥ एहवी करणी करतां श्रावक, नरक निगोदिक टाले जी ॥ ३ ॥ पडिक्कमणुं करियें शुद्ध जावें, दान संव त्सरी दीजें जी ॥ समकेतधारी जे जिनशासन, रात्रि दिवस समरीजें जी ॥ पारणवेला पडिलाजीने, मनो वांछित महोत्सव कीजें जी ॥ चित्त चोखे पजूसण क रशे, मन मान्यां फल लेशे जी ॥ ४ ॥ इति ॥ १०८ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने नवमी ॥

वीरजीने वचने अमृत रस झरे रे ॥ ए देशी ॥

॥ जक्ति करीजें रे जवि श्रुतधर तणी रे, जेहनी सा ख जरे जिणदेव ॥ संदेह पूठीजें नित मेव ॥ जक्ति० ॥ १ ॥ तुंगीया नामें रे नगरी अति जली रे, जिहां श्रावक बारे व्रतधार ॥ जेहनां मोकलां घर तणां बार ॥ जक्ति० ॥ २ ॥ गुणना रागी रे जाण नवत

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

त्वना रे, जिनमतरंजित जेहनी मींज ॥ वाव्युं सम
कित सुरतरु बीज ॥ जक्ति० ॥ ३ ॥ तेणहिज नयरे
रे थिविर समोसर्या रे, पाश संतानीया श्रुत जंकार
॥ साथे पांचशें ठे अणगार ॥ जक्ति० ॥ ४ ॥ पुप्फवई
चैत्यें रे अवग्रह अवग्रही रे, ते सुणी श्रावक हर्षित
थाय ॥ गुरुपद वांदवा संघ तिहां जाय ॥ जक्ति० ॥
५ ॥ गहूंली करे रे शुज चित्तें श्राविका रे, गुरु मुख
निरखी हर्षित थाय ॥ वांदी बेसे यथोचित ठाय ॥
जक्ति० ॥ ६ ॥ धर्म सुणीने रे श्रावक वीनवे रे, सं
यम फल तपफलथी होय ॥ पूठ्या प्रश्न तिहां एम
दोय ॥ जक्ति० ॥ ७ ॥ संयम करुं रे फल अनाश्रव
कह्युं रे, तपफल निर्जरा ते होय ॥ एम कहे उत्तर
मुनि सहु कोय ॥ जक्ति० ॥ ८ ॥ वली ते पूठे रे क
हो तुमे पूज्यजी रे, तो किम देवगति ते जाय ॥ गुरु
कहे सांजलो महानुजाव ॥ जक्ति० ॥ ए॥ सुरपणुं हो
वे रे सराग संयमें रे, शेष करमथी ते थाय ॥ इम सु
णी सहु निज निज घर जाय ॥ जक्ति० ॥ १० ॥ जग
वती अंगें रे जांखे वीरजी रे, एहमां नहीं कोइ संदे
ह ॥ श्रीविजयउदय सूरि मुखथी एह ॥ कहे मुनि
रामविजय गुण गेह ॥ जक्ति० ॥ ११ ॥ इति० ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ गहूंली एकशो दशमी ॥

॥ साहेली महारी राजगृही उद्यान, प्रनुजी समो सखारे लोल ॥ सा० ॥ गणधर मुनिवर सहस, चौद शुं परिवस्या रे लोल ॥ सा० ॥ करता नवि उपकार, दया मन धारीने रे लोल ॥ सा० ॥ सकल जंतु प्रति पाल, बिरुद संनारीने रे लोल ॥ १ ॥ सा० ॥ लीधो ठे अवतार, जगत प्रतिबोधवा रे लोल ॥ सा० ॥ चउगइ डुःख जंजाल, प्रतिमल रोधवा रे लोल ॥सा० अणहूंते सुरकोडि, सेवामां नित्य रहे रे लोल ॥ सा०॥ कर जोडी मोडी मान, आणा शिर निर्वहे रे लोल ॥ २ ॥ सा० ॥ चार निकायना त्रिदश, मली त्रिगडो करे रे लोल ॥ सा० ॥ चार गाउ परमाण, चतुर्मुख उच्च रे रे लोल ॥ सा० ॥ जिनमुख पूरव पाय पीठ, बिराजे गणधरू रे लोल ॥ सा० ॥ आठ पर्षदा सुरराज; चार तिहां नरवरू रे लोल ॥३॥ सा० ॥ कहे वनपाल नूना थनें, नाथ जी पधारिया रे लोल ॥ सा० ॥ मगधाधिप नूपाल, नुजाल मनरंजीया रे लोल ॥ सा० ॥ देइ वधामणी सार के, जिनगुण गावतो रे लोल ॥ सा० ॥ कंचन रजत ते आठ, दूरथी वधावतो रे लोल ॥ ४ ॥सा०॥ हय गय रह नड चतुरंग, सैन्य नरनारशुं

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

रे लोल ॥ सा० ॥ शेठ सेनापति अंतेउर, परिवारशुं रे लोल ॥ सा० ॥ धुरथी त्रण प्रदक्षिणा, वंदे सुख क रू रे लोल ॥ सा०॥ पामी यथोचित ठाम, बेसे तिहां न्यूधरु रे लोल ॥ ५ ॥ सा० ॥ मुक्तिक स्वस्तिक राणी, चेलणा पूरती रे लोल ॥ सा० ॥ विच विच जिनमुख देखती, दुःखडां चूरती रे लोल ॥ सा०॥ धाराधर जि म वीर, वाणी प्रकाशतां रे लोल ॥ सा० ॥ तप जप संयम करी, सुख पामी शाश्वतां रे लोल ॥६॥सा० ॥ सर्व विरति देश विरति, जिनमुख उच्चरे रे लोल ॥ सा० ॥ रयणी जोजन केइ, ब्रह्मचर्य मन धरे रे लोल ॥ सा० ॥ जंजा सारादियादि, पुर जणी आवी या रे लोल ॥ सा० ॥ विजयलक्ष्मी सूरिंद के, गुरुगुण गाइया रे लोल ॥ ७ ॥ इति ॥ ११० ॥

॥अथ मुनिराज श्रीमोहनलालजी माहाराज मुंबइमा पधार्या ते वखते बनावेली गहूंली एकशोने अग्यारमी ॥ सजनी मोरी, पासजिणंदने पूजो रे ॥ स० ॥ दु नियामां देव न दुजो रे ॥ स० ॥ सुहित गुरु अहिं आव्या रे ॥ स० ॥ सहु संघतणे मन भाव्या रे ॥ १ ॥ स० ॥ मोहनलालजी माहाराज रे ॥ स० ॥ सुणजो सहु अधिकार रे ॥ स० ॥ पंच महाव्रत सूधां पाले रे

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ स० ॥ शास्त्र तणे अनुसारें रे ॥ २ ॥ स० ॥ स मता गुणना दरीया रे ॥ स० ॥ क्रिया पात्रना जरी या रे ॥ स० ॥ ज्ञान तणा भंडार रे ॥ स० ॥ क हेतां न आवे पार रे ॥ ३ ॥ स० ॥ मधुरी वाणी यें जांखे रे ॥ स० ॥ संघ स्वाद सर्वे चाखे रे ॥ स० ॥ प्रश्न व्याकरण वंचाय रे ॥ स० ॥ आश्रव संवर अ र्थ थाय रे ॥ ४ ॥ स० ॥ उपर चरित्र वंचाय रे ॥ ॥ स० ॥ पृथ्वीचंद कुमार रे ॥ स० ॥ सुणतां वैरा ग्यवंत थाय रे ॥ स० ॥ अज्ञान मिथ्याय हठावे रे ॥ ५ ॥ स० ॥ षट चेला तमें जाणो रे ॥ स० ॥ विनय गुणनी खाणो रे ॥ स० ॥ जोबन वयमां ठे सरखा रे ॥ स० ॥ वंदो पूजो ने हरखो रे ॥ ६ ॥ स० ॥ जंगम तीरथ कहीये रे ॥ स० ॥ वंदीने पा वन थइयें रे ॥ स० ॥ संघना पुण्यें अहीं आव्या रे ॥ स० ॥ जैनधर्मने दीपाव्या रे ॥ ७ ॥ स० ॥ जाव सहित जक्ति करजो रे ॥ स० ॥ पुण्यनी पोठी तमें जरजो रे ॥ स० ॥ जरतबाहु पेरें तरशो रे ॥ स० ॥ समुद्रपार उतरशो रे ॥ ८ ॥ स० ॥ व्रत पच्चरकाण घणां थाय रे ॥ स० ॥ सात क्षेत्रें धन खरचाय रे ॥ स० ॥ देहरे देहरे उछव मंमाय रे ॥ स० ॥ चोथो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

आरो वरताय रे ॥ ए ॥ स० ॥ सधवा स्त्री गहूंली क हाडे रे ॥ स० ॥ मुक्ताफलशुं वधावे रे ॥ स० ॥ नागर पानासुत गावे रे ॥ स० ॥ मगन लागे मुनि पाये रे ॥ स० ॥ पास जिनंदने पूजो रे ॥ स० ॥ दुनियामां दे व न दूजो रे ॥ १० ॥ इति ॥ १११ ॥

॥ अथ मुनिराज श्री मोहनलालजी माहाराजनी ॥
॥ गहूंली एकशो बारमी ॥

॥ हो मुनिवरजी, तुज अति मीठी वाणी मुज म नमां वसी ॥ ए आंकणी ॥ तमें नविक जनोने बोधो ठो, मुक्ति तणो मारग शोधो ठो, वलि काम कषायने रोधो ठो ॥ हो मुनि० ॥ १ ॥ तमें नवसागरथी तरि या ठो, अगणित गुणोथी नरिया ठो, वली ज्ञानतरं गना दरिया ठो ॥ हो मुनि० ॥ २ ॥ तुम दरिसनथी दूरित जावे, सवि जन वलि सुख संपति पावे, नर नारी मलीने गुण गावे ॥ हो मुनि० ॥ ३ ॥ तुम मु ख कमलाकर शोने ठे, नविजन नमराने थोने ठे, मन नुक्तिरमामां लोने ठे ॥ हो मुनि० ॥ ४ ॥ एवा मोहनलालजी मुनिराया, तजी चित्तथकी जेणें मा या, हिरालाल कहे में गुण गाया ॥ हो मुनि० ॥ ५ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ मुनिराज श्री मोहनलालजी माहाराजनी ॥

॥ गहूंली एकशोने तेरमी ॥

॥ मुनिवर संयममां रमता, शिवपुर जावानो ख
प करता, अहो मुनि संयममां रमता ॥ ए आंकणी
॥ मुनिवर विचरंता आव्या, षट चेला साथे लाव्या,
मुंबईना संघने मन भाव्या ॥ मुनिवर० ॥ शि० ॥
अहो० ॥ १ ॥ मुनिवर संयममां शुरा, मुनिवर कि
रियामां पूरा, परिणामें मुनि अति रूडा ॥ मुनि० ॥
शि० ॥ आ० ॥ २ ॥ मुनिजीनी देशना बहु सारी,
भविजनने लागे प्यारी, प्रतिबोध पाम्यां नर नारी ॥
मुनि० ॥ शि० ॥ अ० ॥ ३ ॥ मुनिवरे लाभ घणा ली
धा, श्रीसघनां कारज अति सीधां, उपकार एवा
माहा मुनियें कीधा ॥ मुनि० ॥ शि० ॥ अ० ॥ ४ ॥ मु
निजीनुं नाम घणुं सारू, मोहनलालजी लागे प्यारू
॥ जिनशासन घणुं अजवाळ्युं ॥ मु० ॥ शि० ॥ अ०
॥ ५ ॥ जे मुनिवरना गुण गावे, शिवपुर नगरी वेगे
जावे, मगन कहे मुनिवरने ध्यावे ॥ मु० ॥ शि० ॥
॥ अहो० ॥ ६ ॥ इति ॥ ११३ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ मुनिराज श्री खांतिविजयजी माहाराजनी ॥

॥ गहूंली एकशोने चौदमी ॥

॥ नेक नजर करो नाथजी ॥ ए देशी ॥

॥खांतिविजय मुनि वंदियें, जेथी जवतरु कंद निकंदीयें जीहो, खांतिविजय मुनि वंदीयें ॥ए आंकणी॥ जेनी अमृत धारा सारिखी, गुणखाणी वाणी वखाणीयें जी हो ॥ खांति० ॥ १ ॥ नित्य छठ अठम तप स्या करे, जेनुं सद्याय ध्यानमां ध्यान छे जीहो ॥ खांति० ॥ २ ॥ जेनां ज्ञान तणो महिमा घणो, मानुं केवली हुं कलिकालमां जी हो ॥ खांति० ॥ ३ ॥ जेणे ममता तजी संसारनी, एक मुक्तितणी ममता करी जी हो ॥ खांति० ॥४॥ हिरालाल कहे मुनि ते नमो, जेथी पाप जशे सवि दूरथी जी हो ॥ खांति० ॥५॥

॥ अथ माहामुनिराज श्रीआत्मारामजी माहाराजनी

॥ गहूंली एकशो ने पंदरमी ॥

॥सांजलजो रे मुनि संयमरागी, उपशम श्रेणें चढिया रे ॥ ए देशी ॥ जलुं थयुं रे मारे सुगुरु पधार्या, जिन आगमना दरिया रे ॥ ए आंकणी ॥ ज्ञान तरंगें लेहेरो लेता, ज्ञान पवनथी जरिया रे ॥ जलुं० ॥ १ ॥ आज कालमां जे जिन आगम, दृष्टिपंथ

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

मां आवे रे ॥ गहन गहन एहना जे अर्थो, प्रगट करीनें बतावे रे ॥ ज० ॥ २ ॥ शक्ति नहिं पण जक्ति तणें वश, गुण गावा उल्लसावुं रे ॥ कर्णामृत गुरु चरित्र सुणावी, आनंद अधिक वधावुं रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ दक्षिण दिशि जंबुद्वीपमांहि, एही जरत म झार रे ॥ उत्तर दिशि पंजाब देश जिहां, लेहेरां गाम मनोहार रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ क्षत्रियवंश गणेशचंद घर, जन्म लिया सुख धामें रे ॥ रूपदेवी कुक्षिशुक्तिमां, मुक्ताफल उपमानें रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ लघुवयमां प ण लक्षणथी बहु, दीपंता गुरुराया रे ॥ संगतिथी म ली ढूंढक जनने, ढूंढकपंथ धराया रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ संवत ओगणीशें दशमांही, उज्ज्वल कार्त्तिक मा से रे ॥ पंचमीने दिवसे लिइ दीक्षा, जीवनराम गुरु पासे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ ज्ञान जणया वली देश फि रया बहु, जूनां शास्त्र विलोकी रे, संशय पडिया गुरु नें पूछे, प्रतिमा केम उवेखी रे ॥ ज० ॥ ८ ॥ उत्तर न मिल्या जब गुरुजीनें, ज्ञान कला घट जागी रे ॥ सुमति सखी घट आय वसी जब, ढूंढपंथ दिया त्या गी रे ॥ ज० ॥ ए ॥ धर्म शिरोमणि देश मनोहर, गुर्जर भूमि रसाली रे ॥ ज्यां आवी सुविहित गुरुपा

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

सें, मन शंका सहु टाली रे ॥ ज० ॥ १० ॥ परम क
ऱ्यो उपकार तुमें बहु, श्रीगुरु आतमराया रे ॥ जयवं
ता वरतो आ जरते, दिन दिन तेज सवाया रे ॥ ज०
॥ ११ ॥ दुःसम काल समे गुरुजी तुमें, वचन दीव
डा दीधा रे ॥ शांतिविजय कहे जेथी हमारा, विषम
काम पण सीधां रे ॥ ज० ॥ १२ ॥ इति ॥ ११५ ॥

॥ अथ श्री अचलगच्छपपति पूज्य जट्टारक श्रीरत्न
सागर सूरीश्वरनी गहूंली एकशो ने शोलमी ॥

॥ सहि मोरी घृतकल्लोल प्रभु प्रणमीने, पामी सु
गुरु पसाय हो ॥ सूधी श्राविका ॥ स० ॥ अचलगच्छ
पति गायशुं, विवेकसागर सूरिराय हो ॥ सू० ॥ १ ॥
॥ स० ॥ पंचमहाव्रत पालता, दशविध यतिधर्मसार
हो ॥ सू० ॥ स० ॥ संयम सत्तर प्रकारना, नवविध
ब्रह्मचर्य धार हो ॥ सू० ॥ २ ॥ स० ॥ ज्ञान दर्शन
गुणें पूरिया, क्रोधादिक परिहार हो ॥ सू० ॥ स० ॥
पांच समितियें समिता रहे, चार अभिग्रहना धार
हो ॥ सू० ॥ ३ ॥ स० ॥ पिंडविशुद्धिने शोधता, इंद्रि
य निरोध करनार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ त्रण गुप्तियें गु
प्ता रहे, जावना जावता बार हो ॥ सू० ॥ ४ ॥ स०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

पंचाचारने पालता, टालता कर्मनो चार हो ॥ सू० ॥ स०॥ छठ अठमादिक तप करे, वारे विषय विकार हो ॥ सू० ॥ ५ ॥ स० ॥ गंगाजलसम निर्जला, गुण छत्रीशना धार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ रत्नसागर सूरि पटधरु, लब्धितणा भंडार हो ॥ सू० ॥ ६ ॥ स० विचरंता गुरु आविया, सुंथरी शहेर मझार हो ॥ ॥ सू०॥स०॥ सुरगुरुसम वाणी वाणी सुणी, हरख्यां सवि नर नार हो ॥ सू० ॥ ७ ॥ स० ॥ उगणीशशें पिस्तालीशें, माहाशुदि त्रिज रविवार हो ॥ सू० ॥ ॥ स० ॥ भाग्यवंत दीक्षा लिये, संघ चउविध मनो हार हो ॥ सू० ॥ ८ ॥ स० ॥ दीक्षामहोत्सव हर्ष क री, पामी हर्ष उल्लास हो ॥ सू० ॥ स० ॥ वासक्षेप सूरियें कर्यो, देवा मुक्तिनो वास हो ॥ सू० ॥ ए ॥ स० ॥ उछव रंग वधामणां, हूवे जय जयकार हो ॥ सू० ॥ स० ॥ चिहुं गति पूरण साथियो, करे सो हागण नारि हो ॥ सू० ॥ १० ॥ स० ॥ गुरुगुण गहूं ली गावतां, पातक दूर पलाय हो ॥ सू० ॥ स० ॥ पाटण रहेवासी शामजी, सूरितणा गुण गाय हो सू० ॥ ११ ॥ इति ॥ ११६ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ अचलगच्छपति पूज्य भट्टारक श्री विवेक सागर सुरिनी गहूंली एकशो ने सत्तरमी ॥

॥ रंग रसिया रंगरस बन्यो॥मनमोहनजी ॥ ए देशी॥

॥ श्री सरसति पद प्रणमियें ॥ गुरु सुखकारी ॥ गा यशुं गच्छपति राय ॥ मनडुं मोह्युं रे गुरु सुखकारी ॥ ॥ ए आंकणी ॥ शासनदेवी पसायथी ॥ गु० ॥ सेव तां सवि सुख थाय ॥ म० ॥ गु० ॥ १ ॥ अचलगच्छ पति जाणियें ॥ गु० ॥ श्रीरत्नसागर सूरिराय ॥ म० ॥ ॥ गु० ॥ तास पटोधर दीपता ॥ गु० ॥ श्रीविवे कसागर सूरि राय ॥ म० ॥ गु० ॥ २ ॥ कच्छदेश सोहामणो ॥ गु० ॥ लघु आसंबियो मन जाण ॥ म० ॥ गु० ॥ गोत्रदेवया दीपता ॥ गु० ॥ कुलवट ऊ उंसवंश वखाण ॥ म० ॥ गु० ॥ ३ ॥ टोकरसी सु त शोभता ॥ गु० ॥ जननी कुंता बाइ मात ॥ म० ॥ गु० ॥ वंशविभूषण जाणीयें ॥ गु० ॥ नाम विवेक सिंधु विख्यात ॥ म० ॥ गु० ॥ ४ ॥ मांडवी बंदर मनोहरु ॥ गु० ॥ श्री संघने अतिघणो प्यार ॥ म० ॥ गु० ॥ संघ चतुर्विध मली करी ॥ गु० ॥ करे पा ट महोत्सव सार ॥ म० ॥ गु० ॥ ५ ॥ संवत उंग णीश अठावीशें ॥ गु० ॥ कार्त्तिक वदि पंचम धार

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

म० ॥ गु० ॥ आचारज पद पामिया ॥ गु० ॥ तिहां शोजे शुज शनि वार ॥ म० ॥ गु० ॥ ६ ॥ गीतारथ गुरु आगलें ॥ गु० ॥ शिष्य शोजे सवि सार ॥ म० ॥ गु० ॥ जाचकजन संतोषिया ॥ गु० ॥ जस वध्यो मन प्यार ॥ म० ॥ गु० ॥ ७ ॥ मुक्ताफल मूठी जरी गु० ॥ रचे गहूंली परम उदार ॥ म० ॥ गु० ॥ गुण वंत गावे प्रेमशुं ॥ गु० ॥ गुरु वंदे वारंवार ॥ म० ॥ गु० ॥ ८ ॥ अचलगछपति दीपता ॥ गु० ॥ श्री विवेकसागर सूरिराय ॥ म० ॥ गु० ॥ प्रेमचंद कहे प्रणमतां ॥ गु० ॥ श्रीसंघने कल्याण थाय ॥ म० ॥ गु० ॥ ए ॥ इति ॥ ११७ ॥

॥ अथ अचलगछपति पूज्यजट्टारक श्रीविवेकसागर सूरीश्वरनी गहूंली एकशो ने अढारमी ॥

॥ आ आप उठी उतावली ॥ सहि मोरी रे ॥ में सांज ली मीठी वाण ॥ लागे मुने प्यारीरे ॥ आ आचारज गुरु आविया ॥ स० ॥ आ जक्कपुर बंदर मझार, वात सनूरी रे ॥ १ ॥ आ चरण करण व्रत धारता ॥ स० ॥ आ श्रावक दीये बहु मान, पुण्य पनोतां रे ॥ आ स मिति गुप्ति सूधी धरे ॥ स० ॥ आ पाले प्रवचन माय, पामे ठकुरी रे ॥ २ ॥ आ दश अरूने दिये देशवटो

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ स० ॥ आ पांचशुं राखे प्रेम, वहे जेम धोरी रे ॥ आ अष्टमदने गालवा ॥ स० ॥ आ नवशुं राखे नेह, गुरु ब्रह्मचारी ॥ ३ ॥ आ चार सदा चित्तमां वसे ॥ स० ॥ आ बारशुं जीडे बाथ, आतम अजुवाली रे ॥ एवा गुरुने वांदशुं ॥ स० ॥ आ शोल सजी शणगार ॥ सहियर टोली रे ॥ ४ ॥ आ रजत रकेबी कर धरी ॥ स० ॥ आ मांहे लावो ठीपना पुत्र, कनक कचोरी रे ॥ आ चोकें चाचर चहूवटे ॥ स० ॥ आ थोका थोकें चालो, गाउं गुण गोरी रे ॥ ५ ॥ आ वखाणने अवसरें साथीयो ॥ स० ॥ आ पूरे गुणवंती नार ॥ पुण्य सनूरी रे ॥ आ केसरवहू काढे गहूअली ॥ स० ॥ आ धनबाइ पूरे चोक, चेत चतुरी रे ॥ ६ ॥ आ अमृत सरिखी दिये देशना ॥ स० ॥ आ सांजले श्रुत गुणबाण, वाणी मधुरी रे ॥ आ अचल गछपति शोजता ॥ स० ॥ आ विवेकसागर सूरींद्र, पदवी रूडी रे ॥ ७ ॥ इति ॥ ११८ ॥

॥ गहूंली एकशो उंगणीशमी ॥

॥ प्रणमुं पदपंकज पास रे, जस नामें लीलविलास रे, गाउं गुरुजी मनने उल्लास ॥ सूरीश्वर विनति [illegible] वधारो रे ॥ जुजनगरी चोमासुं पधारो ॥ सू[illegible]

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ १ ॥ शेठ लाडणशा कुलें आया रे, माता जुमा बाइना जाया रे, तेथी गुरुजीशुं अधिकेरी माया ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ २ ॥ करतां एणे देश विहार रे, होशे पुण्यजी लाज उदार रे, मिथ्यात्वी होशे व्रत धार ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ३ ॥ जुजनगरमांहे अधिकारी रे, शेठ शिवजीशा समकेतधारी रे, ते तो वाट जुवे ले तमारी ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ४ ॥ शेठ लाकण ने काटीआ उसवाल रे, वोरा चुखड ने वको डा उदार रे, जुजनगर देवाणी मेवाल ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ५ ॥ रुचिवंती सुश्राविका आवे रे, श्रद्धा समकित स्वस्ति बनावे रे, गुरु सन्मुख मोतीयें वधावे ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ६ ॥ हर्ष ऋद्धिने सुख सवाई रे, अचलगछमां नित्य नित्य थाइ रे, सान्निध्यकारी ले माहाकाली ॥ सू० ॥ जु० ॥ सू० ॥ ७ ॥ गुरु चारे चोमासां आया रे, लब्धियें गौतम ऋद्धि पाया रे, मुक्तिसागर सूरि सवाया ॥ सूरीश्वर विनति अवधारो रे ॥ जु० ॥ सू० ॥ ८ ॥ इति ॥ ११९ ॥

॥ गहूंली एकशो ने वीशमी ॥

॥ जंगमतीर्थ विचरंता, करता देश विहार ॥ ज जीव प्रतिबूऊवा, करता जग उपकार ॥ १ ॥

ते मुनिवर तारे तरे ॥ ए आंकणी ॥ समिति गुप्ति सूधी धरे, पाले प्रवचन माय ॥ अजयदान मुनिवर दिये, पाले जीव छकाय ॥ ते० ॥ २ ॥ पंच माहाव्रत धारता, पंचाश्रव पच्चक्काण ॥ अष्ट मदने मुनि गालता, पाले पंचाचार ॥ ते० ॥ ३ ॥ द्वादश पडिमाने शोधता, करता आतमशोध ॥ तप जप करे मुनि आकरां, काढे कर्मनुं सूड ॥ ते० ॥ ४ ॥ सम वाणी करे गोचरी, पाले दोष विशेष ॥ उंच नीचकुल जोवतां, नहिं लोजनो लेस ॥ ते० ॥ ५ ॥ केशी गणधर पधारिया, सावछिनयरी उद्यान ॥ राय परदेशी माहा पापीयो, धरे साधुनो द्वेष ॥ ते० ॥ ६ ॥ प्रश्न पूछे मुनिवर प्रत्यें, जीव अजीव विचार ॥ स्वर्ग नरक जाणुं नही, न गणुं पुण्य ने पाप ॥ ते० ॥ ७ ॥ नय उपनय प्रश्न पूरिया, प्रतिबूझ्यो जूपाल ॥ एक अवतारी ते थयो, पाम्यो मुक्ति माहाराज ॥ ते० ॥ ८ ॥ इति ॥ १२० ॥

॥ गहूंली एकशो ने एकवीशमी ॥

॥ आज सखि गुरु वंदन करीयें, वंदन करीयें तो जव जल तरियें हो साम, आज सखि गुरु वंदन करीयें ॥ ए आंकणी ॥ गछपति गणधरना गुण गाऊं, हरख[illegible]री मनमांहे हो साम ॥ आज० ॥ १ ॥ सूरि [illegible]

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

णि गुण रागी, कनक रमणीना त्यागी हो सा०॥ आ० ॥ पंच समिति त्रण गुप्ति बिराजे, प्रवचनमायने पाले हो सा० ॥ आ० ॥ २ ॥ चरण करण सित्तेरी संभारे, ज्ञान कल्लोल उगाले हो सा० ॥ आ० ॥ छत्रीश छत्रीशी गुण राजे, षट दर्शनमां गुरु गाजे हो सा० ॥ आ० ॥ ॥ ३ ॥ वरसे छन्नु गुणें गुणवंता, सोहम जंबु महंता हो सा० ॥ आ० ॥ देश काल महिलें विचरंता, सम कित बीजना दाता हो सा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ राजगृही नगरीयें पधास्या, श्रेणिक सामह्युं लाव्या हो सा० ॥ आ० ॥ मंत्री अभयकुमार प्रधान, यथोचित गुण ना जाण हो सा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ चेलणा प्रमुख सहु परिवार, गुरुने वांदे बहु मान हो सा० ॥ आ० ॥ आतम बाजोठ पीठ बनावी, गहूंली करे रढियाली हो सा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ कुंकुम घोली स्वस्तिक पूरे, श्रेणिकनी पटराणी हो सा० ॥ आ० ॥ ललि ललि गुरु मुख लूछणां करती, शिवनिश्रेणीयें चडती हो सा० ॥ आ० ॥ ७ ॥ गुरुमुख कमल नयणे रे जोती, वचन सुधारस पीती हो सा० ॥ आ० ॥ देशना सांभ ळी हरख भराणी, देव भणे मधुरी वाणी हो सा० ॥ आ० ॥ ८ ॥ इति ॥ १२१ ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ अथ श्री कोठारानी गहूंली एकशो ने बावीशमी ॥

॥ जीरे मारे प्रणमुं जिनवर पाय, मूकी मननो आं मलो ॥ जीरे जी ॥ जीरे मारे शोलमा श्रीजिनराय, शांतिनाथ जी करुणा करो ॥ जीरे जी ॥ १ ॥ जी० पामी तास पसाय, गछपति गुरु स्तवना करुं ॥ जी० ॥ जी० ॥ जंगम तीरथनाथ तीर्थ वंदावो कृपा करी ॥ जी० ॥ २ ॥ जी० ॥ वृरू उंसवंश उत्पन्न, गुरुकुल वासे दिनमणि ॥ जी० ॥ जी० ॥ रत्न त्रयना निधान, माता कुंता बाइयें जनमिया ॥ जी०॥३ ॥ जी० ॥ ग्रह गणमां ज्योतिचक्र, अविचल राज्यें ध्रुव रहे ॥जी० ॥ जी० ॥ मुनि परिवारमां तेम, गुण छत्रीशे शोभता ॥ जी० ॥ ४ ॥ जी० ॥ वारे परनो ठाठ, निज आतम गुण अनुसरे ॥ जी० ॥ जी० ॥ कोठारा नगर मझार, श्रावक लोक सुखिया वसे ॥ जी०॥५ ॥ जी० ॥ गुरुच रणे लयलीन, रागी सोभागी करे वीनती ॥जी०॥जी० नर नारीनां वृंद, बहु आरंबरें लावीया ॥ जी० ॥६॥ जी० ॥ नव शत सजी शणगार, श्राविका लावे गहूं अली ॥ जी० ॥ जी० ॥ आत्म बाजोठ पीठ, प द्मिनी पूरे साथियो ॥ जी० ॥ ७ ॥ जी० ॥ समकित श्रीफल हाथ, लली लली लीये लूछणां ॥ जी०

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

॥ जी० ॥ घूंघट खोल्या घाट, विच विच गुरु मुख जो वती ॥ जी० ॥ ८ ॥ जी० ॥ देशना अमृतधार, सां जली श्रोता रस लीये ॥ जी० ॥ जी० ॥ नय गम जं गनी जाल, स्यादवाद रचना करे ॥ जी० ॥९॥ जी० विधि पक्षगछ शिरताज, रत्नसागर सूरीश्वरु ॥जी०॥ जी० ॥ तस पाटें पूरींद, विवेक सागर तेजें तपे ॥ जी० ॥ १० ॥ इति ॥ १२२ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो ने त्रेवीशमी ॥

॥ नदी यमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥ ॥ चंपानयरी उद्यानमां, गणधर आवीया ॥ नामे सो हम स्वामी, जविकमन जाविया ॥ विषय प्रमाद कषा य, हास्यादिक तजी ॥ रमता आतमराम के, निजप रिणति जजी ॥ १ ॥ नीरागी जगवान्, करे गुणदेश ना ॥ उपकारी असमान के, तारे जविजना ॥ सुणवा जिनवर वाणि, तिहां आव्या सहु ॥ नर नारीना थो क के, हर्ष मने बहु ॥ २ ॥ वसन आजूषण व्रत, तणा अंगे धरे ॥ कोणिकजूपति नार, हवे गहूंली करे ॥ समिति गुप्ति सहियरने, साथे आवती ॥ आतम असं ख्य प्रदेश, रकेबी लावती ॥ ३ ॥ अरुा कुंकुम घोली, स्तिक करे जावथी ॥ आतम पीठने उपर, जिनगुण

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

गावती ॥ विनयवती बहु मानथी, एम गहूंली करे ॥ अनुजवनां करि लूठणां, आणा तिलक धरे ॥ ४ ॥ द्रव्यजावथी इणि परें, जे गहूंली करे ॥ समकितवंत ते श्राविका, जवसायर तरे ॥ मणि उद्योत गुरुराजना, गुणसखि मन धरो ॥ पामी मनुज अवतार के, शंका नवि करो ॥ ५ ॥ इति ॥ १२३ ॥

॥ अथ गहूंली एकशो चोवीशमी ॥

॥ चालो सखि जइयें जातरा रे लोल, जिहां छे मरुदेवीनो नंद, शुजजावथी रे ॥ चालो जइयें जिन वांदवा रे लोल ॥ १ ॥ चालतां चरण पावन थयां रे लोल, आत्म हर्ष जराय ॥ शुज० ॥ चा० ॥ वीरवशी मां पेसतां रे लोल, नयणां पावन थाय ॥ शु० ॥ चा० ॥ २ ॥ दशशत चैत्य सोहामणां रे लोल, वचें अष्टा पद उत्तंग ॥ शु० ॥ चा० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरां रे लोल, चोमुख प्रतिमा चार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ३ ॥ पूर्व द्वारे पेसतां रे लोल, निस्सही कही त्रण वार ॥ शु० ॥ चा० ॥ पांच अजिगमन साचवी रे लोल, प्रदक्षिणा त्रण वार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ४ ॥ मूलनाय क रुषजनाथजी रे लोल, अजितनाथ शिवसाथ ॥ शु० ॥ चा० ॥ चारे दुवारे बिंबथापना रे लोल,

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

ष्टादश दोय चार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ५ ॥ जिनप्रतिमा जिनसारखी रे लोल, रुषभजी पूर्व प्रसिद्ध ॥ शु० ॥ चा० ॥ अष्टापद गिरि सिद्ध थया रे लोल, नलिन पुरें कर्यो विकाम ॥ शु० ॥ चा० ॥६॥ शेठ नरसी सुत हीरजी रे लोल, कुंअर अंग सुजात ॥ शु० ॥ चा० ॥ तस भार्या शुक्लपक्षिणी रे लोल, उत्तम कूलें उत्पन्न॥ शु० ॥ चा० ॥ ७ ॥ दान शीयल तपस्या गुणें रे लोल, पूरबाई जग विख्यात ॥ शु० ॥ चा० ॥ सुगुरु संजोग उपदेशथी रे लोल, चैत्य कर्यां चोसार ॥ शु० ॥ चा० ॥ ८ ॥ समकितदृढ गुण आतमा रे लोल, ज्ञान भक्ति निमित्त ॥ शु० ॥ सफल भयो दिन आजनो रे लोल, देवयात्रा फल सिद्ध ॥ शु० ॥ चा० ॥ ए ॥ कल्पवृक्ष फल्यो पुण्य अंकूरथी रे लोल, मुक्ति वर्या सुख भरपूर ॥ शु० ॥ चा० ॥ १० ॥ इति ॥ १२४ ॥

इति श्रीगहूंली संग्रहास्य पुस्तकस्य
प्रथमभाग समाप्तः ॥

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org

Jain Educationa International For Personal and Private Use Only www.jainelibrary.org